





RARE BUDDHIST TEXT SERIES-10

MAHĀMĀYĀTANTRAM

WITH

GUNAVATĪ

BY

RATNĀKARAŚĀNTĪ



भोट विद्या संस्थानम्

Editors

PROF. SAMDHONG RINPOCHE
Project Director

PROF. VRAJAVALLABH DWIVEDI
Deputy Director

RARE BUDDHIST TEXT RESEARCH PROJECT
CENTRAL INSTITUTE OF HIGHER TIBETAN STUDIES
SARNATH, VARANASI

B.E. 2536

C.E. 1992

RARE BUDDHIST TEXT SERIES-10

Co-Editors

**Pt. Janardan Pandey
Dr Banarsi Lal
Dr Tashi Samphel**

**Dr Thakur Sain Negi
Tunlay Ram Shashni
Penpa Dorjee**

First Edition: 550 Copies, 1992

Price:

Hardback : Rs.70.00

Paperback : Rs.50.00

**© Central Institute of Higher Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi (U.P.) India, 1992.**

Published by

**Central Institute of Higher Tibetan Studies,
Sarnath, Varanasi-221007, (U.P.), India.**

Printed at

**Khandelwal Offset Printers,
B-38/3 Ka, Mahmoorganj,
Varanasi-221010**

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला-१०

महामायातन्त्रम्

रत्नाकरशान्तिविरचित-

गुणवतीटीकासयुतम्

དཔལ་གྱི་འཕྲུལ་ཆེན་པོའི་རྒྱུད་དང་དེའི་འབྲེལ་པ་

རྩོམ་ཆེན་འཕྲུང་མཁས་ཁྱིམ་པས་མཛད་པའི་

ཡོན་ཏན་ལྡན་པ་དང་བཅས་པ།



भोट विद्या संस्थानम्

सम्पादकौ

प्रो० सम्दोङ्ग रिनपोछे
योजनानिदेशकः

प्रो० ब्रजवल्लभ द्विवेदी
उपनिदेशकः

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थ शोध योजना
केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान
सारनाथ, वाराणसी

बुद्धाब्द २५३६

ख्रीस्ताब्द १९९२

सहायक मण्डल

पं० जनार्दन पाण्डेय
डॉ० बनारसी लाल
डॉ० टशी सम्फेल

डॉ० ठाकुरसेन नेगी
श्री ठिनलेराम शाशनी
श्री पेन्पा दोर्जे

प्रथम संस्करण : ५५० प्रतियाँ, १९९२

मूल्य :

सजिल्द : रु० ७०.००.

अजिल्द : रु० ५०.००

© केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान, सारनाथ, वाराणसी, १९९२

प्रकाशक :

केन्द्रीय उच्च तिब्बती शिक्षा संस्थान,
सारनाथ, वाराणसी-२२१००७

मुद्रक :

खण्डेलवाल ऑफसेट प्रिन्टर्स
बी-३८/३ क, महमूरगंज,
वाराणसी-२२१०१०

प्रस्तावना

दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थमाला के दशम पुष्प के रूप में गुणवती नाम की टीका के साथ महामाया तन्त्र को तन्त्रशास्त्र के अनुरागियों के सामने प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है । बहुत प्रयत्न करने पर भी मूल महामायातन्त्र हमें उपलब्ध न हो सका, अतः गुणवती टीका में उपलब्ध प्रतीक वचनों की तथा उसके भोट अनुवाद की सहायता से संस्कृत पाठ के उद्धार का एक लघु प्रयास किया गया है । तृतीय निर्देश के 15-16 श्लोकों के बीच (पृ० 45) भोट अनुवाद में कुछ अधिक श्लोक और उनकी व्याख्या भी मिलती है । यह अंश गुणवती टीका के दोनों हस्तलेखों में नहीं मिलता । संभव है मूल मातृका के एक दो पत्र त्रुटित हो गये हों । यहाँ हम संस्कृत प्रतीकों के अभाव में मूल संस्कृत श्लोकों का भी उद्धार नहीं कर सके हैं । मूल ग्रन्थ और गुणवती टीका का भोट अनुवाद भी साथ में दिया जा रहा है, अतः भोट भाषा के विद्वद्गण उनकी सहायता से इस त्रुटि का परिमार्जन कर सकते हैं ।

नित्याषोडशिकार्णव नामक शाक्त-तन्त्र के प्रारंभ (1.14-21) में 64 तन्त्रों का परिगणन किया गया है । महामाया का वहां सर्वप्रथम उल्लेख है- "महामायाशम्बरं च योगिनीजालशम्बरम् । तत्त्वशम्बरकं चैव" (1.14) । आचार्य शंकर की सौन्दर्यलहरी के "चतुःषष्ट्या तन्त्रैः" (1.31) श्लोक की अनेक व्याख्याओं में भी ये ही श्लोक उद्धृत हैं । कुछ टीकाकार यहां तीन तथा अन्य पांच तन्त्रों के नामों का उल्लेख मानते हैं । लक्ष्मीधर और गौरीकान्त के अनुसार महामायाशम्बर, योगिनीजालशम्बर और तत्त्वशम्बर नामक तीन तन्त्रों का यहां उल्लेख है । अन्य सभी टीकाकार महामाया,

शम्बर, योगिनी, जालशम्बर और तत्त्वशम्बर नामक पाँच तन्त्रों की यहां गणना करते हैं । बौद्ध तन्त्रों के भोट अनुवादों की सूची में महामाया, जालशम्बर, मायाजाल जैसे नाम उपलब्ध होते हैं । नागेन्द्रनाथ वसु ने अपने विश्वकोश (बंगला और हिन्दी) में शम्बर, डाकिनीजाल, योगिनी, योगिनीजाल, मायाजाल आदि बौद्ध तन्त्रों के नाम गिनाये हैं । म० म० हरप्रसाद शास्त्री की नेपाल की सूची में डाकिनीजालशम्बर और योगिनीजाल की मातृका का परिचय दिया गया है । यह सब तो एक विशेष अध्ययन का विषय है, किन्तु इतना स्पष्ट है कि यहां दिया गया पहला नाम प्रस्तुत महामायातन्त्र का ही है । इससे इस ग्रन्थ की महत्ता और प्राचीनता स्पष्ट हो जाती है । इसीलिये इस योजना के प्रथम निदेशक स्व० प्रो० जगन्नाथ उपाध्याय जी ने इस योजना से प्रकाशित होने वाले प्रथम दस ग्रन्थों में इसका समावेश किया था । मूल ग्रन्थ की उपलब्धि की आशा में इतना समय व्यतीत हो गया । अन्ततः इस ओर से निराश होकर हमने ऊपर बताई गई पद्धति से प्रस्तुत संस्करण को तैयार किया है ।

इसके लिये गुणवती टीका के दो हस्तलेखों और मूल एवं टीका के भोटानुवाद के देगे संस्करण से सहायता ली गयी है । उनका विवरण इस प्रकार है—

(क) राष्ट्रीय अभिलेखालय, काठमाण्डू, नेपाल ।

लगत सं० 5/107

पत्र सं० 15

(ख) इंस्टीच्यूट आफ एडवांस स्टडीज आफ वर्ल्ड रिलीजन्स, न्यूयार्क । माईक्रोफिश नं० एम०बी०बी० II-143

पत्र सं० 10, ताइपत्र

(भो०) महामायातन्त्रम्, भोटानुवाद तो०सं० 425,

कन्युर देगे संस्करण ।

गुणवतीटीका, तो०सं० 1623 तन्युर देगे संस्करण

महामायातन्त्र और गुणवती टीका का भोटानुवाद देगे संस्करण के अतिरिक्त अन्य संस्करणों में भी मिलता है । इन दोनों ग्रन्थों का भोट संस्करण तैयार करते समय इन सब से भी पाठ संकलन कर उनका यथास्थान समावेश कर लिया गया है । नेपाल हस्तलेख के आधार पर प्रो० जगन्नाथ उपाध्याय जी ने गुणवती टीका की एक प्रति तैयार कर ली थी । स्थान-स्थान पर उन्होंने अपने सुझाव भी अंकित किये थे । इस संस्करण को प्रस्तुत करने में उससे भी यथेष्ट सहायता ली गई है ।

ऊपर दिये गये हस्तलेखों को सुलभ कराने में जिन व्यक्तियों और संस्थाओं ने सहायता की है, जिनका नामनिर्देश ऊपर किया जा चुका है, उनका हम आभार स्वीकार करते हैं । इन ग्रन्थों के संस्कृत और तिब्बती पाठों को परिष्कृत करने वाले और मूल पाठ का उद्धार करने वाले दुर्लभ ग्रन्थ शोध योजना में कार्यरत विद्वानों की नामावली का उल्लेख भी यथास्थान कर दिया गया है । इन सबको भी हम धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने बड़ी तत्परता से पाठसंकलन और सम्पादन कर तथा यथोचित परिशिष्टों को संयोजित कर इस ग्रन्थ को अधिक से अधिक उपयोगी बनाने का प्रयत्न किया है ।

PREFACE

It is with much pleasure that we bring forth the *Mahāmāyā Tantra* and its *Guṇavatī tīkā* by Ratnākaraśānti, as no.10 in the Rare Buddhist Text Series. We could not trace the *ms* of *Mahāmāyā Tantra* even after much effort. With the help of *Guṇavatī* and Tibetan translation we have restored the text in its original. In the Tibetan translation of *Guṇavatī* we have an excess of one folio which is missing in the two manuscripts. In the absence of original Sanskrit text, we did not take any risk to restore the missing portion. *Mahāmāyā* with Tibetan translation of *Guṇavatī* is presented here and we crave indulgence of Tibetan scholars to overlook the authenticity of the excess portion.

In the beginning of the *Nityāśoḍaśikārṇava* of *Sākta Tantra* (1/14-21) sixty four Tantras were counted in which *Mahāmāyā* is the first in number. "*Mahāmāyāsaṁvaram ca yoginījālasaṁvaram, Tattvasaṁvarakam caiva*" (1/14). Ācārya Śāṅkara has quoted this verse in explanation of *Catuḥṣaṣṭyā Tantraiḥ* of *Saundarya Laharī*. A few commentators are of the view that there are three Tantras; others accept five. According to Lakṣmīdhara and Gaurikānta *Mahāmāyāsaṁvara*, *Yoginī Jālasaṁvara*, and *Tattvasaṁvara* are the three Tantras. But other commentators think that *Mahāmāyā*, *Samvara*, *Yoginī*, *Jālasaṁvara* and *Tattvasaṁvara* are the five Tantras. In the Tibetan translation of the Buddhist Tantras, names like *Mahāmāyā*, *Jālasaṁvara* and *Māyājāla* are listed. Nagendra Nath Vasu in his *Viśvakoṣa* (Bangla-Hindi) has mentioned the name of Buddhist Tantras like *Ḍākinījāla*, *Yoginī*, *Yoginījāla* and *Māyājāla*. Haraprasad Shastri has given the introduction of the *ms*s of *Ḍākinījālasaṁvara* and *Yoginījāla* in the list of Nepali manuscripts. These are matters of special consideration and study. But it is clear that the first name in the list is the very text of *Mahāmāyātāntra* which is presented here. It enhances the significance and originality of the text. As such Prof. Jagannath Upadhyaya included this text in the list of first ten texts to be published under the RBTR Project.

The text is edited with the materials as follows :

Ka- National Archives Kathmandu, Nepal
Catalogue No. 5/107, Folios-15

Kha- Institute of Advanced Studies of World Religions,
New York, Microfische. No-MBB-II-143
Folios- 10, Palm Leaf.

Bhoṣa- Mahāmāyātantra Tibetan translation bKaḥ ḥGyur, Derge
Edition, Toh. No.425 and commentary bsTan ḥGyur Toh.
No. 1623.

The Tibetan translation of *Maḥāmāyātantra* and *Guṇavatī* are available in other editions also. We have collated these to prepare the present text. Prof. Jagannath Upadhyaya had prepared an edition of the *Guṇavatī* based on Nepali *ms* with numerous suggestions. We have also taken help from Upadhyaya's edition in presenting this text.

We gratefully acknowledge the help received from institutions and scholars toward procurement of the above *mss* englobing the source material. We express our thanks to all those who have very competently helped us in editing this work and restorations of the root text.

Sarnath

S. Rinpoche
Director

ཕྱི་ལོ་ལྔ་པ་།

[illegible]

རུས་མ་པའི་རྒྱུད་གཞུང་པུ་རྒྱལ་ལང་ཚོ་དལ་མཚོ་མ་ (འི་རྒྱུད་པའི་རྒྱུ་རྒྱུ་མ་)
 ཞེས་པའི་འགོར་ (༡ / ༡༤ - ༡༥) རྒྱུད་ཅེ་ཡོངས་སུ་བསྐྱེད་སྤྱོད་པ་
 དེར། རྒྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་སྒྲུ་མ་པ་དང་། རྒྱལ་འབྱོར་མ་ཡི་དུ་བ་སྒྲུ་མ། འདི་
 འོན་ཏེ་སྒྲུ་མ་པ་ཉིད་ (༡ / ༡༤) འཛིན་སྒྲུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོའི་མཆོད་ཐོག་

མར་གསལ་འདུག སློབ་དཔོན་བདེ་བྱེད་ (ཨུ་ཅུ་ཤུག་) གྱི་གསུང་མཛེས་
 རྒྱལ་མའི་ (སྤྲུལ་ལྟའི་) རྒྱུད་རྣམས་དུག་ཅུ་ཅ་བཞི་ལས་ (ཅུ་ལྟ་
 ལྟ་བུ་) ॥ ཞེས་པའི་ཆོགས་བཅད་གྱི་རྣམ་བཤད་དུ་འང་ཆོགས་བཅད་དེ་དག་
 རང་བཞོན་འདུག འབྲེལ་བྱེད་མཁན་པོ་འགའ་ཞིག་གིས་འདིར་རྒྱུད་གསུམ་དང་
 འགའ་ཞིག་གིས་རྒྱུད་ལྟའི་མཚན་བསྐྱངས་འདུག རྣམ་འཛིན་ལེགས་ལྷན་ ()
 དང་གོ་རྟོག་རྣམ་གཉིས་ལྟར་ན། རྒྱུ་འཕུལ་ཆེན་མོའི་ཚྭ་པ་དང་། རྣལ་
 འབྱོར་མ་དུ་བའི་ཚྭ་པ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ཚྭ་པ་ (ཏུ་ཤུག་) བཅས་རྒྱུད་
 གསུམ་གྱི་མཚན་བསྐྱངས་འདུག འབྲེལ་བྱེད་གཞན་ཐམས་ཅད་གྱིས་འདིར་རྒྱུ་
 འཕུལ་ཆེན་མོ། ཚྭ་པ། རྣལ་འབྱོར་མ། དུ་བ་ཚྭ་པ་དང་། དེ་ཁོ་
 ན་ཉིད་ཚྭ་པ་ཅེས་རྒྱུད་ལྟའི་མཚན་བསྐྱངས་བར་མཛད་འདུག རང་པའི་རྒྱུད་
 གཞུང་བོད་འབྱུར་རྣམས་གྱི་དཀར་ཆག་དུ་རྒྱུ་འཕུལ་ཆེན་མོ་དང་། དུ་བ་ཚྭ་པ།
 རྒྱུ་འཕུལ་དུ་བ་ལྟ་བུའི་མཚན་རྟེན་གྱི་འདུག རྒྱུད་བར་མཐོན་པོ་དབྱིག་ (ལྷག་
 ལྷག་) གིས་ཉིད་གྱི་རྒྱ་ཆོགས་མཛད་ (བློ་ཤོག་) དུ་(བརྒྱལ་དང་ཉི་མེད་) ཚྭ་
 པ། མཁའ་འབྲེལ་མའི་དུ་བ། རྣལ་འབྱོར་མ། རྣལ་འབྱོར་མའི་དུ་བ་དང་།
 རྒྱུ་འཕུལ་དུ་བ་ལོགས་ནང་པའི་རྒྱུད་གཞུང་རྣམས་གྱི་མཚན་བསྐྱངས་འདུག
 མཁའ་དབང་ཏེ་ཤུ་
 ཚྭ་པ་དང་རྣལ་འབྱོར་མ་དུ་བའི་མ་ཕྱི་འོ་སྤྲོད་མཛད་འདུག་པ་འདི་དག་རྣམས་
 ཉི་དམིགས་གསལ་གྱི་ཞིབ་འཇུག་ཏུ་གཞི་ཞིག་ཡིན་མོད་འོན་ཀྱང་འདིར་ཐོག་མར་
 གསལ་པའི་མཚན་དེ་ནི་རྒྱུ་འཕུལ་ཆེན་མོའི་རྒྱུད་འདི་རང་གི་ཡིན་པར་ངེས་ཐུབ་པ་
 འདི་ཡིས་གཞུང་འདི་ཉིད་གལ་ཆེ་དང་རྟེན་པ་ཡིན་པར་རྟོགས་ཀྱིས། རྒྱུ་མཚན་
 དེའི་ཕྱིར་ན་འཆར་གཞི་འདིའི་ངེས་ལྟན་པ་དང་པོ་རྒྱུ་གཤེགས་སློབ་དཔོན་འཛིན་རྟེན་
 མཐོན་པོ་ (སྤྲོ་བློ་ལྟ་བུ་ལྟ་བུ་) མཚོག་གིས་འཆར་གཞི་འདི་ནས་དཔར་

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 (श्रीकृष्णार्चनम्) (श्रीकृष्णार्चनम्) (श्रीकृष्णार्चनम्)
 श्रीकृष्ण (श्रीकृष्णार्चनम्) (श्रीकृष्णार्चनम्) (श्रीकृष्णार्चनम्)
 श्रीकृष्ण (श्रीकृष्णार्चनम्) (श्रीकृष्णार्चनम्) (श्रीकृष्णार्चनम्)

བོད་འབྲུག་

ཕྱི་ལོ་༡༩༥༩ ལོ་ཚུ་མཇུག་པའི་ལོ་ལྟར་

པོད། སྤྱི་ལོ།

ཐཱི་བཟུན་ཆོས་ཚན་ཅང་ ༡༦༣༣

ལྷ་འཕྲུལ་ཆེན་མོའི་རྒྱུད་དང་འབྲེལ་པ་ཡོན་ཏན་ལྷན་པའི་བོད་དཔེ་ལྷ་
 གྲིབས་སྐབས་བཀའ་བསྟན་འཕྱར་གཞན་ནམས་ནས་ཀྱང་སྤང་འོས་ཤོགས་བསྟུས་
 ཀྱིས་སྐབས་མཆམས་སོ་སོར་ཚུད་པར་བྱས་ཡོད། བལ་ཡུལ་གྱི་ལག་བྲིས་མར་
 གཞིར་བཅོལ་སྐྱབ་གཤམས་སློབ་དཔོན་འཇིག་རྟེན་མགོན་པོ་མཆོག་གིས་འབྲེལ་པ་ཡོན་
 ཏན་ལྷན་པའི་དཔེ་ཆར་གཅིག་སྒྲིགས་པར་མཇུག་ཡོད་པའི་སྐབས་སོ་སོར་ཁོང་གིས་
 ཉིད་ཀྱི་དགོངས་འཆར་རྩུར་མཆན་བཏབ་འདུག་པ་ནས་ཀྱང་པར་ཐངས་འདི་དཔར་
 རྒྱན་ལྷ་སྐབས་རོགས་པན་གང་འདོད་ལྟར་ལྷས་ཡོད།

གོང་གསལ་ལག་བྲིས་མ་དག་ཅིང་ཐབས་སུ་མཐུན་གྲོགས་གནང་མཁན་
 དང་གྲིབ་འཇུག་ཁག་གི་མཆན་གོང་དུ་ངས་བསྟན་ལྷས་ཡོད་པ་དག་གི་བཀའ་རྒྱན་སྤྱིང་
 བཅངས་ཐོག་གསུང་རབ་འདིའི་ལེགས་སྒྱར་དང་བོད་དཔེའི་ལྷས་དག་བྱེད་པོ་དང་
 གཞུང་ཆིག་སྒྱར་གསོ་བྱེད་པོ་ནང་པའི་ཆེས་དཀོན་པའི་གསུང་རབ་ཉམས་ཞིབ་
 འཆར་གཞིའི་མཁས་དབང་ལས་བྱེད་ནམས་ཀྱི་མཆན་ཐོ་སྐབས་མཆམས་སོ་སོར་
 གསལ་ཡོད་པ་ནམས་ལའང་ཐུགས་སྤང་ཆེན་པོས་ཤོགས་རྒྱུད་དང་དག་ལྷས།
 ཁ་སྤོང་ལྷན་ཐབས་ཇི་འོས་ཀྱིས་བཟུན་དེ་གསུང་རབ་འདི་ཕན་སྐབས་ཅི་ཆེར་ཡོང་
 ཐབས་ལ་ཙོལ་བ་བྱས་འདུག་པར་ཐུགས་ཇི་ཆེ་ལྷ་རྒྱ་བཅས། ལྷར་དབུས་བོད་ཀྱི་
 ཆེས་མཐོའི་གཙུག་ལག་སློབ་ཁང་གི་ངས་སྟོན་པ་ཟམ་གདོང་སྤུལ་སྐྱས་ཕྱི་ལོ་ ༡༩༩༣
 ལོ་ ༩ ཆེས་ལ་བྲིས།

विषय-सूची

प्रस्तावना

१-९

हिन्दी, अंग्रेजी एवं भोट

प्रथमो निर्देशः

१-२४

मङ्गलाचरणम्	१
किं नाम महामायातन्त्रम्	२
तन्त्राणां त्रिविधं विभाजनम्	२
तन्त्रनाम्नो निरुक्तिः	३
नामार्थनिर्देशः	४
महामायायाः स्वरूपं तन्त्रस्य गुह्यत्वं च	५
प्रकारान्तरेण स्वरूपनिर्देशः	६
कृत्यलाभः	६
वश्यसिद्धिः	७
स्वलक्षणस्वरूपधर्माणां प्रतिपादनम्	८
चित्तस्य प्रकृतिप्रभास्वरत्वं बोधेर्हेतुः	८
पञ्चज्ञानानि पञ्चकायाश्च	९
उपायस्य स्वरूपम्	१०
उपायस्य सर्वसिद्धिप्रदायकत्वम्	११
अक्षरस्वरूपम्	१२
अक्षरानुष्ठानविधिः	१३
अनुष्ठाने सौकर्यनिर्देशः	१३
वज्रसत्त्वस्वरूपस्य वीरस्य निर्देशः	१४
वीरस्वभावस्य वैशिष्ट्यम्	१५

वीरस्य स्वरूपनिरूपणम्	१६
वीरस्य स्थितिनिर्देशः	१७
वज्रधरस्य सूक्ष्मज्ञानमुद्राकारनिर्देशः	१८
चतुश्चक्रेषु ध्यानविधिः	१९
सर्वधर्माणां बुद्धमयत्वप्रतिपादनम्	१९
महासमयस्य कर्मप्रभेदत्वकथनम्	२०
भावनसाधारणैरनुशंसासहितो जापनिर्देशः	२१
ज्ञानदेवतयोः प्रभावस्वभावनिरूपणम्	२१
उपसंहारः	२४

द्वितीयो निर्देशः

२५-३५

योगसिद्धिफलप्रदस्य गुह्याक्षरस्य प्रकाशनम्	२५
गुह्याक्षरजापविधिनिर्देशः	२५
निःश्वासनिरूपणम्	२६
त्रिविधयोगनिर्देशः	२७
विद्याक्षराणि तत्प्रयोगाश्च	२८
वश्यप्रयोगः	२९
आकृष्टिप्रयोगः	२९
पिण्डाकृष्टिः	२९
विद्याक्षराणां स्वदेवतायोगेषु षडङ्गन्यासः	३१
योगान्तरनिर्देशः	३२
वीरे स्थिरीकृतचित्तस्यावभासनिर्देशः	३२
वीरस्य सर्वसत्त्वैर्दृश्यतादृश्यते	३२
संबुद्धानां परमार्थदर्शकत्वप्रतिपादनम्	३३
योगनिद्रार्थनिरुक्तिः	३३
योगानां निष्पत्तिकरणस्य समयस्य निरूपणम्	३४

तृतीयो निर्देशः

३६-४४

अपरद्रव्यगणनिरूपणम्	३६
कानि पुनस्तानि द्रव्याणि ?	३७
चित्तपद्मविभावनसाधनवर्णनम्	३८
बुद्धबिम्बस्वरूपनिरूपणम्	३८
मुखानां वर्णनिरूपणम्	३९
देवीनां चिह्नानि	३९
भगवतः स्थानचिह्नानि	४०
सिद्धार्थं समयाख्यानम्	४०
ज्वालनानुशंसा	४१
बोधिसत्त्वानामनुत्तरज्ञाननिर्देशः	४२
तन्त्रपरिग्रहेऽनुशंसा	४३

परिशिष्टानि

४५-७३

१. महामायासाधनम्	४७
२. महामायासाधनोपायिका कुक्कुरिपादानाम्	५४
३. गद्य-पद्यानुक्रमणी	५६
४. टीकाकारोद्धृतवचनानुक्रमणी	५९
५. टीकाधृतग्रन्थग्रन्थकार-मतमतान्तरसूची	६०
६. संकेतसूची	६१
७. विशिष्टशब्दानुक्रमणी	६२

भोटखण्ड

७३-१६८

महामायातन्त्रम्

गुणवतीटीकासहितम्

प्रथमो निर्देशः

॥ नमः श्रीवज्रडाकिनीभ्यः ॥

नमः श्रीवज्रडाकिन्यै डाकिनीचक्रवर्तिने ।
पञ्चज्ञानत्रिकायाय जगत्त्राणविधायिने ॥१॥

गुणवती

[नमः] श्रीभूतडामराय^१

कायाः कृता येन जगद्धितार्थ^२
कुलानि देव्यः कुलनायकाश्च ।
तन्मूर्त्तिमुद्रानुसृतैकतत्त्वः
स मृग्यतां वज्रधरः शिवाय ॥

अतिलघु महामायातन्त्रं गिरा गुरुणाऽर्थतो
जगति कतिचित्^३ तस्येदानीं निरन्तरवेदिनः ।
प्रतिपदमतस्तत्र ज्ञानं शुचि श्रुतशालिनां
निभृतसुलभं लोके कर्तुं ममैष परिश्रमः ॥

विविधः सुगतेन बोधिमार्गः
कथितो भिन्नरुचिं विलोक्य लोकम् ।
रुचितो बहवः स्वयं प्रवृत्ता
विवृतिर्मे गुणवत्यथोऽत्र कर्म ॥

१. नमो त्रिरत्नाय, नमो वज्रसत्त्वाय, नमो भगवते जगदीश्वराय-भो. ।

२. गुणार्थ-भो. । ३. चेत्-ख. ।

याश्चैता वज्रडाकिन्यः परिकल्पितबन्धनान् ।
विच्छिद्य लोककार्येषु प्रविष्टास्तद्धिते रताः ॥२॥

अथातो वज्रडाकिनीनां गुह्येश्वरीणां परमगुप्तं(गुह्यं)
नाम तन्त्रं प्रवक्ष्ये ॥३॥

अथेत्यादि । नैतत् तन्त्रं मुक्तकम्, किं तर्हि. तन्त्रान्तरैः
सम्प्रयुक्तम् । तस्मादयमथशब्दः पूर्वतन्त्रापेक्षयाऽऽनन्तर्यमस्य तन्त्रस्य
द्योतयति । अत एव नास्यादौ निदानवाक्यमेवं मयेत्यादिकं प्रयुक्तम्,
प्रागेव प्रयुक्तत्वात् । तद्यथा श्रीवज्रशेखरे^१ ।

अत इति । यस्मादतिसंक्षेपरुचीनामिदमेव बोधेराशु साधनम्,
अतः प्रवक्ष्ये इति सम्बन्धः । प्रविभज्य वक्ष्ये प्रवक्ष्ये ।
तन्त्रमिति प्रबन्धम् । त्रिविधं तन्त्रम्—हेतुतन्त्रम्, फलतन्त्रम्,
उपायतन्त्रं च । तत्र प्रकृतिप्रभास्वरमनादिनिधनं चित्तं बोधिचित्तम्,
^२सहेतुस्तद्बीजम् । कस्य बीजम् ? बोधेः । सम्यक्संबोधिः
फलम्, ^३निरुत्तरफलत्वात् । सा पुनस्तस्यैव प्रकृतिप्रभास्वरस्य
चित्तस्यागन्तुकसर्वावरणक्षय^४लक्षणा विशुद्धिः । सा बुद्धानां धर्मकायः,
संभोगनिर्माणकायसंगृहीतानामनन्तानां बुद्धधर्माणामाश्रय इत्यर्थः । सैव
बुद्धानां बोधिधर्मकायो महावज्रधरपदम् । तस्माद्धेतोस्तस्य फलस्य
परिनिष्पत्तये ^५साधनमुपायः । ^६स पुनर्बोधिसत्त्वानां त्रिकल्पासंख्येय-

१. अर्थः-भो. । २. यथा श्रीवज्रशेखरादितन्त्रेषु-भो., वज्रशिखरे-क. । ३. इति
शब्देन-भो. । ४. सतन्त्रं-भो. । ५. तत्त्वनिरुत्तरं-भो. । ६. यकूललक्ष-क. ।
७. 'साधनम्' नास्ति-भो. । ८. पारमितामहायाने त्रिकल्पा-भो. ।

भावितः सपरिकरो मार्गः । मन्त्रयानेऽत्र तस्यैवातिमहतो बोधिमार्गस्य संक्षेपरूपः, क्षिप्रतरं सुखतरं च बोधिसाधनो ^१मण्डलचक्राद्याकारः सपरिकरो मार्ग उपायः । एतान् हेतुफलोपायानधिकृत्य ये देशनाप्रबन्धास्ते यथाक्रमं हेतुतन्त्रं फलतन्त्रमुपायतन्त्रं वा । तदेतत्त्रिविधं तन्त्रं प्रवक्ष्ये ।

तत्तर्हि तन्त्रं किं नामेत्याह—परम^२गुप्तं(गुह्यं) नामेति । नामशब्दोऽव्ययः प्रसिद्धौ वर्तते । परमगुप्त(ह्य)मित्यनेन नाम्ना प्रसिद्धमित्यर्थः । केषां परमगुप्त(ह्य)मित्याह—वज्र^३डाकिनीनाम् । अतश्च साकल्येन वज्रडाकिनीपरमगुह्यं नामेदं तन्त्रम्, पूर्वपदलोपात्तु परमगुह्यं नाम, सत्यभामा भामेति ^४यथा । "डै वैहायसगमने" (९६८ भ्वा.), ऐकारस्यात्वम् । डानं डाः, आकाशगमनमित्यर्थः । डाशब्दात् तृतीया । "अक अग कुटिलायां गतौ" (७९२-७९३ भ्वा.) । अत्र सर्वतो गमनं कुटिला गतिः । डा अकितुं शीलमस्या इति डाकिनी, "स[१] ह्याकाशकोटीनियुतशतसहस्रैर्युगपत् सर्वतो गामिनीत्यर्थः । तथा चोक्तम्—

डै वैहायसगमने धातुरत्र विकल्पितः ।

सर्वाकाशचर(री) ^५सिद्धिडाकिनीति ^६प्रसिद्धयति ॥ इति ।

वज्रग्रहणं बाह्यडाकिनीव्यवच्छेदार्थम् । वज्रमशनिः, अप्रपञ्चज्ञान-मयत्वात्, डाकिन्यश्चेति वज्रडाकिन्यः । तासां कीदृशीना-मित्याह—गुह्येश्वरीणामिति । अत्र पञ्चकुलानि पञ्चगुह्यानि, तेषामीश्वर्यः सृष्टिसंहारकारिकाः । तत्र तथागतकुलस्येश्वरी

१. 'मण्डल-.....कारः' नास्ति-भो. । २. गुह्यम्-ग्रन्थसमाप्तिस्थः पाठः ।

३. डाकिनी-ख. । ४. नास्ति-भो. । ५. सव्याकाय-क. । ६. सिद्धे-ख. ।

७. मिलिच्छयेति-क. ।

यया व्याप्तमिदं सर्वं ब्रह्माण्डं सचराचरम् ।
उत्पत्तिः सर्वदेवानां ब्रह्मादीनां महर्द्धिका ॥४॥

बुद्धडाकिनी, वज्रकुलस्य वज्रडाकिनी, मणिकुलस्य रत्नडाकिनी, पद्मकुलस्य पद्मडाकिनी, कर्मकुलस्येश्वरी विश्वडाकिनी । तासामपीश्वरी महामाया । यस्मादसौ तासां गुह्यातिगुह्यानां गुह्यम्, तस्मात् परमगुह्यम् । तदभिधायकं तन्त्रमपि तथोच्यते । सीताहरणं काव्यमिति यथा ॥३॥

इममेव नामार्थं दर्शयितुमाह—ययेंत्यादि । “बृह बृहि वृद्धौ” (७३५-७३६ श्वा.), मनिन् । नैरुक्तो वर्णविकारः । एवं ब्रह्मेति भवति । इह तु सर्वलोकगुरुत्वात् सर्वतो वृद्धा इति ब्रह्माणस्तथागताः संभोगनिर्माणकायसंगृहीताः । तेषामण्डमुत्पत्तिस्थानम्, धर्मकाय इत्यर्थः । अथवा मोक्षातिशयत्वाद् ब्रह्म च तत् कायं द्वयोत्पत्तिस्थानत्वादण्डश्चेति ब्रह्माण्डं धर्मकाय इत्यर्थः^१ । परिशुद्धेषु बुद्धक्षेत्रेषु यः सत्त्वलोकः, सोऽत्र चरः, यस्तेषु भाजनलोकः, सोऽत्राचरः । सह ताभ्यां वर्तत इति सचराचरं ब्रह्माण्डम् । तद्यया व्याप्तमिति सम्बन्धः । सकलमिति सर्वम्, सर्वं ताथागतमित्यर्थः । तत्र कथं ब्रह्माण्डं तया व्याप्तम् ? यस्मात् तन्मयमेव सर्वबुद्धानां ब्रह्माण्डम्^२ । कस्माच्चराचरौ लोकौ तया व्याप्तौ ? तदुद्भवत्वात् तयोः । एतदेवाह—उत्पत्तिरित्यादिना । उत्पत्तिः कारणम् । सर्वदेवानामिति पञ्चानां कुलडाकिनीनाम्, ब्रह्मादीनामिति पञ्चानां तथागतानाम्, उत कुलानां च प्रत्येकमनन्तानाम् । महर्द्धिकेति महाप्रभावा ॥४॥

१ शब्दमपि-भो. । २. कायत्त्वो-भो. । ३. नास्ति-भो. ।

४. सत्त्वलोकहेतुः-भो. । ५. तथा-क. । ६. इतः परम्-‘तस्य स्वभावत्वात्’ इत्यधिकं-भो. । ७. उत्कलानां-क. ।

तासां परमियं गुह्यं महामाया महेश्वरी ।

महामाया महारौद्रा भूतसंहारकारिणी ॥५॥

काऽसावित्याह—महामायेति । महामायाशब्देन भगवतो वज्रधरस्य परमरहस्या मूर्तिर्भगवान् हेरुक उक्तः । महेश्वरीति । ब्रह्मादयो हि देवानां^१ सृष्टिः, अतस्ता ईश्वर्यः । ता अप्यस्याः सृष्टिः, अत इयं महेश्वरी । यत इयं महेश्वरी, अत एव तासां परमियं गुह्यम् । तासामिति वज्रडाकिनीनाम् । परमगुह्यमिति परमं गुह्यम् । इयमिति महामाया ।^२ तथाहि—सूक्ष्ममयमौदारिकाणां रूपाणां गुह्यमुच्यते । ततश्च पञ्चानां कुलानां कुलाधिपाः पञ्च गुह्यानि, तन्मयपञ्चकुलानां गुह्यानामपि गुह्यानि पञ्चडाकिन्यः । तथाहि—स्वकुलव्यापकप्रकाशलक्षणाः कुलेशाः । तेन ते औदारिकाः, भावांशप्रधानत्वात् । तस्यैव प्रकाशस्य^३ द्वयशून्यतालक्षणा डाकिन्यः । ततस्ताः सूक्ष्माः, अभावाङ्गप्रधानत्वात् । तासां गुह्यातिगुह्यानां गुह्यं महामाया । तथाहि—एकैककुलधर्मतालक्षणत्वादौदारिक्यस्ताः । इयं तु पञ्चकुलसाधारणी धर्मता पञ्चानामपि तासां समता, ततस्तासामपीयं गुह्यमिति परमगुह्यमेषा । तद्वाचकत्वात् तन्त्रमपीदं परमगुह्यमुच्यते ।

उच्यतां परमगुह्यम् । महामाया तु कथमुच्यत इत्याह—महामायेत्यादि । सा हि महारौद्रा, परमहिंस्रत्वात् । कुतः ? यस्माद् भूतसंहारकारिणी । अविद्यासंभूतत्वाद् भूतं बुद्धबोधः सर्वमावरणम्, तस्य संहारकारिणी प्रलयकर्त्री । स हि प्रलयः^४ परो मोक्षः । एवं मन्यते मीनातीति माया, "मीञ् हिंसायाम्" (१४७७ क्र्या.) । आत्वं णप्रत्यय इति ॥५॥

१. नास्ति-भो. । २. 'तथाहि.....पञ्चडाकिन्यः' नास्ति-क. । ३. त्वशू-भो. ।

४. परम-भो. ।

यया व्याप्तं च सकलं त्रैलोक्यं सचराचरम् ।
सैषा संहरते विश्वं सृजते सा पुनः पुनः ॥६॥

गुह्यकानामियं माता महामायेति विश्रुता ।
त्रैलोक्यसाधनी विद्या सर्वकामप्रदायिका ॥७॥

प्रकारान्तरमाह—ययेत्यादि । त्रैलोक्यमिति परिशुद्धं बुद्धक्षेत्रं सचराचरं पूर्ववत् (पृ. ४) व्याप्तम्, तदुद्धृतत्वात् । स हि धर्मकायः, तन्निष्पन्दं चैतत् सचराचरम् । एवं मन्यते निर्मिमीत इति माया । "माङ् माने" (१०८८ जु.) णप्रत्यय इति ।

प्रकारान्तरमप्याह—सा पुनरित्यादिना । पुनरिति पुनरपरम्, अपरः प्रकार इत्यर्थः । सैषेति हेरुकरूपा महामाया । संहरते त्रैलोक्यमिति, दृष्टिपातेन महेश्वरादीनां ^१दुष्टानां भस्मीकरणात् । पुनः पश्चात् सृजते, तदेव ^२निर्दोषीकृत्य महाध्वजघण्टाध्वनिभिः प्रत्युज्जीवनात् ॥६॥

ततः किमित्याह—गुह्यकानामित्यादि । बाह्यवज्रकुले देवा ईषद् गुह्यत्वाद् गुह्यकाः । तेषामियं माता, मात्रीत्यर्थः । अतश्चेयं महामायेति विश्रुता ख्याता । मीनो माङ्श्च णप्रत्ययं ^३कृत्वा पूर्ववदिति (पृ. ५-६) भावः । आस्तामियं स्वयमीदृशी, साधकानां तु किं करोतीत्यत आह—त्रैलोक्येत्यादि । निरुत्तरज्ञानस्वभावत्वाद् विद्या । इयं ^४महामायाख्या विद्या साधकानां त्रैलोक्यं साधयति । सर्वकामाः सर्वाभिप्राया विद्याधरत्वादयः, तांश्च प्रकर्षेण ददातीति ।

१. नास्ति-भो. । २. निर्दोषी-भो. । ३. नास्ति-भो. । ४. 'महा' नास्ति-भो. ।

यया विज्ञानमात्रेण साधकेश्वरीविद्यया ।
देवदानवगन्धर्वा यक्षासुरनराश्च ये ॥८॥

विद्याधरा गुह्यकाश्च किन्नराश्च महोदराः ।
राक्षसाश्च पिशाचाश्च सिद्ध्यन्ते साधकेषु वै ॥९॥

वश्यानि सर्वभूतानि जलजस्थलजानि च ।
प्रकृतिप्रभास्वरा धर्मा आदिशुद्धा ह्यनाविलाः ॥१०॥

इदं श्लोकार्धमुद्देशः । तस्यैव निर्देशो 'यया' (१.८) इत्यादिः, 'अनेन योगमायाविद्येन' (१.१६) इत्येतत्पर्यन्तः ॥७॥

यया^१ विद्यया साधकेश्वरीति साधकानामीश्वर्या,^२
^३विज्ञानमात्रेणेत्यनुष्ठितमात्रया, साधकेषु सिद्ध्यन्त इति सूम्बन्धः ।
के सिद्ध्यन्त इत्याह—देवेत्यादि । देवाः शक्रादयः, दानवाः
प्रेतमहर्द्धिकाः, गन्धर्वा धृतराष्ट्रप्रभृतयः । सह यक्षादिभिर्वर्तन्त^४ इति
तथोक्ताः । साधकेष्विति साधकानां सिद्ध्यन्त इति विधेया
भवन्ति ॥८-९॥

वश्यमिति विधेयत्वम् । भूतानीति सत्त्वाः । जलजानि
मकरादीनि । स्थलजानि व्याघ्रादीनि । एवं तावद्वाह्यस्य त्रैलोक्यस्य
साधनानीति निर्दिष्टम् । लोकोत्तरस्यापि त्रैलोक्यस्य साधनानीति
निर्दिष्टमाह—प्रकृतीत्यादि । अत्र श्लोकार्द्धेन संक्षेपतो हेतुतन्त्रमुक्तम्,
"स्वयम्भूपञ्चज्ञानिनाम्" (१.११) इत्यनेन श्लोकपादेन फलतन्त्रम्,
तृतीयपञ्चमषष्ठैः पादैरुपायतन्त्रम् । प्रकृतिर्निजः स्वभावः, तया
प्रभास्वराः प्रभासनशीलाः, प्रकर्षेण निर्मला इत्यर्थः । के पुनस्त

इत्याह—धर्मा इति । ^१स्वलक्षणधारणा धर्माः, सर्ववस्तूनीत्यर्थः^२ । तानि पुनः सर्ववस्तूनि चित्तमात्राणि, चित्तस्यैव तेन^३ तेनाकारेण प्रतिभासनात् । तद्यथा स्वप्ने भवनोद्यानवापीकरितुरगमनुष्यादिरूपेण ह्यनेकानामपि चित्तविशेषत्वात् । उक्तं च दशभूमिके—
"चित्तमात्रमिदं यदुत त्रैधातुकम्" (पृ० ३२) इति । आर्यलङ्का-
वतारेऽप्युक्तम्—

बाह्यो न विद्यते ह्यर्थो यथा बालैर्विकल्प्यते ।

वासनालुठितं चित्तमर्थाभासः प्रजायते ॥ इति ।

(१०.१५४-१५५)

वासनालुठितमिति वासनाभिरुपहतम्, विप्लुतमित्यर्थः^४ । भवन्तु चित्तमात्राः सर्वधर्माः, ते तु ^५कुतः प्रकृत्यैव भास्वराः प्रभास्वराश्चेत्यत आह—आदीत्यादि । आ आदेरादिः, ^६आदितः प्रभृतीत्यर्थः । सर्वा^७वरणमलाभावाच्छुद्धाः, मलवासनानामभावा-
दनाविलाः । हिशब्दो यस्मादर्थे । यस्मादादिशुद्धास्तस्मात् प्रकृति-
प्रभास्वरास्त्रिभिः कार्य(यै)स्तस्मात् प्रकृतिप्रभास्वराः ।

ननु विद्यमानेषु मलेषु तद्वासनासु च कथं शुद्धा अनाविलाश्च, अतः स्वभावानां मलानां तत्रागन्तुकत्वात्, आकाशे तमस्तुहिन-
धूमाभ्रजसामिव, तस्मात्^८ प्रकृतिप्रभास्वराः । यद्येवं न स्यात्तदा न कस्यचिद्बोधिः स्यात्, चित्तस्वभावानां मलानां सति चित्ते क्षय[ः]योगात् । तस्मात् प्रकृतिप्रभास्वरत्वं चित्तस्य बोधेर्हेतुः, बोधिः

१. स्वभावलक्षण-भो. । २. 'अर्थः' नास्ति-भो. । ३. तेन तेन वस्तूनि-भो. ।

४. 'अर्थः' नास्ति-भो. । ५. 'कुतः' नास्ति-भो. । ६. अनादितः-भो. ।

७. भरण-क. ख. । ८. तस्माद् धर्माः प्रकृति-भो. ।

तत्रोपायाः प्रगीयन्ते स्वयम्भूपञ्चज्ञानिनाम् ।
योगिनी योगमाता च त्रैधातुकमशेषतः ॥११॥

फलम् । स(सा) पुनर्बोधिः ^१सवासनसर्वावरणक्षयादात्यन्तिकी
चित्तसन्तानस्य विशुद्धिः, सैव धर्मकायः । संभोगनिर्माणकायसंगृहीतानां
धर्माणां कायो वास आश्रय इति कृत्वा ॥१०॥

तत्र बुद्धा भगवन्तो धर्मकायेन ^२स्वयंभुवः स्वयमेव भवन्ति,
सर्वावरणरूपतः कैवल्यात् स्वरूपेणैव प्रख्यान्तीति ^३कृत्वा
पञ्चज्ञानिनः । पञ्चज्ञानान्येषाम्— आदर्शज्ञानम्, समताज्ञानम्,
प्रत्यवेक्षणाज्ञानम्, कृत्यानुष्ठानज्ञानम्, सुविशुद्धधर्मधातुज्ञानं चेति ।
तत्रादर्शज्ञानमादर्शवन्निर्मलमनन्तं शाश्वतं च मध्यवर्तिनो
ज्ञानत्रयस्याश्रयः, सर्वेषां ज्ञानान्तराणां प्रतिबिम्बोदयस्थानम्, येन
प्रतिबिम्बोदयेन तथागताः सर्वाकारसर्वधर्मदर्शिना भवन्ति । समताज्ञानं
सर्वसत्त्वेष्वात्मनिर्विशेषताज्ञानं सदा महामैत्रीमहाकरुणासम्प्रयुक्तम् ।
प्रत्यवेक्षणाज्ञानं सर्वज्ञेयेष्वव्याहतं सर्वसमाधिधारणीनां निधानं
^४धर्ममण्डलेषु सर्वासां स्वविभूतीनां निदर्शकम्, महाधर्मदृष्टीनां
प्रवर्षकम् । येन ज्ञानेन तथागताः सर्वलोकधातुष्वनन्तैः
कायवाक्चित्तनिर्माणैः प्रतिक्षणमनन्तानां सत्त्वानामर्थं कुर्वन्ति, तदेषां
कृत्यानुष्ठानज्ञानम् । येन ज्ञानेन तथागताः सर्वधर्मतथतां सुविशुद्धां
पश्यन्ति, तन्मात्रदर्शनात्, सर्वनिमित्तमलानामत्यन्तमप्रख्यानात्, तदेषां
सुविशुद्धधर्मधातुज्ञानम् । आद्यानि त्रीणि ज्ञानानि संभोगकायः । ^५चतुर्थं
निर्माणकायः । ^६पञ्चमं धर्मकायैकदेशः । स्वयम्भुवश्च ते

१. सर्वासन-क. । २. नास्ति-भो. । ३. त्रिकायेन-भो. । ४. मर्म-क. ।

५. 'चतुर्थं निर्माणकायः' नास्ति-क. । ६. पञ्चमधर्म-क. ।

सिद्ध्यत्यशेषनिःशेषं सर्वं मायाविकुर्वितम् ।
हरते सर्वबुद्धानां भुङ्क्ते सुराग्रकन्यकाः ॥१२॥

पञ्चज्ञानिनश्चेति तथोक्ताः, तथागता इत्यर्थः । तेषां
फलभूतानामुपायाः प्रगीयन्ते प्राधान्येन देश्यन्ते ।

तत्रेति तस्मिन् हेतौ प्रकृतिप्रभास्वरत्वे सति । नह्येतत् फलं
सत्यपि हेतौ विनोपायैर्भवति, हेतो^१रनादित्वेन सर्वेषामादित एव बोधेः
प्रसङ्गात् । तस्मादुपायाः प्रगीयन्ते । के त इत्याह—योगिनीत्यादि ।
योगिनीति पञ्चडाकिन्यः । योगमातेति महामाया । त्रैधातुकम-
शेषत इति सर्वं त्रैधातुकम् । तान्यत्र च सम्भूताः कुलेशाः कुलानि
च । कथमेतानि त्रैधातुकम्, त्रिषु वज्रधातुषु तथागतगुह्येष्वन्तर्भावात् ।
कथमेते उपायाः ? हेतौ सम्पत्तौ बोधि^२भव्यतालक्षणायां सत्यामेषामेव
भावनया जायादि^३परिच्छदया बोधेराशु प्राप्तेः, प्राप्तायां च
तस्यामेधिरेव संभोगनिर्माणकायसंगृहीतैः परेषां ग्रथाभव्यं
बोधित्रयप्रापणात् ॥११॥

सिद्ध्यतीति मार्गरूपेण फलरूपेण च साधकानां निष्पद्यते
यया विज्ञातमात्रया । अशेषनिःशेषमिति । एतदेव योगिन्यादि-
राशित्रयम् एकस्यापि राशेरपरित्यागान्निःशेषम्, एकस्या [अ]पि
देवताया अपरित्यागादशेषम्, अशेषं च तन्निःशेषं च । कस्मात्
सिद्ध्यति ? यस्मात् सर्वं मायाविकुर्वितम् । सर्वमिदं महामायाधीनं
मार्गफलावस्थयो^४रित्यर्थः ।

१. रनादेव-क. । २. तव्यता-ख. । ३. परिवार-भो. । ४. योर्महामाया
प्रतिबद्धा इ-भो. ।

योगा योगेश्वरा विद्या इन्द्रजालं करोति च ।
मोहनं स्तम्भनं चैव मारणोच्चाटनादिकम् ॥१३॥

वश्याकर्षणकर्माणि आकाशगमनं तथा ।
परपुरादिकार्याणि अन्तर्धानादिकानि च ॥१४॥

त्रैलोक्यसाधनीति यत् पूर्वम् (१.७) उद्दिष्टं तन्निर्दिष्टम् ।
सर्वकामप्रदायिकेति यदुद्दिष्टं (१.७) तदपि निर्दिष्ट(र्दिष्टु)माह—
हरत इत्यादि । हरते आकर्षयति स्वार्थाय परार्थाय वा ।
बुद्धानामिति बुद्धान् । भुङ्क्त इति आकृष्योपभुङ्क्ते । सुराग्राः
सुरश्रेष्ठाः शक्रादयः ॥१२॥

योगाः समाधयः । तेष्वैश्वर्यं वशित्वं समापत्तये व्युत्थानाय
च । विद्या महामाया । इन्द्रजालं सैन्यादीनां निर्माणं(णम्)
दर्शनमन्तर्धानं च यथायोगं सदसताम् । मोहनं मूर्च्छा^१सञ्जननम् ।
स्तम्भनं निष्पन्दीकरणम् । मारणं रत्नत्रयादेरत्यन्तापकारिणाम् ।
उच्चाटनं स्थान^२त्याजनम् । आदिशब्दादङ्गभङ्गज्वरग्रहराक्षस-
ग्रहणादिकम् ॥१३॥

वशं गतो वश्यः । इह तु वश्यार्थं कर्म वश्यमुक्तम् ।
आकर्षणे द्वे—पादाकर्षणं पिण्डाकर्षणं च । प्रथमं भूम्या, द्वितीयं
आकाशेन । त्रीण्येतानि कर्माणि वश्याकर्षणकर्माणि । परपुरे
परशरीरे प्रवेशः परपुरशब्देनोक्तः । आदिशब्देन व्युत्क्रान्त्यादीनि
गृह्यन्ते । तान्येव कार्याणि परपुरादिकार्याणि । अन्तर्धानानीति ।
^४अदृश्यत्वानि ॥१४॥

१. निर्माणं सं-क. । २. मूर्च्छावस्थानम्-भो. । ३. त्यज-क. ।

४. नास्ति-क. ।

विद्वेषणं जम्भनं च पातालगमनं तथा ।
विद्याधरचक्रवर्तित्वमजरामरत्वं तथा ॥१५॥

निर्व्याधित्वं च भवति योगमायाविद्यः ।
अक्षरं मन्त्ररूपं च विकुर्वन्ति हि योगिनः ॥१६॥

अन्योन्यमनुरक्तयोरपि विद्वेषणं विद्वेषः । जम्भनं मूकी-
करणम् । पातालगमनं बिलप्रवेशः । विद्याधराणां चक्रवर्ती यः,
तेषां निग्रहानुग्रहक्षमो^१ महाविद्याधरः, तद्भावस्तत्त्वम् ।
अजरत्वममरत्वं निर्व्याधित्वमिति, त्रयमपि सुगमम् । चार्थो
गम्यते निर्व्याधित्वं चेति । एतन्मोहनादिकं सर्वमनेन योगमायाविद्येन,
क्रियत इति शेषः । मायेति महामाया, विद्यैव विद्यः,
सर्वबुद्धधर्माणामेकरसत्वं योगः, योगश्चासौ मायाविद्यश्च ।
^२विद्याधरेत्यादि श्लोकार्धं सप्तदशाक्षरम्, निर्व्याधीत्यादिकं
चतुर्दशाक्षरम् । एतेषु सर्वबुद्धधर्महरणादिकर्मसु प्रयोगाः केचिदत्रैव
तन्त्रे (२.३ नि.) वक्तव्याः । केचिदन्यतन्त्रानुसारेण द्रष्टव्याः ।
विज्ञानमात्रेणेत्युक्तम् (१.८), अनुष्ठितमात्रयेत्यर्थः । अतोऽनुष्ठानं
दर्शयितुमाह—अक्षरे(रमि)त्यादि । अक्षरं मन्त्राक्षरम्, मन्त्ररूपं
मन्त्रजा मूर्तिः । अक्षरं च मन्त्ररूपं च तेन तासामित्यर्थः ।
विकुर्वन्ति विक्रीडन्ति कर्मादिसिद्धिभिः । योगिनः
साधकाः ॥१५-१६॥

१. क्षमश्चक्रवर्ती-भो. । २. 'विद्याधरेत्यादि.....चतुर्दशाक्षरम्' नास्ति-भो. ।

पठन्ति [ते] चिन्तयन्ति भावयन्ति समाधिना ।
पठिता कुरुते विद्या विद्यासिद्धिं च कारयेत् ॥१७॥

न व्रतं न तपो दुःसहमुपवासं न संवरम् ।
सुखहर्षैश्च सिद्ध्यन्ति प्रज्ञोपायादिभिः सदा ॥१८॥

अक्षरं^१ कथमनुतिष्ठन्तीत्याह—पठन्ति चिन्तयन्तीति । अत्र पाठो वाचा जपः । चिन्ता^२ चित्तेन जपः । ^३मन्त्रमूर्तिं कथमनुतिष्ठन्तीत्याह—भावयन्तीत्यादि । भावयन्तीति प्राबन्धिकेन मनोविज्ञानेन पश्यन्ति, समाधिनेति तदालम्बनया चित्तस्थित्या । पठितेत्यादिना यथानुष्ठानफलमाह—पठितेति । जप्ता विद्या महामाया । कुरुत इति । आकर्षणादीनि सर्वकर्माणि करोति । द्वितीयेन विद्याशब्देन भावनामयी प्रज्ञोच्यते । सा पुनर्मूर्तिभावनापरिनिष्पत्तिरूपं स्वदेवताकारस्यात्मनः परिस्फुटं दर्शनम् । सिद्धिं कारयेत् साधकस्य महामुद्रासिद्धिम्, चकारात्^४ कर्माणि च साधयेत् । स्वदेवतारूपस्यैवात्मनो निष्पत्तिः स्वयं परैश्च महामुद्रासिद्धिः ॥१७॥

अनुष्ठाने सौकर्यमाह—नेत्यादि । अत्र न-शब्देषु कारयेदिति वर्तते, न कुर्यादित्यर्थः । त्रिस्नानत्रिचैलपरिवर्तीदिकं नियमः । शाकयावकाद्याहारत्वं तपः । ^५दुःसहत्वं कष्टम् । अयमुद्देशः । अस्यैव निर्देश उपवासः संवरश्च । तत्रोपवासोऽनशनम् । संवरस्तीव्ररागस्यापि गृहिणो ब्रह्मचर्यः(र्यम्) । ^६अनुग्राहिका वेदनाः पञ्चविज्ञानं^७ सहजाः सुखानि, मनोविज्ञानं सहजास्ता एव हर्षाः, तैः

१. मन्त्रणं-भो. । २. चित्तेन-क. । ३. अक्षरमू-भो. । ४. कर्माणि-क. ।

५. दुःसहं-ख. । ६. 'अनुग्राहिका वेदनाः' नास्ति-भो. । ७-८. सहजः-ख. ।

नाभिमध्ये स्थितो वीरः कर्णिकागूढगोचरः ।

चित्तमचित्तं चिद्रूपं ज्ञानज्ञेयस्वरूपकम् ॥१९॥

साधकाः सिद्धयन्ति । भावनामयी महाडाकिनी तद्रूपभाविता वा बाह्यस्त्री प्रज्ञा, तस्या उपाय उपशमः श्रीहेरुकरूपभावितेनात्मना परिभोगः । आदिशब्दात् पञ्चोपहाराः पञ्चकामगुणाश्च, तैः सदेति प्रतिसन्ध्यम् ॥१८॥

कथं तावत् प्रज्ञोपायेन सुखहर्षा इत्याह—नाभीत्यादि । नाभिपद्मं नाभिः, तन्मध्ये स्थितः । कोऽसावित्याह—वीर इति । ^१निरन्तरवीर्ययोगाद् वीरो वज्रसत्त्वः । तत्रासौ कस्मिन् भाजने स्थित इत्याह—कर्णिकेत्यादि । नाभिकमलस्य कर्णिकायां गूढगोचरः कर्णिकागूढगोचरः । गूहनं गूढं गुप्तिः, तदर्थो गोचरः पात्रं गूढगोचरः, रविशशिनोः संपुट इत्यर्थः । इयता तस्य स्थानं ^२भाजने उक्ते । स्वभावमाह—चित्तेत्यादिना । चित्तं विज्ञानम् । सन्त्येकपदान्यवधारणानि । तद्यथाऽम्मात्रभक्षोऽब्धभक्षः, वायुमात्रभक्षो वायुभक्ष इत्युच्यते; एवमिहापि विज्ञानव्यतिरिक्तस्यार्थस्य ग्राह्यस्याभावाच्चित्तमात्रं विश्वमिद्वि चित्तशब्दस्यार्थः । तदपि चित्तमचित्तम् । कस्माच्चित्तम्, ग्राह्याभावात् । कस्माच्चि(दचि)त्तम् ? ग्राह्याभावे ग्राहकस्याप्यभावात् । अथ ग्राहकं हि लोके विज्ञानं प्रसिद्धम् । विज्ञानमेव चेह चित्तम् । तस्माच्चित्तं च तदचित्तं चेति चित्ताचित्तम् । यदि ग्राहकत्वेन चित्तलक्षणेन वियोगात्तदचित्तम्, कतरेण चित्तलक्षणेन योगाच्चित्तं तदित्यत आह—चिद्रूपमिति । ^३चेतनं चित्, ^४ख्यातिः प्रकाशः, प्रतिभासनं स्फुटत्वम्, अपरोक्षतेति यावत् । सा रूपमस्येति चिद्रूपम् । चिद्रूपत्वेन चित्त्वलक्षणेन योगाच्चित्तं तदित्यर्थः ।

१. निरन्तर-भो. । २. ताजने-क., ज्ञाजने-ख. । ३. चेतने-क. ।

४. नास्ति-भो. ।

ननु सर्वमेव विज्ञानमीदृशम्, तत्र कोऽतिशयो
वीरस्वभावस्येत्यत आह—ज्ञानेत्यादि । स्वं निजं रूपं स्वरूपम् ।
ज्ञानं च ज्ञेयं चेति द्वन्द्वः । ज्ञानज्ञेयं स्वरूपमेव ज्ञानज्ञेयमस्येति
ज्ञानज्ञेयस्वरूपकम् । ज्ञायतेऽनेनेति ज्ञानम्, ज्ञायत इति ज्ञेयम् ।
तत्र पृथग्जनज्ञानानामस्वरूपमपि ज्ञेयं भवति, ग्राह्यग्राहकयो^१रसतोरपि
तैः कल्पनात्, अवस्तुनोरपि^२ ग्राह्यग्राहकाकारयोस्तेषु प्रतिभासात् ।
यच्च नास्ति, न वस्तु^३ वा, न तद्विज्ञानस्य निजं रूपम्, किं तर्हि
भ्रान्तिसमारोपितम् । अत एव भ्रान्तिनिमित्तं तदुच्यते,^४ भ्रान्तिचित्तत्वात् ।
येषामस्वरूपं ज्ञेयम्, तेषामस्वरूपमपि ज्ञानं^५ भवति, यदुत भ्रान्तिः ।
तथाहि—भ्रान्तिवशादसद् अवस्तु वा प्रख्याति । ततः^६ सापि ज्ञानम्,
प्रख्यातौ कारणत्वात् । सा तु भ्रान्ति[र]बुद्धेर्निजं रूपम्,
आगन्तुकत्वाद् मलानाम् । तस्मादस्वरूपमपि तेषां ज्ञानम् ।
पारमार्थिकं तु बोधिचित्तं निष्प्रपञ्चज्ञानात्मकम् । प्रपञ्चो भ्रान्तिः ।
ततः सर्वप्रपञ्चानां तत्राभावात्, स्वरूपमेव तस्य ज्ञानं न भ्रान्तिरपि,
सर्वप्रपञ्चनिमित्तानां तत्रास्तमयादप्रतिभासात् । स्वरूपमेव तस्य ज्ञेयम्,
नासदवस्तूनामपि । तदनेन श्लोकार्थेन पारमार्थिकबोधिचित्तलक्षणं^७
निष्प्रपञ्चज्ञानरूपत्वं वीरस्य स्वभावः साक्षादुक्तः । महासुखरूपत्वं
तु सामर्थ्यादुक्तम्, निष्प्रपञ्चज्ञानसहजत्वान्महासुखस्य । तथा
चोक्तमविकल्पप्रवेशायां धारण्याम्—

अविकल्पाशयो भूत्वा सद्धर्मोऽस्मिन् जिनात्मजः ।

विकल्पदुर्ग व्यतीत्य क्रमान्निष्कल्पमाप्नुते ॥

१. रनयो-क. । २. नोऽपि-क. । ३. 'वा' नास्ति-क. ।

४. निमित्तग्राह्यत्वात्-भो. । ५. न भवति-भो. । ६. सापि भ्रान्तिस्तेषामज्ञानं-भो. ।

७. 'लक्षण' नास्ति-भो. ।

तं वीरं कथयिष्यामि गम्भीरे बुद्धशासने ।
आलिकालीसमां कृत्वा तत्र रेखात्रिसम्पुटाम् ॥२०॥

प्रशान्तमचलं श्रेष्ठं वशवर्ति समासमम् ।
निर्विकल्पसुखं तस्माद् बोधिसत्त्वोऽधिगच्छति ॥ इति ।

[एतस्मिन् ^१गाथाद्वये ^२अविकल्पाशय इति स्थिराशयः ।
सद्धर्मोऽस्मिन्निति महायाने । जिनात्मज इति बोधिसत्त्वः । विकल्प
एव चतुर्विधो दुर्गः, तं क्रमाद् व्यतीत्य अतिक्रम्य । निष्कल्पमाप्नुत
इति निर्विकल्पं निष्प्रपञ्चज्ञानं प्राप्नोतीति । तस्मादेव ज्ञानान्निर्विकल्पं
सुखमाप्नोति । प्रशान्तम्, निष्कलेशत्वात् । अचलम्, अपरि-
हाणीयत्वात् । श्रेष्ठम्, सर्वलौकिकलोकोत्तरसुखोत्कृष्टत्वात् ।
वशवर्ति, यथेच्छं यावदिच्छं च संमुखीकरणात् । समं तुल्यं
तदन्यसुखैः सुखजात्या, असममेभिरेव चतुर्भिर्विशेषैः ॥१९॥

तमीदृशं वीरं कथयिष्यामि । कस्मिन् याने
प्रसिद्धमित्याह—बुद्धशासन इति । येन यानेन बुद्धो भवति
तद्बुद्धशासनम्, महायाने इत्यर्थः । ननु ^३पूर्वश्लोकेन कथित एवायम्,
किमुच्यते कथयिष्यामीति ? अत आह—गम्भीर इति ।
गम्भीरमहायाने, मन्त्रयान इत्यर्थः । पारमितानयविलक्षणो हि मन्त्रनये
बोधिचित्तस्य मुद्राकारः परिच्छेदश्च क्षिप्रतरं बोधिसाधनो भाव्यते ।
स चाद्यापि नोक्तः । तेनाह—कथयिष्यामीति । तमेवाह—
आलिकालीत्यादिना । तत्रेति रविचन्द्रसम्पुटे नियोजितेति नियमनाय
योजिता । केत्याह—रेखेति । तस्मादेव वीराच्चन्द्रमध्य-
सूक्ष्मरन्ध्रेणोत्थिता अभेद्या अच्छेद्या मृणालतन्तुसूक्ष्मा रश्मिरेखा । कथं
नियोजिता—आलिकालीसमां तामेव कृत्वा आलिः काली च समा

ज्वलितोर्ध्वमुखी रेखा तदाधः स्फुटिकारिणी ।
शुक्ररूपेण भ्रवति अमृतं बिन्दुरूपिणम् ॥२१॥

यस्यां सा तथोक्ता । १ताः कथं २तस्याम् ? तस्यामेव
मुक्तावलियोगेन ग्रथिता यतः । कथं समाः ? यस्मादर्धकाली ३द्वे
कालीशब्देनोक्ते, काल्येकदेशत्वात् । ते अपि षोडशाक्षरे,
ङजयोर्वर्जनात् । अतस्तासां साम्यम् । सा च रश्मिरेखा त्रिभिर्वेष्टैः
संपुटं वेष्टयति । तस्यामालित्रयं ४ चन्द्रस्योपरि ग्रथितं यथापाठम् ।
तत्र मध्ये स्वराली अनयोरर्धकाल्यौ । तथा च वक्ष्यति—
"दिव्यमक्षरपङ्क्तिभिः" (१.२६) इति । श्रीसंवरोत्तरे चोक्तम्—

ककारादि ५दकारान्तं ङजवर्जं निवेशयेत् ।

धकारादि क्षकारान्तम् आलिङ्ग्यं समालिखेत् ॥

मध्यस्था तु ६अकाराली न्यस्तव्या शशिमण्डले ॥ इति ॥२०॥

ज्वलितेत्यादि । अपरा रश्मिरेखा प्रज्ञारागानलेन ज्वलिता
यदा वीरादुदगच्छति, तदासौ अधः स्फुटिकारिणी भवति । अत्र
हि स्फुतेरर्थः भ्रवतिशब्देनोक्तः, ७स्फुतिरित्यर्थः । अथ तस्यां स्फुतौ कः
भ्रवतीत्याह—अमृतमिति । ८मुक्तत्वादविनाशित्वान्महासुखत्वाच्चा-
मृतम् । कीदृशमित्याह—बिन्दुरूपिणमिति । महासुखचित्तरूपः
सितबिन्दुः ९ वीर इत्यर्थः । कथं भ्रवतीत्याह—शुक्ररूपेणेति ।
विशुद्धज्ञानरसः सितमुखद्रवरूपत्वेन शुक्रसाधर्म्यात् शुक्रशब्देनोक्तः ।

१. आः-क. । २. 'तस्याम्' नास्ति-क. । ३. 'देकाली'-क. । ४. 'आलित्रय'
नास्ति-भो. । ५. 'हकारान्त'-भो. । ६. 'अकाली'-क. । ७. 'स्फुतिरित्यर्थः.... शुक्रशब्देनोक्तः'
नास्ति-क. । ८. 'नेक्त्वा'-ख. । ९. 'बन्धो वीरकल्पबन्ध'-ख. ।

तेन रूपेण स्रवति, ^१क्षरति, तत्क्षरतीति यावत् । तदत्रालिकालीत्यादिना वीरस्य सौस्थित्यमुक्तम् । ज्वलितेत्यादिना कर्म । ^२अमृतमित्यनेन स्वभावान्तरम् । बिन्दुरूपिणमित्यनेन तस्य मुद्राकारः कथितः । कथं पुनरियमस्य ^३मुद्रा भवति ? उच्यते—योऽसाविन्दुर्धवलः सूक्ष्मबिन्दुः, स चित्तम्, अन्तःप्रकाशमानत्वात् । या पुनस्तन्मात्रे चित्तस्यावस्थितिः, सा चित्तव्यतिरिक्तार्थानुपलम्भाच्चित्तमात्रता । या तस्य ग्राह्या-भावादग्राहकता, सा तस्याचित्तता । अत एवासौ शून्यरूपः । या पुनस्तस्य प्रकाशमानता सा चिद्रूपता । यः पुनस्तन्मात्रे स्थितचित्तस्य सर्वप्रपञ्चनिमित्तास्तमयः, सा तस्य ज्ञानज्ञेयरूपता । अयं चास्य ^४वज्रधरस्य सूक्ष्मज्ञानमुद्राकारः । श्रीसमाजेऽप्युक्तम्—

आकाशधातुमध्यस्थं भावयेच्चन्द्रमण्डलम् ।
 बुद्धबिम्बं विभावित्वा सूक्ष्मयोगं समारभेत् ॥
 नासाग्रे सर्षपं चिन्तेत् सर्षपे सचराचरम् ।
 भावयेज्ज्ञानपदं रम्यं रहस्यं ज्ञानकल्पितम् ॥ इति ।

(गु. स. ६.८-९)

श्रीवज्रामृतेऽप्ययमस्य सूक्ष्मयोगः साधारः सकर्मक उक्तः—

तिष्ठते निश्चलं विद्या अमृतं ध्यानमारभेत् ।
 ध्यायते परमं तत्त्वममृतं बिन्दुरूपिणम् ॥
 खमध्ये शशिसंकाशं शून्यतत्त्वमुदाहृतम् ।
 अक्षयमव्ययं सूक्ष्मं वज्रसत्त्वमनाहतम् ॥
 नाभिमध्ये स्थितो देवः कर्णिकागूढगोचरे ।
 स्रवते शुक्ररूपेण भगलिङ्गान्तरे स्थितः ॥ इति ।

तस्माद्यादृशः पठ्यते, तादृश एवायमत्र योगः कर्म च ।

१. नास्ति-ख. । २. शुक्रमि-भो. । ३. मुद्राकार-भो. ।

४. वज्रसत्त्वस्य-भो. ।

यद्यदिन्द्रियमार्गत्वं यायात् तत्तत्स्वभावतः ।
परमाहितयोगेन सर्वं बुद्धमयं यतः ॥२२॥

नन्विह तन्त्रे चतुर्षु स्थानेषु चत्वारि चक्राणि ध्येयानि, ^१न चण्डाली ? न तथा ज्वलन्त्या चक्रचतुष्टयं तापयित्वा निःसृत्य ^२स्फारित्वा सर्वबुद्धानां चतुश्चक्रं तापयित्वा तत आगत्य महासुखचक्रे प्रविश्य हंकारादमृतस्रावणम् । यत्पुनः सर्वमेतदन्यतो दृष्टं कैश्चिदानीयते, तदयुक्तम्, वाचकाभावात्, सर्वतन्त्राणां च नानाभिप्रायत्वात्, सुसंक्षिप्तातिसमयत्वाच्चास्य तन्त्रस्य ॥२१॥

यद्यदित्यादिना कर्मान्तरमाह । इन्द्रियाणि चक्षुरादीनि, तेषां मार्गत्वं विषयत्वं यायात् प्राप्नुयात् । यद्यद्वस्तु यत्किञ्च दृश्येत, श्रूयेत, घ्रायेत, आस्वाद्येत, स्पृश्येत, एतदेव ^३सर्वं बुद्धमयं प्रत्येकमशेषबुद्धस्वभावं निचि(श्चि)नुयात् । कथं सर्वबुद्धमयम् ? स्वभावतः स्वभावेन, प्रकृत्येति ^४यावत् । तथा ह्यनादिनिधनो ^५धर्मधातुः सर्वधर्माणां प्रकृतिः । स एव च धर्मधातुः सर्वबुद्धानां परमं रूपम् । तस्मात् तेन स्वभावेन ^६सर्वबुद्धमयं तत्तत्र केवलं स्वभावेन परमाहितयोगेन च । विनापि तेन चार्थगतेः ^७परममुच्यते । लोकोत्तरं ज्ञानं निष्प्रपञ्चं वीराख्यम्, तेनाहितसाधनं जनितत्वं परमाहितं वीरनिष्पन्दत्वमित्यर्थः । तस्मिन् योगोऽधिमोक्षः ^८, तेन दर्शनादौ प्रतिभासमानं दृश्यादिकं वीरस्यैव निष्पन्द इत्यनेन चाधिमोक्षेणे ^९त्यर्थः ॥२२॥

१. 'न' नास्ति-भो. । २. स्फुरिता-भो. । ३. इतः परं 'ते सर्वबुद्धस्वभावम्' इत्यधिकम्-भो. । ४. इतः परं 'अकृत्रिमम्' इत्यधिकम्-भो. । ५. अनन्तो-भो. । ६. जगत् सर्व-भो. । ७. परमुच्यते-क., परमाहितमु-भो. । ८. मुक्तः-भो. । ९. मुक्तेने-भो. ।

महासमयसिद्धिस्तु महागुलिकासाधनम् ।
महामायाप्रयोगैश्च योगसंवरं कारयेत् ॥२३॥

पञ्चपूजोपहारैश्च पञ्चकामगुणैस्तथा ।
सिद्धेन्द्रादिभिर्ज्ञातव्यं सिद्धिः शाश्वताऽव्यया ॥२४॥

महासमयेत्यादिना कर्मान्तरमाह । समयो देवता ।
समण्डलो मण्डलाधिपतिर्महासमयः । तस्य सिद्धिर्निष्पत्तिः १। तुशब्दः
पादपूरणार्थः । सा सिद्धिर्महागुलिकासाधनं ज्ञानबिन्दुगुलिका,
चतुर्बिन्दुः परिवारः, मध्यबिन्दुर्महागुलिका, तथा साधनं निष्पादनम्,
महासमयस्य सिद्धिः । सिद्धे मण्डले किं कुर्यादित्याह—
महामायेत्यादि । मण्डलाधिपतिः श्रीहेरुको महामाया, तद्विद्यापि
बुद्धडाकिनी महामाया, तयोरेकस्वभावत्वात् । तयोः प्रयोगैः
कर्माभिराश्लेषचुम्बनादिभिर्योगसंवरं कारयेत् । योगश्च संवरं च
योगसंवरम् । तत्र नाभिकमलकर्णिकारविसोमसम्पुटगत^२सितसूक्ष्म-
बिन्दुर्योगः । संवरं सुखवरं महासुखं प्रतिवेधविचारणानन्तरं कर्म,
ज्वलितेत्यादिना श्लोकेन यत्पूर्वमुक्तम् (१.२१) ॥२३॥

किं केवलमेव^३ ? नेत्याह—पञ्चेत्यादि । एभिर्दशभिः
सहितमित्यर्थः । तस्मादेव^४ ज्ञानरेतसो डाकिनीकमलोदरगतान्(नां),
प्रत्येकं गगनव्यापिनां पुष्पादिमेधानां दशानां क्रमेण स्फुरणात् ।
उपह्रियन्त इत्युपहाराः पुष्पधूपदीपगन्धनि(नै)वेद्यानि । अप्राप्ताः
काम्यन्तेऽभिलष्यन्त इति कामाः, प्राप्ता गुण्यन्ते पुनर्भुज्यन्त
इति गुणाः, कामाश्च ते^५ गुणाश्चेति कामगुणाः, प्रणीता

१. मण्डलदेवता-भो. । २. गते-ख. । ३. 'कार्यम्' इत्यधिकम्-भो. ।

४. ज्ञानबिन्दु-भो. । ५. नास्ति-ख. । ६. 'पञ्च' इत्यधिकम्-भो. ।

७. पञ्चगुणा-भो. ।

येन ज्ञानेन सिद्धेन त्रिदशालयमाश्वियात् ।
तदहं कथयिष्यामि देवति सत्यमहं शपे ॥२५॥

तदहं त्वां महामायां विद्यां त्रैलोक्यसाधनीम् ।
वीरं महायोगिनां हि दिव्यमक्षरपङ्क्तिभिः ॥२६॥

रूपशब्दगन्धरसस्पर्शाः । तत्र संवरं गुह्यपूजा रत्नपूजा
च । शेषा बाह्यपूजा । एतस्मिन् देवताराधने फलमाह—
ज्ञातव्यमित्यादिना । ज्ञातव्यं निश्चेतव्यम् । ^२अव्ययत्वादत्यन्ता,
अक्षयत्वाच्छाश्वती महामुद्रासिद्धिः । तां प्राप्स्यामीति शेषः ॥२४॥

एवं समासतः सानुशंसां भावनामुक्त्वा इदानीं भावना-
साधारणैरनुशंसैः सहितं जापमाह—येनेत्यादिना । ज्ञानेनेति विद्यया ।
सिद्धेनेत्यनुष्ठितेन । त्रिदशा देवाः, तेषामालयं भवनम् ।
देवतीति बुद्धडाकिन्याः सम्बोधनम् । किमिदं सत्यं न वेत्याह—
सत्यमित्यादि । अवधारणं गम्यते । सत्यमेवाहं वदामि न
कदाचिन्मृषेत्यर्थः ॥२५॥

तत्तर्हि ज्ञानं कतमा देवता किंप्रभावा किंस्वभावा चेत्यत
आह—तदहमित्यादि । त्वामित्यादौ द्वितीया, वक्ष्यामीत्यनेन
सम्बन्धात् । कतमा देवतेत्यत्रोत्तरम्—त्वां महामायां विद्यामिति^३ ।
किंप्रभावेत्यत्रोत्तरम्—त्रैलोक्यसाधनीमिति । किंस्वभावेत्यत्रोत्तरम्—
महायोगिनां दिव्यमिति । षष्ठीसमासोऽयम् । ^४दिव्यत्यस्मिन्निति
दिव्यं गुह्यम्, रविसोमसंपुट^५मित्यर्थः । ^६तद्धि तासां समता ।
ततस्तदेव योगिनां रतिस्थानम् । अक्षरपङ्क्तिभिरिति तिसृभिः
स्वरव्यञ्जनपङ्क्तिभिः, भूषितमिति शेषः । तन्मध्यवर्ती वीरः
श्रीहेरुकः । स तु संपुटो बुद्धडाकिनीत्यर्थः^७ ॥२६॥

१. तत्त्वपूजा-भो. । २. अव्ययत्वाच्छाश्वती-ख. । ३. मित्यर्थः-भो. ।
४. दिव्य इत्यस्मिन् रतिललितत्वेन दिव्य-भो. । ५. संपुटं भगमि-भो. । ६. तदपि
योगिना-भो. । ७. 'इत्यर्थः' नास्ति-भो. ।

येन चिन्तितमात्रेण सिद्ध्यते सचराचरम् ।
सर्वकामोपभोगैश्च सेव्यमानो यथेच्छया ॥२७॥

विक्रीडन् हि महायोगी सिद्ध्यते सर्वदा [शुभे] ।
विभिन्नाकाररूपेण योगात्म दर्शयन्ति च ॥२८॥

ददाति च महासिद्धिं कुरुते ताथागतीं श्रियम् ।
सत्त्वार्थं कुरुते सदा विभिन्नैस्तु रसायनैः ॥२९॥

शुक्रमाहृत्य मद्यं च महापिण्डं तथैव च ।
महामांसं योगिनीभिराहृत्य सह चर्यते ॥३०॥

येनेति वीराधिष्ठितेन रवीन्दुसंपुटेन स्वरव्यञ्जनालित्रय-
भूषितेन^१ । चिन्तितमात्रेणेति ^२जप्तमात्रेण । यथा तु जापः
कर्तव्यस्तद् द्वितीयनिर्देशे वक्ष्यति (२.१२) । सचराचरमिति बाह्यं
त्रैलोक्यम् । सिद्ध्यते विधेयीभवति । सेव्यमानो योगी । कैः
वज्रयोगिनीभिः, ^३यथेच्छयेति यादृशानिच्छन्ति, दर्शयन्तीति तस्मै
दर्शनं ददति । योगात्मेति मन्त्रदेवताः ॥२७-२८॥

ददातीति ददति । महासिद्धिमित्यष्टविधां खङ्गाञ्जना-
दिकाम् । ताथागतीमिति, तथताधिगमात् तथागता बुद्धबोधिसत्त्वाः,
तेषामियं ^४ताथागती । श्रीः सम्पत् । ^५कुरुत इति स एव
योगी ॥२९॥

मद्यमिति मद्याकर्षणम् । आहृत्येति आकृष्य । आयुर्जीवितम् ।
वीर्यमुत्साहः । तेजः प्रभावः । दिव्यं चक्षुश्च ^६चक्षुर्विज्ञानम्,

१. 'स्थितम्' इत्यधिकम्-भो. । २. नास्ति-क. । ३. 'यथेच्छयेति
यादृशानिच्छन्ति' इत्यस्य स्थाने 'विधेयीभवति' इति पाठान्तरं वर्तते-भो. ।

४. नास्ति-भो. । ५. सत्त्वार्थं कुरु-भो. । ६. ऋद्धि चेति दिव्यचक्षुरभिज्ञाम्-क.,
ख., गृहीतपाठस्तु-भो. ।

महायुश्च महावीर्यं महातेजो बलं तथा ।
दिव्यं चक्षुश्च ऋद्धिं च सोमपानं दिने दिने ॥३१॥

स गच्छेद् विपुलमायुर्महाकल्पावसानकम् ।
प्रातिहार्यं दर्शयति असेचनकविग्रहम् ॥३२॥

मनोजल्पनमात्रेण स्वरूपपरिवर्तनम् ।
विद्येश्वरी महद्भिदा पठितसिद्धाऽमोघिनी ॥३३॥

ऋद्धिं चेति ऋद्धयभिज्ञां च । सोमपानममृतपानम् । दिने दिने
प्रतिदिनम् । ^१प्राप्नो(ती)ति श्लोकशेषः ॥३०-३१॥

महायुरित्युक्तम् (१.३१) । ^२तस्यैव निर्देशः— स इत्यादि ।
स योगी विपुलं विस्तीर्णमायुर्गच्छेत् प्राप्नुयात् । महाकल्पोऽवसानं
पर्यन्तोऽस्येति यथोक्तम् । ^३दर्शयतीति योगी । प्रति प्रति हियन्ते
आवर्ज्यन्तेऽनेन सत्त्वा इति प्रतिहार्यम्, ^४स्वार्थेऽण् प्रातिहार्यम् ।
तच्च त्रिविधम्—ऋद्धिप्रातिहार्यम्, आदेशनाप्रातिहार्यम्, अनुशासनी-
प्रातिहार्यं च । यथाक्रमं तिस्रोऽभिज्ञाः— ऋद्धिः, परचित्तज्ञानम्,
आश्र(स्र)वक्ष्यज्ञानं च । असेचनकविग्रहं दर्शनैरतृप्तिकरं शरीरं
दर्शयतीति पूर्वेण सम्बन्धः ॥३२॥

स्वरूपमात्मस्वरूपं तस्य परिवर्तनं पररूपपरिग्रहः । मनसा
चिन्तितं मनोजल्पमात्रम्, एवरूपोऽहं स्यामिति । ^५स्तुतिमुखेनोप-

१. पानं प्रा-भो. । २. 'तस्यैव.....इत्यादि' नास्ति-ख. । ३. 'दर्श....योगी'
नास्ति-भो. । ४. 'स्वार्थेऽण्....हार्यम्' नास्ति-भो. । ५. अनुशांसाय-भो. ।

विद्ये ते सदृशी नास्ति त्रिषु लोकेषु काचन ।
तन्त्राणामागमः सोऽयं कथितस्तव शोभने ॥३४॥

॥ इति योगेश्वरीमहाविद्यासिद्धिनिमित्तनिर्देशः ॥१॥

संहरन्नाह—विद्येश्वरीत्यादि । पठितसिद्धेति वर्तमाने क्तः ।
जापमात्रेण सिद्ध्यतीत्यर्थः । अमोघप्रभावयोगादमोघिनी, सिद्धायां
सत्यामवश्यं यथोक्तफलदानात् ॥३३॥

विद्ये त इति । हे^१ विद्ये । ते सदृशी त्वया तुल्या नास्ति
मेऽन्या विद्या । त्रिषु लोकेष्विति । त्रिषु तथागतवज्रपद्मकुलेषु ।
आगमः साधनम् । शोभने इति सम्बोधनम् ॥३४॥

उपायाङ्गेन योगेश्वरी, प्रज्ञाङ्गेन महाविद्या । का चासौ ?
महामाया । तस्याः सिद्धिरनुष्ठानम्, तस्या निमित्तं चिह्नम्, विविधः^२
प्रभावः, तस्य निर्देशः कथनम् ॥

॥ गुणवत्यां श्रीमहामायातन्त्रटीकायां प्रथमो निर्देशः ॥

द्वितीयो निर्देशः

अथातो महायोगेश्वरीणां दिव्यं योगसिद्धिफलप्रदं
गुह्याक्षरं वक्ष्यामि ॥१॥

येन चिन्तितमात्रेण प्रार्थितं ददते वरम् ।
आदिमाक्षरयोगेन उच्छ्वासं कुरुते सदा ॥२॥

अथात इत्यादि । इयमेकपदी गाथा द्वादशाक्षरा ।
अथशब्दः समग्र^१जपप्रस्तावनार्थः । अत इति देवतामूर्तिभावना-
दूर्ध्वम् । महायोगेश्वरीणां दिव्यमिति^२ । सवीरं वीरभाजनम्,
नाभिकमलकर्णिकायां चिन्तयेदिति शेषः । तस्मिन् किं जप्यमित्याह—
गुह्येत्यादि । गुह्यमप्रकाश्यत्वात् । गुह्यतेऽनेन देवतातत्त्वमिति वा^३
गुह्यम् । गुह्यं च तदक्षरं च । योगो देवतासमाधिः, तस्य
सिद्धिर्निष्पत्तिः, फलं तस्या एव निष्पत्तेर्महामुद्रासिद्धिः । ते द्वे
प्रकर्षेण ददातीति योगसिद्धिफलप्रदम् ॥१॥

चिन्तितमात्रेणेति विनापि योगसिद्धिं जपमात्रेण प्रार्थितं
विद्याधरत्वादिकं वरम् । संपुटगते गुह्याक्षरं दृष्ट्वा तच्छीर्षे
वीरमुत्थाप्य जपेदिति भावः । कथं जपेदित्याह—आदिमेत्यादि ।
^४अत्रादिममक्षरं प्रणवः, प्रायेण मन्त्राणामादौ तस्य दृष्टत्वात् । तस्य
योगेन शनैरुच्चारणेन । कुरुते, योगीति सम्बन्धः । किं कुरुते ?
उच्छ्वासम्, प्राणवायोरूर्ध्वगमनम् ॥२॥

अष्टान्तेन च संयुक्तमूकारतिलकेन हि ।
निःश्वासं कुरुते योगी भावाभावविवर्जितम् ॥३॥

अष्टान्तेनेति ^१अष्टमवर्गान्तेन, हकारेणेत्यर्थः । ^२निःश्वासं कुरुत इति सम्बन्धः । कथं कुरुते ? ऊकारेण हकारस्याधस्तात् समायुक्तं यथा भवति, हकारं शीर्षे च सविन्दुकं यथा भवति । हूकारेणेति समुदायार्थः । कीदृशमुच्छ्वासनिःश्वासं कुरुत इत्याह—भावाभावविवर्जितमिति । यथाक्रममिति शेषः । ज्ञानमात्रता हि प्रणवार्थः, "ॐकारं ज्ञानहृदयम्" (११.२) इति श्रीगुह्यसमाजवचनात् । निराभासत्वेन कायवाक्चित्तसमता हूकारार्थः, "हूकारं कायवाक्चित्तं त्रिवज्राभेद्यसमावहम्" (११.३) इति तत्रैव वचनात् । अतः ॐकारसूचिताया विश्वस्य चित्तमात्रताया दर्शनाद् भाववर्जितम् । तदेव चित्तमात्रं विश्वमभावः, चित्तव्यतिरिक्तानां भावानामसत्ता, तस्यापि चित्तमात्रस्य विश्वस्य या समतापत्तिर्निराभासीभावो हूकारः सूचितः । तद्वर्शनादभाववर्जितम् । ^३एवं भावाभावविवर्जितम् । तत्तर्हि चित्तमात्रतायाः समतापत्तेश्च दर्शनं कीदृशम् ? अत्रोपदेशः— प्रणवमुच्चारयन्नेव वीरादुच्छ्वासेन सह ज्ञानरश्मिरेखामुद्गच्छन्तीं ^४पश्येत् । तया स्फुरित्वा विश्वस्य बुद्धमयीकरणं बीजाक्षरमुच्चारयन् स्वदेवताकारेण तस्य विश्वस्य विभावनं चित्तमात्रतादर्शनम् । ततो हूकारनिःश्वासेन विश्वस्य वीरे संहारः समतापत्तिदर्शनम् । एतदुभयं शनैः [शनैः] पुनः पुनस्तावत् कुर्याद्वावत् खेदो न भवतीत्ययमत्र तन्त्रे जापः ॥३॥

१. 'अष्टमवर्गान्तेन' नास्ति-भो. । २. 'निःश्वासं.....सम्बन्धः' नास्ति-भो. ।

३. 'एवं.....तम्' नास्ति-भो. । ४. पश्यते-क. ।

न तस्य व्रतादिनियमो यन्त्रणाधारणादिकम् ।
होमयागादिकर्माणि निवर्तन्तेऽपरापरम् ॥४॥

मन्त्रसंस्थानधर्मात्मा योगस्त्रिविध उच्यते ।
त्रिविधेन तु ज्ञानेन भवदोषैर्न लिप्यते ॥५॥

एवं योगपरो नित्यं सतताभ्यासतत्परः ।
वज्रसत्त्वसमः सोऽपि मासेनैकेन सिद्ध्यते ॥६॥

अत्रानुष्ठानसौकर्यमाह—न तस्येत्यादिना । तस्येति जपतः,
व्रतं मोनस्नानभक्ष्यादिनियमः, ^१यन्त्रणा धारणा च प्राणवायोः ।
निवर्तन्त इति तन्त्रान्तरेभ्यो नानुवर्तन्ते । अपरापरमिति ^२चार्थो
गम्यते । एभ्योऽन्यदपि ^३बाह्यकर्म सर्वं निवर्तत इत्यर्थः ॥४॥

ननु जल्पनं जपः । तदत्र जपता किं केवल^४ एव जल्पः
करणीयः, किं वा मूर्तिज्ञानयोरपि भावनेत्यत आह—मन्त्रेत्यादि ।
तत्त्वालम्बनसमाधिर्योगः । स योगस्त्रिविधस्त्रिप्रकारः । कुतः ?
यस्मान्मन्त्रसंस्थानधर्मात्मा । तत्त्वद्योतकं वचनं मन्त्रः, देवतामूर्तिः
संस्थानम्, मन्त्रार्थज्ञानं धर्मः । त्रिविधेन तु ज्ञानेनेति । अनन्तरोक्तेन
योगत्रयेण, न तु जल्पमात्रेण । भवदोषैर्न लिप्यत इति संसारदोषैः
पापादिभिर्विमुच्यत इत्यर्थः ॥५॥

एवमिति योगत्रयम् । नित्यमिति प्रत्यहम् । सततमिति
प्रतिसन्ध्यम् । ^५सिद्ध्यत इति सम्पद्यते । वज्रसत्त्वः

१. मालामन्त्रधा-भो. । २. चादर्थो-ख. । ३. नास्ति-भो. । ४. लमेव-ख. ।

५. 'सिद्ध्य.....द्यते' नास्ति-भो. ।

इन्द्रवर्णसम्प्रयुक्तामादिमाक्षरभावनाम् ।

स विद्यया सम्पुटितं तमाकर्षयति क्षणात् ॥७॥

द्वितीयाक्षरप्रयुक्तया चिन्तया हि विभावनम् ।

सर्वमपि च त्रैलोक्यं समस्तं वशमानयेत् ॥८॥

श्रीहेरुकः, तेन समः सदृशः । अपिशब्दाद् वज्रडाकिनीसमः । स इति योगी । तदत्र हेरुकस्य ज्ञानडाकिनीनां मूर्तिस्तदहङ्कारेण भावनीया । मन्त्रः प्रणवहंकारौ शनैरुच्चार्यमाणौ, तन्मध्ये च शनैरुच्चार्यमाणो मूलमन्त्रः । मन्त्रार्थज्ञानं रविसोमसम्पुटोदरगत-विद्याक्षर^१शीर्षे वीरबिन्दुमुत्थाप्य तदुत्थितेन रश्मिना सर्वभावानां बुद्धमयीकरणं वीरबिन्दौ च संहरणं वेदितव्यम् । एवं मन्त्रसंस्थानधर्मयोगैः षण्मासजपे कृते सदृशसिद्धौ लब्धायामलब्धायाम् वा सम्यक् प्रयुक्तानि विद्याक्षराणि यथास्वमवश्यं^२ कर्म साधयन्ति ॥६॥

विद्याक्षराणि तत्प्रयोगांश्च सूचयितुमाह—इन्द्रवर्णेत्यादि । इन्द्रगोप इन्द्रशब्देनोक्तः । आदिमाक्षरं प्रणवः । तस्य भावनां यस्याकर्षणाय प्रयुञ्जीत । विद्येति विद्यायोगी । स योगी तं साध्यं क्षिप्रमानयति । क्षिप्रमित्यस्य निर्देशः—क्षणादिति । एतदुक्तं भवति—बुद्धडाकिन्यादियोगं कुङ्कुमारुणं कृत्वा वीरभाजने कुङ्कुमारुणं प्रणवं विचिन्त्य तद्विन्दौ वीरं विन्यस्य प्रणवरश्मिभिर्वीरमरुणौकृत्य वीरादरुणरश्मिरेखाद्वयं निःसार्य एकस्या अग्रे पाशं द्वितीयस्या अङ्कशं विचिन्तयेत् । साध्यं पाशेन कण्ठे बद्ध्वा अङ्कशेन हृदि विद्ध्वा क्षिप्रमाकृष्यमाणं विचिन्तयेत् । मुहूर्तादाकृष्टो भवतीति ॥७॥

द्वितीयेत्यादि । आलिपाठे द्वितीयमक्षरमाकारः, तस्मिन्

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च इन्द्रः कामेश्वरस्तथा ।
आकृष्यन्ते सपत्नीका ज्ञानाक्षरेण चोदिताः ॥९॥

आकाराक्षरसंयुक्ताः कायवाक्चित्तसंस्थितम् ।
त्रिसंयोगभावनया पिण्डाकृष्टिश्च उत्तमा ॥१०॥

प्रयुक्तस्तच्छीर्षमुत्थापितो वीरः । तेन भावयन्ति परमाणुशो रञ्जयन्ति
स्वदेवतायोगिनः । विभावनमिति विधिसाध्यभावनम् । सर्वमपि
चेति साध्याङ्गसमस्तमित्यादि । अप्यर्थो गम्यते । त्रैलोक्यमपि
समस्तं वशमानयति, किं पुनः प्राणिशतं प्राणिसहस्रं वेत्यर्थः ।
किमुक्तं भवति—षण्णामन्यतमयोगं जवारुणं कृत्वा आकारं जवारुणं
सम्पुटे विन्यस्य तच्छीर्षं च वीरं तेनैव रञ्जितं तद्रश्मिना साध्यान्
प्रति परमाणुं रञ्जयित्वा वशीकृतान् पादतले निपतितांश्चिन्तयेत् ।
सर्वे ते वशमायान्तीति ॥८॥

ब्रह्मेत्यादि । कामेश्वरो मारः । ^१एते ब्रह्मादय
आकृष्यन्ते । अक्षयत्वादक्षरश्चित्तवज्रस्तस्य गुह्याक्षरम् अक्षरा-
क्षरम् । अक्षरज्ञानेति क्वचित् पाठः । तत्र ज्ञानं ^२बीजाक्षरम्,
उभयस्थायिहूँकार इत्यर्थः । स चाकृष्टौ जवारुणः, तेन चोदिताः
प्रेरिताः सन्तः । कथं चोदिताः ? प्रथमाकृष्टिः ^३प्रयोगवत् ।
हूँकारनिश्वासेनात्राकृष्टिरित्यपरे । वीरोत्थितरश्मिशुण्डाभिरत्र तन्त्रे
^४सर्वाकृष्टिप्रयोगा इति केचित् ॥९॥

उत्तमां पिण्डाकृष्टिमाह—आकारेत्यादिना । आकारश्चाक्षरं
च ताभ्यां युक्ताः, आकारेण हूँकारेण वा सम्यग् युक्ताः, साधका

१. 'एते.....ष्यन्ते' नास्ति-भो. । २. वीरा-भो. । ३. कृष्टिविधि-भो. ।

४. आकृष्टि-भो. ।

खेकारसंयुतं रक्तं श्वेतं ध्यात्वा चतुर्मुखम् ।
कपालहस्तमात्मानं शुक्राकृष्टिश्च उत्तमा ॥११॥

चिकारेण समायुक्तं पीतवर्णं प्रभास्वरम् ।
ध्यात्वात्मानं हयमुखं मद्याकृष्टिश्च उत्तमा ॥१२॥

इत्यर्थः । त्रिभिः संयोगस्त्रिसंयोगः । कायवाक्चित्तसंस्थितमिति साध्यस्य काये कण्ठे हृदये चावस्थितमिति । किमुक्तं भवति—षण्णामन्यतमयोगं जवारुणं कृत्वा सम्पुटगर्भे आकारस्य शीर्षे हूंकारस्य वा बिन्दौ वीरं विन्यस्य यंकारजं वायुमण्डलारूढं साध्यं वीरारुणरश्मिरेखाद्वयमुखपाशाङ्गशाभ्यां यथाक्रमं कण्ठे बद्ध्वा हृदि विद्ध्वा च द्रुतमन्तरिक्षेणोक्कृष्यमाणं चिन्तयेत् । क्षणादाकृष्टो भवति^१ ॥१०॥

खेकारेत्यादि । एतदुक्तं भवति—खेकारेण श्वेतं चतुर्मुखं कपाल^२पाशहस्तमात्मानं रक्तचित्तं विभाव्य^३ खेकारशिरःस्थित-वीरोत्थितरश्मिनलिकया साध्यगुह्यप्रविष्टया तदीयं शुक्रमाकृष्य कपाले क्रियमाणं चिन्तयेत् । क्षणादाकृष्टं भवतीति ॥११॥

चिकारेत्यादि । ह्रस्वचिकारेण पीतवर्णं^४ पीतप्रभमात्मानं हयमुखं ध्यात्वा चिकारशिरःस्थितवीररश्मिशुण्डया^५ पात्रस्थं मद्यमाकृष्य भाजनं पूर्यमाणं चिन्तयेत् । क्षणात् पूरितं भवतीति ॥१२॥

१. इति दर्शितम्-भो. । २. 'पाश' नास्ति-भो. । ३. 'खेकार' नास्ति-भो. ।
४. वस्त्रं-क. ख. । ५. पत्रस्थं-क. ख. ।

रकारेण समायुक्तं रक्तवर्णं महाद्युतिम् ।
चतुर्भुजं चतुर्मुखं जम्बुवक्त्रं च सुस्थितम् ॥१३॥

विभाव्य क्रुद्धमात्मानं रक्ताकृष्टिश्च उत्तमा ।
षडक्षरसमायुक्तं षड्भिः स्थानेषु संयुतम् ॥१४॥

सिद्ध्यन्ति वज्रयोगिन्यो योगश्च डाकिनीगणः ।
चक्षुर्द्वयं च कर्णौ च नासिका हृदयं तथा ॥१५॥

रकारेणेत्यादि । रेफेण रक्तवर्णं चतुर्भुजं चतुर्मुखं
जम्बुवक्त्रं महाद्युतिं क्रुद्धमात्मानं विभाव्य रश्मिजलूकया^१
साध्यशरीराद् रुधिरमाकृष्यमाणं चिन्तयेत् पूर्ववदिति ॥१३-१३^१/_२॥

स्वदेवतायोगेषु षडङ्गन्यास एषामेव विद्याक्षराणाम् । अतः
प्रस्तावात् तमप्याह—षडित्यादिना । अनन्तरोक्तानि षड् विद्याक्षराणि
षड् वर्णाः, तैः समायुक्तं चिन्तयेदिति सम्बन्धः । स्वदेवतादेहमिति
शेषः । ^२क्व समायुक्तमित्याह—षड्भिः स्थानेष्विति । षट्सु
^३प्रदेशेष्वित्यर्थः । एवं सति वज्रयोगिन्यः सिद्ध्यन्ति,
नान्यथा । वज्रो हेरुकः, योगिन्यः पञ्चडाकिन्यः । योगः
श्रीहेरुकः, तस्य डाकिनी[गणः] । संवरे ताभिरेव योगिनीभिः
सह सुखवरे सति षट्सु^४सुखस्थानेष्वित्युक्तम् । तान्येव
स्थानान्याह—चक्षुरित्यादिना । मानसं हृदयम् । चकाराज्जिह्वा
कायश्च ॥१४-१५॥

१. कया पदरूपवत् साध्य-भो. । २. कुतः-क. । ३. अङ्गेषु-भो. ।

४. षट्सु स्था-ख., षट्स्था-भो. ।

सिंहविक्रीडितां मुद्रां योगिनो बन्धयन्ति हि ।
प्राणायामं सुयन्त्रित्वा ध्यात्वा ज्वलति तत्क्षणात् ॥१६॥

अकनिष्ठभुवनपर्यन्ते सप्तलोके चराचरे ।
सर्वे ततो भावयन्ति न च तं बुद्ध्यन्ति हि ॥१७॥

योगान्तरमाह—सिंहेत्यादि । सिंहो वीरः, तस्य विक्रीडितं यस्यां सा तथोक्ता । मुद्रामिति रविसोमसम्पुटाम्, बन्धयन्तीति बद्धां चिन्तयन्ति, तिसृभिरक्षरपङ्क्तिभिः पूर्ववत् (१.२६) । योगिन इति चतुर्देवीपरिवृतश्रीहेरुकयोगे स्थिताः । प्राणायाममिति उच्छ्वास-निश्वासौ । सुयन्त्रित्वेति सुष्ठु यन्त्रित्वा, क्रमेण सूक्ष्मीकृत्येत्यर्थः । ध्यात्वेति । तत्रैव वीरे शशिविवरद्वारदृश्ये मनः समाधाय ज्वलति तत्क्षणादिति ॥१६॥

वीरे स्थिरीकृतचित्तस्य धगिति ज्ञानं ज्वलति, अवभासं करोति । कियति दूरे ज्वलतीत्याह—^१सप्तलोक इति । पातालं भूः स्वर्गः प्रथमं ध्यानं द्वितीयं तृतीयं चतुर्थमिति सप्त लोकाः, तेषां समाहारः सप्तलोकम्, ^२नपुंसकं त्रिभुवनवत् । त्रीणि ध्यानानि प्रत्येकं ^३त्रिभूमिकानि, चतुर्थमष्टभूमिकम् । तस्याष्टमी भूमिरकनिष्ठम् । तेनाह—अकनिष्ठभुवनपर्यन्त इति । तत्र चराः सत्त्वाः,^४अचरा विमानभुवनादयः । तेनाह—चराचर इति । इदानीं तस्य वीरस्य सर्वसत्त्वैर्दृश्यतामदृश्यतां च दर्शयितुमाह^५—भावयन्तीत्यादि । सर्व इति सर्वसत्त्वाः, भावयन्तीत्यभ्यस्यन्ति, स्वचित्तस्यैव तथा

१. अकनिष्ठेत्यादि-भो. । २. 'नपु.....नवत्' नास्ति-भो. । ३. नास्ति-भो. ।

४. अचराधि-क. । ५. 'आह.....इत्यादि' इत्यस्य स्थाने 'सर्वैरेत्याद्याह' इति-भो. ।

यदि सर्वे बुद्ध्यन्ति जगत्क्रीडा विनश्यति ।
तस्माद् गुप्तमिदं ज्ञानमप्रकाशयमनक्षरम् ॥१८॥

बुद्ध्यन्ति हि संबुद्धा योगनिद्रासमागताः ।
ध्यायन्त एकरूपाणि पिण्डं तद्गतमानसाः ॥१९॥

तथा दर्शनात् । न च तं बुद्ध्यन्तीति ^१तत्त्वाददर्शनात्, अभूतैरेव
रूपैस्तस्य बालेषु प्रख्यानात् ॥१७॥

जगत्क्रीडेति विश्वस्य क्रीडा तैस्तैराकारैर्द्वयकल्पना
विनश्यतीति पूर्वमेव नष्टा स्यात् । न चाद्यापि नष्टा । यत एवं
तस्मात् । इदं ^२ज्ञानमिति ज्ञानतत्त्वमद्वयं वीराख्यम्, गुप्तमिति
बालेषु गोपितम् । केन (काभिः)? ^३अभूतरूपसन्दर्शिनीभिर्भ्रान्तिभिः ।
कीदृशम्^४ ? अवागोचरत्वादप्रकाशम् । मनोजल्पाविषयत्वा-
दनक्षरम् ॥१८॥

के तर्ह्येनं परमार्थतः पश्यन्तीत्याह—^५बुद्ध्यन्तीत्यादि ।
हिशब्दोऽवधारणे भिन्नक्रमश्च, ^६संबुद्धा हीति । तथागता
एवेत्यर्थः । तथागतानामपि तद्दर्शनं यदि प्रकृतिसिद्धं स्यात्,
तदाऽन्येषामगतिरेव स्यात् । अथ ^७योगाधीनम्, तदा तेनैव
योगेनान्येऽपि तं पश्येयुरित्यत आह—योगेत्यादिना । एकान्तनिर्विक्षेपत्वेन
निद्रासाधर्म्यान्निद्रेव निद्रा, योगश्चासौ निद्रा च योगनिद्रा, ^८तथा
समागताः संगताः सन्तः । तस्यैव निर्देशो ^९ध्यायन्त इत्यादि ।
रूपाणीति सर्वधर्मान्^{१०} । एकेति निराभासप्रकाशमात्रैकरसान् ।

१. नास्ति-क. ख. । २. ज्ञानं गुह्यमित्याह-भो. । ३. भूतरूपास-भो. ।
४. तज्ज्ञानम्-भो. । ५. बुद्ध इत्याद्याह-भो. । ६. 'संबुद्धा हीति' नास्ति-भो. ।
७. वज्रयोगा-भो. । ८. 'तथा समागताः' नास्ति-भो. । ९. पिण्डमित्यादि-भो. ।
१०. धर्मस्वभावान्-भो. ।

भावयन्ति नवद्वारोद्भवान् बुद्धात्मकान् हि ते ।
भक्षयेन्निर्विकल्पेन निःस्वभावेन धीमता ॥२०॥

अङ्गुष्ठानामिकाद्वारे चिन्तामणिरवस्थितः ।
अमृतात्मकं संवृत्तं नित्यसिद्धिरवाप्यते ॥२१॥

॥ इति योगेश्वरीमहाविद्यायोगनिर्णयो नाम द्वितीयो निर्देशः ॥२॥

पिण्डमिति तान्येवात्यन्तपिण्डनात् सुसूक्ष्मीकरणात् पिण्डं बिन्दुमात्रं
सर्षपसूक्ष्ममित्यर्थः । एतेन वीरस्य मुद्रारूपं प्रसाधितम् ।
तद्गतमानसा इति । तत्रैव पिण्डे स्थितचित्ताः । एतेन योगनिद्रार्थः
सूचितः ॥१९॥

एवंविधानां ^१योगानां निष्पत्तिकारणं समयमाह^२—भाव-
यन्तीत्यादिना । भावयन्तीत्यधिमुञ्चेदित्यर्थः । कानधिमुञ्चेत् ?
नवद्वारोद्भवा ^३येऽर्थास्तान् । कीदृशानधिमुञ्चेत् ? ^४बुद्धात्मकान्
शाश्वताऽक्षोभ्यरत्नेशलोकेशामोघस्वभावामित्यर्थः । भक्षयेत् तानेव
विकल्पभक्षणार्थम् । निविकल्पेनेति निःशङ्केन । निःस्वभावेनेति
ग्राह्यग्राहकनिराभासेन । धीमतेति प्रकाशमात्रतानिष्ठेन, चेतसेति
शेषः^५ ॥२०॥

अङ्गुष्ठेत्यादि । ^६द्वारे चिन्तामणिरिति । अङ्गुष्ठानामि-
कयोर्मुखे चिन्ता^७मणिरवस्थित इत्यर्थः । ततस्तेनैव तान् भक्षयेदिति

१. योगनि-भो. । २. नवद्वारेत्यादि-भो. । ३. ये द्रव्या-भो. ।
४. 'आह-आत्मेति'-भो. । ५. नास्ति-भो. । ६. 'द्वारे...रिति' नास्ति-क. ख. ।
७. मणिभूतः-भो. ।

भावः । कदेत्याह—अमृतेत्यादि । यदा तत्सर्वममृतात्मकं संवृत्तम्, वक्ष्यमाणविधिनेत्यर्थः । ततः किं स्यादित्याह—सिद्धिरित्यादि ॥२१॥

योगेश्वरी महाविद्येति व्याख्यातम् (पृ. २४) । तस्या योगो रविसोमसम्पुटे बिन्दुयोगः, स येन प्रकारेण निरूप्यते— सिंहविक्रीडितमित्यादिना (२.१६), तस्य निर्णयः, तस्य निर्देशः कथनम् ।

॥ गुणवत्यां महामायातन्त्रटीकायां द्वितीयो निर्देशः ॥

तृतीयो निर्देशः

अथापरान् सम्प्रवक्ष्ये समयोत्तमसाधनान् ।
द्रव्यगणान् भक्ष्यमाणान् सर्वज्ञफलदायकान् ॥१॥

येन भक्षणमात्रेण सिद्ध्यन्ते गूढमातरः ।
दन्तिनो नुस्तुरङ्गस्य तथा गोः कुङ्कुमस्य च ॥२॥

महापलसमायुक्तं पञ्चज्ञानामृतं तथा ।
अष्टमितश्चतुर्दशी यावदसह भाविताः ॥३॥

सप्तदिनानि जम्बूके स्थापिता अथ चोद्धृताः ।
तानि सिद्धार्थमाना वै गुलिकाः पञ्च कारयेत् ।
गोपितं चान्यतन्त्रेषु सम्यग् बुद्ध्वा महाफलम् ॥४॥

^१अपरानिति अनन्तरोक्तेभ्यो ^२नवभ्योऽन्यान् । द्रव्याणि च
तानि गणाश्च गणैकदेशत्वात् प्रत्येकमिति द्रव्यगणाः [तान्] ।
^३सर्वज्ञेति सर्वज्ञत्वम्, तदेव फलम्, तद्दायकान् ॥१॥

येनेति येन द्रव्यगणेन । ^४गूढमातरो वज्रडाकिन्यः ॥२॥

महत्त्वेन समायुक्तं ^५महागुणेन भूषितं महापलम् । तथा-
शब्दः समुच्चये । ^६चतुर्दशी[मि]त्यादि । अष्टमिह्रस्वो
जम्बूकदीर्घश्चेह छान्दसः । असहेति प्रत्येकम् । भाविता इति
पञ्चामृतेन लिप्तशोषितानि कृत्वा, सप्तदिनानि ॥३-४॥

१. अथेत्यादि-ख. भो. । २. 'नवभ्यो' नास्ति-क. । ३. नास्ति-भो. ।
४. भूतमा-भो. । ५. 'महा.....षितम्' नास्ति-क. ख. । ६. 'चतु....छान्दसः' नास्ति-भो. ।

यावत् तथा चाष्टमितश्चतुर्दशीं
जम्बूकमध्येऽसह सम्प्रयोज्य ।
शिवाङ्गमध्ये त्वथ भूतरात्रौ
स्थाप्यानि सिद्धार्थफलानि तानि ॥५॥

द्रव्याणि वै पञ्च तथा प्रमाणं
यथा मयैव त्विह तन्त्र उक्तम् ।
अन्येषु तन्त्रेषु च नोक्तसर्वं
संगोपितं बुद्धय महाफलानि ॥६॥

कृष्णाष्टमीमारभ्य यावत्कृष्णचतुर्दशीमिति । एवं कृते
पश्चात् संप्रयोज्येति ^१एकीकृत्य । भूतरात्रौ शिवाङ्गमध्ये
स्थाप्यानीति स्थापनीयानि तानीति । तथा भावितस्थापितानि द्रव्याणि
सिद्धार्थफलानीति सर्षपप्रमाणानि ॥५॥

कानि ^२पुनस्तानि द्रव्याणीत्याह—पञ्चेति । पञ्चपल-
लानीत्यर्थः ^३ । ^४तथा प्रमाणमिति । उपलक्षणत्वात् तथाविधानं च ।
इह तन्त्रे उक्तमिति साकल्येनोक्तम् । अत एवाह—अन्येषु
तन्त्रेषु चेत्यादि । नोक्तसर्वमिति न सर्वमुक्तम् । ततः
किमित्याह—संगोपितमिति । किं कृत्वा गोपितमित्याह—बुद्ध्वा
महाफलानीति । महाफलानि तानि ज्ञात्वेत्यर्थः । कुतो महाफलानि ?
पञ्चानां स्कन्धानां पञ्चज्ञानभावितानां शिवाङ्गस्थितानां ^५संपुटपात्रे
स्थितानां वीरसारूप्यगमनात् ॥६॥

१. नास्ति-भो. । २. 'पुनस्तानि द्रव्याणि' नास्ति-भो. । ३. 'त्यर्थः' नास्ति-भो. ।

४. 'तथा' नास्ति-भो. । ५. 'संपुट.....तानां' नास्ति-क. ख. ।

अथात्र साधनं येन चित्तपद्मं विभावयेत् ।
चतुर्देवीसमायुक्तं रक्तवर्णसमप्रभम् ॥७॥

नीलोत्पलप्रभं पूर्वं बुद्धबिम्बोपशोभितम् ।
दक्षिणे पीतवर्णं च पश्चिमे तु सितप्रभम् ॥८॥

अथेत्यादि । अथेति अनन्तरम् । अत्र तन्त्रे यत् साधनम्^१ । येन ^२कर्मणा भगवान् समण्डलः साध्यते आराध्यते, तद्वति तत्प्रभूयत इत्यर्थः । विभावयेत् पद्ममिति । निराभासबोधिचित्तभावनया गगनसमीकृते जगति वज्रमयीं भूमिं विचिन्त्य घोरश्मशानाष्टकमध्यस्थकूटागारान्तरालकमलमण्डलं चतुर्दलं वा चिन्तयेत् । रक्तवर्णसमप्रभमिति रक्तं रक्तप्रभं च । मनसेति वीराख्येन सुविशुद्धमनोबिन्दुना ^३कर्णिकावस्थितेन स्फुरित्वा च चतुर्षु दिग्दलेषु स्थितेन संलक्षितम् । चतुर्देवीसमायुक्तमिति । पूर्वदलादिबिन्दुभ्यो यथाक्रमं वज्रमणिपद्मकर्मकुलेशानामुत्कुलानां च प्रत्येकमनन्तानां स्फुरणे सति तत्र संहारजनिताभिर्वज्ररत्न-पद्मविश्वडाकिनीभिस्तेष्वेव दलेष्वध्यासितम् ॥७॥

बुद्धबिम्बोपशोभितमिति । बुद्धो वज्रधरः, ^४तस्य बिम्बं मूर्तिः श्रीहेरुकः, तेन मण्डलनायकेनोपशोभितम् । ताभिरेव देवीभिर्वक्ष्यमाणगीतिसंचोदिताद् मूलमनोबिन्दो^५र्बीजद्वयाकारपरिणतात् पञ्चकुलेश-उत्कूलस्फुरणव्याप्तासु दिक्षु तत्संहारोच्छ्वसित^६-बीजद्वयपरिणामेन बुद्धडाकिनीपरि^७रब्धेन 'भगवता श्रीहेरुकेण'^८ उपशोभितम् । तत्पुनर्बुद्धबिम्बं कीदृशमित्याह-पूर्वेत्यादि । चतुर्वक्त्रमिति^९ चतुर्मुखम् । चतुर्भुजं त्रिनेत्रमिति सुगमम् ।

१. साधनोपायभूतम्-भो. । २. मार्गेण-भो. । ३. पद्मकर्णिका-भो. । ४. नास्ति-भो. । ५. 'बीज.....णतात्' नास्ति-ख. । ६. तमन्यबी-ख. । ७. बद्धेन-भो. । ८. नास्ति-भो. । ९. योगात्-क. ख. । १०. 'चतुर्दिग्दर्शितम्' इत्यधिकः पाठः-भो. ।

उत्तरे रक्तवर्णं तु ज्वालामालाकुलं तथा ।
त्रिनेत्रं सुन्दरं ध्यायेच्चतुर्वक्त्रं चतुर्भुजम् ॥९॥

पूर्वं देवीं त्रिनेत्रीं वामे खट्वाङ्गघण्टे दक्षिणतस्तथा
वज्रकपालहस्तामिति भावयेत् । दक्षिणे देवीहस्ते त्रिशूलं
च रत्नं च पताका च जम्बुकश्च । पश्चिमेन देवीहस्ते
धनुश्च बाणश्च विश्वपद्मं च कपालं च । उत्तरे देवीहस्ते
खड्गश्च पाशश्च डमरुश्च कपालं च ॥१०॥

कस्मिन् मुखे किं वर्णीमित्याह—पूर्वमुखे नीलोत्पलवर्णम्, दक्षिणमुखे
पीतम्, पश्चिममुखे ^१सितम्, उत्तरमुखे ^२रक्तवर्णीमित्यर्थः । यश्च
मूले मुखे वर्णः, स एव देहे वर्ण इति प्रसिद्धमेतत् ।
ज्वालामालाकुलमिति । प्रलयानलसमानां ज्वालानां माला आकुला
अस्येति तथोक्तम् ॥८-९॥

वाम इत्यादिना देवीनां चिह्नमाह—वामे खट्वाङ्गघण्टे
अस्या इति वामखट्वाङ्गघण्टाम्, दक्षिणतस्तथा वज्रकपाल-
हस्तामिति, वज्रं च कपालं च ते हस्तयोरस्या इति तथोक्ताम् ।
पूर्वं इति पूर्वदले । देवीमिति । एतदुत्तरत्रापि सर्वत्र सम्बन्धनी-
यम् । इह तावद् ^३वज्रडाकिनीम् । उत्तरत्र यथाक्रमं रत्नडाकिनीं
पद्मडाकिनीं विश्वडाकिनीं च । दक्षिण इत्यादि । त्रिशूलं च रत्नं
च पताका च जम्बुकश्च हस्ते यस्या इति तथोक्ताम् ।
^४पश्चिमेनेति । ^५सप्तम्यर्थे तृतीया । धनुश्च बाणश्च विश्वपद्मं
च कपालं च, तद्योगाद् ^६धनुर्बाणविश्वपद्मकपालिनीम् ।
^७खड्गेत्यादि । खड्गश्च पाशश्च डमरुश्च कपालं च, तानि

१. सितरक्तं-भो. । २. श्याम-भो. । ३. श्रीवज्र-भो. । ४. पश्चिमेत्यादि-भो. ।

५. 'सप्त.....तीया' नास्ति-भो. । ६. 'धनु.....नीम्' नास्ति-भो. । ७. उत्तरेत्यादि-भो. ।

कायवाक्चित्तवज्रं तं तत्र मध्ये विचिन्तयेत् ।
कपालमथ खट्वाङ्गं धनुर्बाणधरं तथा ॥११॥

आदिमन्त्रेण संयुक्तं ध्यात्वा ज्वलति तत्क्षणात् ।
तथा योगी साधयते द्रव्यं सिद्धिफलप्रदम् ॥१२॥

हस्तेष्वस्या इति तथोक्ताम् । एता अपि ज्वालामालाकुलाश्चतुर्वक्त्रा-
श्चतुर्भुजास्त्रिनेत्राः, प्रधानानुवर्तित्वाद् 'गुणानाम् । अत एव
भगवन्मुखानुसारेण पूर्वा नीलवर्णा, दक्षिणा पीता, पश्चिमा 'सितवर्णा,
उत्तरा श्यामा । मुखमप्यासां तथैव, किन्तु मूलमुखमासां देहवर्णम् ।
'देहवर्णस्य भगवन्मुखस्य स्थाने नीलमुखमासाम् ॥१०॥

भगवतः स्थानचिह्नान्याह—कायेत्यादिना । कायवाक्-
चित्तवज्रः श्रीहेरुकः, तं विचिन्तयेत् । तत्रेति रक्तकमले । मध्य
इति कर्णिकायाम् । कपालमित्यादि । तस्य हस्तेष्विति शेषः ।
यथैव श्रीहेरुकस्तथैव बुद्धडाकिनी, किन्तु रक्तवर्णा रक्तमूलमुखा
च । सा चास्य संमुखी भुजद्वयेन गाढमाश्लिष्टकन्धरा ॥११॥

समयं विना न सिद्ध्यः, ततः 'समयप्रज्वालनमाख्यातुमाह—
आदीत्यादि । आदिमन्त्रः प्रणवः, तेन संयुक्तं 'समयद्रव्यं
ज्वलतीति सम्बन्धः । ध्यात्वेति यथोपदेशं ध्याते सति ।
द्रव्यमिति समयद्रव्यम् । साधयत इति निष्पादयति । कीदृशं
निष्पादयति ? सिद्धिफलप्रदम् । उक्तं च श्रीमति गुह्यसमाजे—
'ॐकारं सर्वमन्त्राणां ध्यात्वा ज्वलति तत्क्षणात्' (१६.३८)
इति ॥१२॥

१. गणा-भो. । २. सितरक्त-भो. । ३. नास्ति-भो. । ४. समयमाख्यातु-भो. ।

५. 'समय' नास्ति-भो. ।

योगाश्च सिद्धयोगाश्च सहसाऽऽस्था प्रवर्तते ।
अन्तर्धानाददृश्योऽसौ साहस्रैकावभासकः ॥१३॥

हरति सर्वसिद्धानां प्रभुङ्क्ते देवकन्यकाः ।
गङ्गावालुसमान् बुद्धान् सवज्जालयसंस्थितान् ॥१४॥

स्वहस्तस्थामलकवत् पश्यति वज्रचक्षुषा ।
गङ्गावालुसमान् क्षेत्रान् कायवाक्चित्तलक्षणम् ॥१५॥

भावयन्ति हि सर्वात्म स्थितं चित्ताख्यनाटकम् ।
तत्त्वानुत्तरसंसिद्धं बुद्धबोधिस्थितं शिवम् ॥१६॥

ज्वालनानुशंसामाह—^१योगा इत्यादि । अत्र योगिन एव योगाः । योगिनो योगिन्यश्च सिद्धाः सन्तीति प्रत्ययो लोकस्य प्रवर्तते, प्रभावदृष्टान्तस्य ज्वालनस्य दर्शनादित्यर्थः । अन्तर्धानादिसिद्धेः प्रभावमाह—^२अन्तरित्यादिना । साहस्रैकावभासक इति । चतुर्द्वीपकानां लोकधातूनां सहस्रं साहस्रो लोकधातुः, तस्यैकस्यावभासकः, आधिपत्येन परार्थक्रियया च ॥१३॥

सर्वसिद्धानामिति विद्याधरादीनाम्, कन्यामिति योज्यम् । वज्जालयस्तेषामेव बुद्धानां बुद्धक्षेत्रं संस्थितम्, तेषामेषा^३ पर्षत् । सह तासामिति सवज्जालयसंस्थितान् ॥१४॥

चक्षुर्वज्रं वज्रचक्षुः, दिव्यचक्षुरभिज्ञेत्यर्थः । ^४स्वहस्ते-
त्यादि । स्वहस्ते स्थितमेकमामलकं यथेत्यर्थः^५ । ^६कायवाक्-

१. महायोगे-क. ख. । २. सर्वैरि-भो. । ३. मेघ-ख. । ४. हस्त-ख. भो. ।

५. 'क्षेत्रमिति बुद्धक्षेत्रम्, तत्रस्थानां सत्त्वानामित्यर्थः' इत्यधिकः पाठः-भो. ।

६. कायेत्यादि-भो. ।

अत्र श्लोकः—

रूपाणि मुद्राणि च न्यासचिह्नं
द्रव्याणि ध्यानानि च भावनानि ।
नानाविधा उपायाश्च निदर्शितानि
उक्तानि देवीमनईप्सितानि ॥१७॥

चित्तलक्षणमिति । कायचित्तानि इन्द्रियज्ञानानि, वाक्चित्तानि मनोविज्ञानानि, सजल्पत्वात् । तेषां लक्षणं स्वरूपम्, भावयन्तीति मनसा पश्यन्ति । कथं पश्यन्ति ? सर्वात्म, ^१सर्वात्मनेत्यर्थः । किमेतदित्याह—चित्तेत्यादि । चित्ताख्यमिति वज्रचित्तम्, पर-चित्त^२ज्ञानमित्यर्थः । ^३आत्मनः स्वदेवताकारेण भावनं योगतन्त्रे तदिह नाटकम्, नाटकसाधर्म्यात् । तस्मादुद्भवोऽस्येति । यथोक्तम्, समयद्रव्यसाधने ^४स्तोकमुक्तम् ।

^५अयं.....

श्रावकप्रत्येकबुद्धानामपीदृशं शिवमस्ति, ततो विशिनष्टि—तत्त्वेति । सर्वप्रपञ्चरहितं ज्ञानमित्यर्थः । बोधिसत्त्वानामपीदृशं ज्ञानमस्ति, तत्तु बुद्धज्ञानेन सोत्तरम् । ततो विशेषणार्थमाह—अनुत्तरमिति । नास्मादुत्तरमस्तीत्यनुत्तरम् ॥१५-१६॥

अत्र श्लोक इति । यथोक्ते तन्त्रार्थे संग्रहश्लोकः ।

रूपाणीति देवतादीनां वर्णसंस्थानानि । मुद्राणीति मुद्रणानि । षडङ्गन्यासकुलिशाब्जशोधनादीनि, तस्यैव चिह्नमिति

१. सर्वभावात्मने-भो. । २. चित्ताभिज्ञान-भो. । ३. इतः पूर्वं 'कथं पश्यन्ति ? सर्वात्मनः' इत्यधिकम्-भो. । ४. श्लोक-क. ख. । ५. अत्र केचन श्लोका अधिकाः, तेषां संस्कृतव्याख्या नोपलभ्यते, भोटानुवादस्तु वर्तते ।

तन्त्रं गृहे यस्य भवेत् नित्यं
 धारेत् वाचेत् विभावयेत् ।
 न तत्र रोगा न जरा न मृत्यु-
 विघ्नानि देव्यः परिरक्षयन्ति ॥१८॥

इति महावज्रडाकिनीनां मतं महागुह्यं समाप्तं
 सोपचारम् ।

॥ इति तृतीयो निर्देशः ॥

॥ इति महामायातन्त्रं समाप्तम् ॥

कपालखट्वाङ्गादि । द्रव्याणि समयवस्तूनि । ध्यानानीति । 'ध्ये
 चिन्तायाम्', जपा इत्यर्थः । भावनानि मण्डलचक्रादिसमाधयः ।
 नानाविधा उपायाः कर्मप्रसरहीनसिद्ध्यादयः । एतानि सर्वाणि
 निदर्शितानि सूचितानि । इयता सर्वेण किं कृतमित्याह-
 देवीत्यादि । देव्या महामायया यानि मनईप्सितानि हृदयेप्सितानि
 तान्युक्तानि ॥१७॥

^१तन्त्रपरिग्रहेऽनुशंसामाह—^२तन्त्रमित्यादिना श्लोकेन । तन्त्रं
 महामायाख्यम् । गृहे यस्येति यस्य गृहे । भवेत्
 नित्यमिति नित्यं तिष्ठते । धारेतेति धारयेत् । वाचेतेति
 वाचयेत्, पठेदित्यर्थः । विभावयेतेति ^३विभावयेत् । विघ्नानीति
 विघ्नाः ॥१८॥

महत्पञ्च ता वज्र^१डाकिन्यश्च तासाम्, मतम् उपरिगृहीतः
सिद्धान्तः, समस्तं योगिनीतन्त्रमित्यर्थः, तस्य रहस्यं सारम् । किं
तदित्याह—महागुह्यमिति । आदौ परमगुह्यमित्युक्तम्, अन्ते तदेव
महागुह्यमिति पर्यायान्तरेणोक्तं महामायाख्यं तन्त्रमित्यर्थः^२ । तत्
समाप्तं निष्ठितम् । सोपचारमिति । साध्यसाधनार्थो^३ विधि-^४
रूपचारः, सह तेन वर्तत इति सोपचारम्, न तेन शून्यमित्यर्थः ।

महामायातन्त्रे विवृत(ति)मिति कृत्वा गुणवती-
मवाप्तं यत्पुण्यं परिणतमृगाङ्गद्युति मया ।
जिनानामात्मैकः कुलिशधरभावो भवतु मे
ततोऽत्यन्तं दुःखक्षयमखिललोकं च लभताम्^५ ॥

इति गुणवत्या महामायातन्त्रटीकायां तृतीयो निर्देशः ।
गुणवतीनाम महामायातन्त्रटीका
^६महापण्डितरत्नाकरशान्तिपादानां समाप्तेति ।

*

१. योगिन्यः—भो. । २. 'इत्यर्थः' नास्ति—भो. । ३. नोपाय—भो. ।
४. धिः सोपचा—भो. । ५. इतः परमपि श्लोक एको भोटानुवादेऽधिकः ।
६ 'महा' नास्ति—क. ख. ।

परिशिष्टानि

१. महामायासाधनम्
२. महामायासाधनोपायिका कुक्कुरिपादानाम्
३. गद्य-पद्यानुक्रमणी
४. टीकाकारोद्धृतवचनानुक्रमणी
५. टीकाधृत-ग्रन्थग्रन्थकार-मतमतान्तर सूची
६. संकेत सूची
७. विशिष्टशब्दानुक्रमणी

यो नैको नाप्यनेकः स्वपरहितमहासम्पदाधारभूतो
नैवाभावो न भावः स्वमिव समरसो दुर्विभाव्यस्वभावः ।
निर्लेपं निर्विकारं शिवमसमसमं व्यापिनं निष्प्रपञ्चं
वन्दे प्रत्यात्मवेद्यं तमहमनुपमं धर्मकायं जिनानाम् ॥

(से० टी०, पृ० ७)

महामायासाधनम्

महामायाह्वयं देवं चतुर्मुखं चतुर्भुजम् ।

अङ्गे यस्य तथा देवी चतस्रो दिक्षु चापराः ॥

महावज्रधरस्यैव कृपया भीषणाकृतेः ।

महामायाभिधानस्य साधनं साधु कथ्यते ॥

इह भावनाधिकृतो मन्त्री चतुर्देवीगीतिचोदनाविबुद्धः प्रातरुत्थाय
स्वहृत्सूर्यस्थं हुँकाररश्मिभिरात्मानं विशोध्य कृतमुखशौचादिको हुं
फडिति स्थानात्मयोगरक्षां कृत्वा ध्यानालयं प्रविश्य हुंकारेण अर्घ्यं
परिजप्य सुखासनोपविष्टः पुरस्तादन्तरिक्षे भगवन्तं सपरिवारमालोक्य
हृन्मन्त्रकिरणोद्भवैः पञ्चोपहारमेघैः सम्पूज्य पापदेशनादिकमिति
कुर्यात्—देशयाम्यहमात्मनः पापम् अनुमोदे सर्वपुण्यानि,
सर्वबुद्धबोधिसत्त्वार्थपृथग्जनानां परिणामयामि सर्वमात्मनः
कुशलमनुत्तरायां सम्यक्संबोधौ, आबोधेस्त्रीणि रत्नानि शरणं गच्छामि,
बुद्धरत्नं धर्मरत्नं संघरत्नम्, अहो बताहमनुत्तरां
सम्यक्सम्बोधिमधिगच्छेयं सर्वसत्त्वानामर्थाय हिताय यावदेतेषाम्
अत्यन्तनिष्ठे निर्वाणे निरुत्तरे च तथागतज्ञाने प्रतिष्ठापनाय । तदनु
चित्तमात्रमेवेदं सर्वमसत्येव तेन तेनाकारेण प्रख्याति । तद्यथा स्वप्न
इत्यधिमुच्य सर्वाकारान् परित्यज्य निर्मलनभोनिभं निराभासमनन्तं
प्रकाशमात्रं पश्येत्, ॐ शून्यताज्ञानवज्रस्वभावात्मकोऽहमिति
चाधितिष्ठेत् । अनन्तरं पुरस्तादन्तरिक्षसूर्ये हुँकारेण विश्ववज्रं
विचिन्त्य तद्दीप्तरश्मिस्फुरणैरधो वज्रमयीं भूमिं तिर्यग्वज्रप्राकारमुपरि

वज्रपञ्जरं मध्ये घोरश्मशानं विभाव्य तन्मध्ये कूटागारमेकपुटं
सर्वरत्नमयं पश्येत्—

चतुरस्रं चतुद्वारं चतुस्तोरणभूषितम् ।
हाराद्यैरप्सरोभिश्च भास्वद्वेदीचतुष्टयम् ॥

तन्मध्ये रक्तकमलमष्टदलं ध्यात्वा तत्कर्णिकायामनादिनिधनं
तारमुक्ताफलनिभं ज्ञानामृतबिन्दुं ध्यायात् ।

इत्ययमनादियोगो नाम प्रथमः समाधिः ।

मध्यबिन्दुत एव चतुरो बिन्दूनष्टदिग्दलेषु संस्फार्य
बीजाकारपरिणतान् पश्येत्, यथाक्रमं हुं स्वा आ हाः । यथाक्रमं
तेभ्यो वज्रमणिपद्मकर्मकुलेशान् तत्कुलानि च संस्फार्य पुनस्तेष्वेव
संहृत्य तत्परिणताश्चतस्रो योगिनीः पश्येत् । पूर्वदले वज्रडाकिनीं
नीलवर्णां नीलपीतसितहरितवदनां वज्रकपालघण्टाखट्वाङ्गधारिणीम्,
दक्षिणदले रत्नडाकिनीं पीतवर्णां पीतनीलसितहरितवदनां रत्नच्छटा-
त्रिशूलग्रीवानिपीडितजम्बूकपताकाधारिणीम्, पश्चिमदले पद्मडाकिनीं
सितवर्णां सितपीतनीलहरितवदनां विश्वकमलशरकपालचापधराम्,
उत्तरदले विश्वडाकिनीं हरितवर्णां हरितपीतसितनीलवदनाम्
असिडमरुपाशकपालधराम् । चन्द्रासनप्रभाः सर्वाः । शेषमासां
प्रभुमिव नाथमुत्थापयेयुस्ता वज्रगीतिकयाऽनया—

हले सहि विअसिअ कमलु पबोहिउ वज्जे ।
अललललहो महासुहेण आरोहिउ णच्चै ॥
रविकिरणेण पफुल्लिउ कमलु महासुहेण ।
अललललहो महासुहेण आरोहिउ णच्चै ॥

अथ गीतिकानुभावेन भगवान् बिन्दुरूपतां हित्वा
बीजद्वयाकारेणाविर्भवति । ॐ हूँ । ततः ॐकाराद् वैरोचनं तत्कुलं
च संस्फार्य संहरेत्, हूँकारात् पञ्चजिनान् तत्कुलानि च । ततः
ॐकारोद्भवया बुद्धडाकिन्या सहैव भगवान् हेरुको हूँकारादुत्पद्यते ।

भस्मनोद्धूलितः कृष्णो ललिताकासनप्रभः ।
कपिशोर्ध्वज्वलत्केशः कपालमकुटोत्कटः ॥
नीलपीतमहाश्वेतहरिताद्यचतुर्मुखः ।
कपालशरखट्वाङ्गचापधारिचतुर्भुजः ॥
पञ्चबुद्धविशुद्ध्या तु पञ्चमुद्राविभूषितः ।
चक्री कुण्डलकण्ठी च हस्ते रुचकमेखलाम् ॥
नरचर्मम्बरधरो द्वादशारुणलोचनः ।
ज्वालामालाकुलक्रोधः परमानन्दसुन्दरः ॥
अर्धपर्यङ्कनाट्यस्थो नवनाट्यरसैर्युतः ।
अन्तःकरणोद्गीर्णेश्च जनौघैर्जगदर्थकृत् ॥
प्रियतुल्यायुधा रक्ता तत्कण्ठाश्लेषिदोर्द्वया ।
श्रीबुद्धडाकिनी रक्तपीतश्वेतहरिन्मुखी ॥
बुद्धाभिषेका शबरी हेवज्जे गीयते यथा ।
तथेह बुद्धडाकिन्या हेरुकः संप्रपूज्यते ॥
बुद्धो रक्तोऽत्र सत्त्वानां बुद्धकायेन रञ्जनात् ।
शुद्धा धर्माः प्रकृत्येति वागीशस्यैव शुक्लता ॥

तदनु भगवतश्चक्षुरिन्द्रिये ॐकारं रक्तं श्रोत्रेन्द्रिये हूँकारं
नीलं घ्राणेन्द्रिये चीकारं पीतं जिह्वेन्द्रिये आःकारं सितम् उष्णीषस्थाने
रेफं हरितं मनसि खकारं सितं चिन्तयेत् । इति षडिन्द्रिये
षडक्षरन्यासः ।

कवचम्—ॐ आः हूँ इति कायवाक्चित्ताधिष्ठानं यथाक्रमं शिरःकण्ठहृदयेषु । स्तनान्तरे सूर्ये स्वदेवताबीजं तज्ज्ञानस्वभावं दृष्ट्वा तत्किरणाङ्कशैर्ज्ञानमण्डलमाकृष्य हूँकारेण विघ्नानुत्सार्य अर्घ्यं दत्त्वा जः हूँ वै होः इत्याकृष्य प्रवेश्य बद्ध्वा वशीकृत्य तेन सहैकलोलीभूतं समयमण्डलं पश्येत् । ततो ज्ञानबीजरश्मिचोदित-
तथागतप्रेषिताः पञ्चयोगिन्य आगत्य पञ्चज्ञानाम्बुपूर्णं रत्न-
कलशैर्भगवन्तो योगिन्यश्चाभिषिञ्चेयुः । अभिषिच्यमानानां शिरसि
स्वकुलेश उत्पद्यते । भगवतोऽक्षोभ्यः, बुद्धडाकिन्यादीनां यथाक्रमं
शाश्वताक्षोभ्यरत्नेशवागीशामोघसिद्धयः । ततो ज्ञानबीजरश्मिमुख-
स्फारिताभिः पञ्चोपहारपञ्चकामगुणपूजाभिर्भगवन्तं भगवतीं च
पूजयेत् । ततो भगवन्तं देवीनां मुखैः स्तूयात्—

दण्डोत्कटमहाभीममुण्डमृगदामभूषितम् ।

भक्षमाणं महामांसं श्रीहेरुकं नमाम्यहम् ॥ इति ।

ततो दिग्देव्यः स्फुरणयोगेन बुद्धडाकिन्यामन्तर्भवेयुः ।
ततोऽस्याः शिरसि हृदि नाभौ गुह्ये ऊर्वोश्च यथाक्रमं ॐ हूँ स्वा
आ हा इत्येतान् विभाव्य तैरन्योन्यावधिस्फुरद्भिरस्याः शरीरमभिव्याप्य
तया ह्रीःकारजरक्तकमलया अकारजमुक्ताकर्णिकया तद्वद्
हूँकारजकुलिश ॐकारजमणिः प्रारभेत रतिमनुरागं यामीत्यनेन
मन्त्रेण । ततो मणिद्वयरश्मिचोदितास्तथागता आगत्य मुखे प्रविश्य
विलीय कमलदले पतेयुः । तत् पञ्चज्ञानामृतं जिह्वाग्रललितेन
गृह्यमाणं चिन्तयेदिति ।

श्रीमण्डलराजाग्रीनाम द्वितीयः समाधिः ।

ततो भगवच्चोदिता बुद्धडाकिन्यादयः पञ्चभगवत्काय-
मेघस्फुरणैः सत्त्वानामर्थं यथाक्रमम् आदर्शज्ञानं सुविशुद्धधर्मधातुज्ञानं
समताज्ञानं प्रत्यवेक्षणाज्ञानं कृत्यानुष्ठानज्ञानं महावज्रधरपदं चोत्पाद्य
स्वकायमेघान् मूलकाये संहरेयुरिति ।

कर्मराजाग्रीनाम तृतीयः समाधिः ।

यदि पुनर्योगी चित्तं स्थिरीकर्तुमिच्छेत्, सर्वसमाधीनामग्र-
निष्पत्तये, तदा समासतः समाधित्रयं विभाव्य नाभिकमलकर्णिकायां
रविसोमसम्पुटप्रान्तेषु निःसन्धि ध्यात्वा तन्मध्ये सर्षपसूक्ष्मसित-
स्वच्छज्ञानं बिन्दुरूपं महासुखमयं वीरं विचिन्त्य तद्रश्मिरेखां
मृणालतन्तुनिभां चन्द्रमध्येन निर्गत्य सम्पुटं तिर्य्यक् त्रिभिर्वेष्टैः
संयम्य स्थितां दृष्ट्वा चन्द्रोपरि स्थितेषु त्रिषु वेष्टार्धेषु ग्रथितान्
प्रत्येकं षोडश वर्णान् पश्येत् । उक्तं हि संवरोत्तरे—

ककारादिदकारान्तं ङञवर्जं निवेशयेत् ।

धकारादिहकारान्तम् आलिद्वयं समालिखेत् ।

मध्यस्थेन त्वकारालिर्न्यस्तव्यः शशिमण्डले ॥ इति ।

इहाप्युक्तम्—“दिव्यमक्षरपङ्क्तिभिः” (१.२६) इति । एवं
नाभिमध्ये कमलकर्णिकारविसोमसंपुटगर्भे वीरं भावयन् भावना-
परिपाकमधिमुच्य तस्मादेव द्वितीयसूक्ष्मरेखाज्ज्वलितैकज्वालावदव-
स्थितां पश्येत् । तस्याः प्रभावे(ण) स्रवदमृतपूरप्लावितो वीरः सा च
रश्मिरेखा सितीभवेत् । ततो वीरे नियमितचित्तस्तं पश्येत्, यावत्
चेतसः स्थैर्यलाभं निमित्तैरुपलक्षयेत् । उपलक्षिते स्थैर्ये तस्या
रश्मिरेखायाः स्फुटमालोकमनन्तं विश्वमवभासयन्तं विचिन्त्य सर्वं
करतलामलकवत् पश्येत्, सर्वसमाधीश्चाशु निष्पादयेत् ।

इति बिन्दुयोगः ।

जप्तविद्यस्य सिद्धिरिति जप उच्यते । तथैव षड्देवताचक्रं योगी नाभिकमलकर्णिकावस्थितरविसोमसम्पुटगर्भे चिरं विचिन्त्य तथैव च तद्रश्मिरेख्या वर्णावलीत्रयग्रथितया वेषटत्रयसंयुते मन्त्रं जपेत् । इह तन्त्रे अ(त्र्य)क्षरा मन्त्राः । तत्र भगवतो मन्त्रः, ॐ हूँ ह्रूं । बुद्धडाकिन्यादीनां यथाक्रमम्— ॐ ॐ ह्रूं, ॐ ह्रूं ह्रूं, ॐ स्वा ह्रूं, ॐ आ ह्रूं, ॐ हा ह्रूं । कथं जपेत् ? संपुटगर्भे जप्यं बीजाक्षरं विन्यस्य तच्छीर्षे वीरमुत्थाप्य ॐकारमुच्चारयन् वी(वि)राट्-रश्मिरेखामुच्छ्वासवायुना सहोत्थाप्य तयावभास्य जगद् बुद्धमयं कुर्यात् । बीजाक्षरमुच्चारयन् तेषु सर्वबुद्धेषु स्वदेवतास्वभावतामधि-मुञ्चेत् । अन्तः[] ह्रूंकारं उच्चारयन् निश्वासवायुना समाकृष्य तद्बुद्धमयं जगद् वीरे संहरेत् । एवं पुनः पुनः कुर्यात्, यावत् खेदो न भवति । सति खेदे विश्रम्य सर्वमिदं कुशलमनुत्तरायै सम्यक्सम्बोधयेऽभिमतफलसिद्धये च परिणम्य पूर्ववत् पूजां कृत्वा स्वहृद्बीजाक्षरे मण्डलमन्तर्भाव्य, तत उत्थाय स्वदेवतात्मकमात्मान-मधिमुच्य सर्वं कुर्वीत । सर्वं च भोज्यं पञ्चभिर्बीजैः पञ्चज्ञानामृतमयं कृत्वा स्वहृदये च देवताचक्रमधिमुच्य विचिन्त्य च तज्जिह्वासु तदमृतं जुहुयात् । स्नानं कुर्वन् देवताभिषेकविधिं ध्यायात् ।

मध्याह्नसायाह्नसन्ध्योस्तु मण्डलगृहं प्रविश्य स्वहृद्बीजरश्मिभि-राधारमण्डलं निर्माय [तस्मा]देव बीजाच्चतस्रो योगिनीः क्रमेण संस्फार्य यथास्थानं निवेश्य पूर्ववदभिषेकादिकं सर्वविधिमनुष्ठाय मण्डलमन्तर्भाव्य तत उत्थाय पूर्ववत् समाहितयोगं कुर्यात् ।

अर्धरात्रसन्ध्यायां त्वयं विशेषः— संपूज्यार्घ्यं दत्त्वा ॐ
वज्र मुरिति ज्ञानमण्डलमुत्सृज्य स्वज्ञानबीजे समयमण्डलमन्तर्भाव्य,
निराभासं सम्बोधिचित्तमधिमुच्य सुप्यात् । एवं दिनान्तरेष्वपि
देवीसङ्गीतिचोदनोत्थापितः सर्वं पूर्ववत् कुर्यात् । एवं प्रत्यहं यावत्
सिद्धिनिमित्तानि लभते । तत्र मण्डलेश्वरस्य मन्त्रो लक्षजापेन
सिद्ध्यति, शेषाणामयुतजापेन । मालामन्त्राश्च तन्त्रान्तरादानेतव्याः ।
तान् स्वहृत्सूर्ये हृच्चन्द्रे वा यथायोगं मण्डलीकृत्य प्रदीप-
मालावज्ज्वलतश्चेतसाऽभिलिख्य मनसा वाचयन्निव जपेदिति ।

ब्रुवतैवं महामायासाधनं यन्मयार्जितम् ।

कुशलं तेन बुद्धः स्यां वशी विश्वार्थसाधने ॥

॥ महामायासाधनं समाप्तम् ॥

महामायासाधनोपायिका

कुक्कुरीपादानाम्

नमो वज्रडाकाय ।

प्रथमं मुखशौचादिकं कृत्वा मृदुविष्टरोपविष्टः स्वहृदि सूर्यमण्डले हुंकारबीजं दृष्ट्वा पुरतः करुणाचलवज्रं वक्ष्यमाणक-
वर्णभुजायुधं विचिन्त्य पूजापापदेशनापुण्यानुमोदनापुण्यपरिणामना-
त्रिशरणगमनादिप्रणिधिं च कृत्वा स्वकायवाक्चित्ते नामाक्षरं भावयेत् ।
तच्च नामाक्षरम्— हे इति हेत्वपगताः सर्वधर्माः, ह इति
हान्युत्पादिताः सर्वधर्माः, ए इति पर्येषणविमुक्ताः सर्वधर्माः, रु इति
प्रतिश्रुत्कोपमाः सर्वधर्माः, र इति रतिसमायुक्ताः सर्वधर्माः, उ इति
उत्पादव्ययधर्मिणः सर्वधर्माः, क इति सर्वसौख्यसमायुक्ताः सर्वधर्माः,
अ इति अकारो मुखं सर्वधर्माणामाद्यनुत्पन्नत्वात् । इति कृत्वा
शून्यतां विभाव्य मन्त्रमुच्चारयेत्— ॐ शून्यताज्ञानवज्रस्वभावा-
त्मकोऽहम् । हुंकारेण विघ्नमुत्सार्य वज्रपञ्जरं विभाव्य
श्मशानाष्टकमध्ये रक्तचतुर्दलकमलपद्मवरटकसूर्यमण्डले हुंकारबीजं
दृष्ट्वा मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षास्वभावात्मिकाश्चतुर्देव्यः सञ्चोदयन्ति
श्रीवज्रगीत्या अभ्यन्तरसाधने—

हले सहि विअसिअ कमलु पबोहिउ वज्जे ।

अललललहो महासुहेण आरोहिउ नृत्ये ॥

रविकिरणेण पफुल्लिअ कमलु महासुहेण ।

अललललहो महासुणेह आरोहिउ नृत्ये ॥

[वज्रडाकिनीनृत्येन वज्रसत्त्वं निवेशयेत् ॥]

इति गीतिसमनन्तरं मायाबद्धवस्तुसंवित्त्या मनसा हुँकारोद्धृतं करुणाचलवज्रं नीलपीतसितश्यामचतुर्मुखं चतुर्भुजं दक्षिणे भुजे कपालशरधरं वामे खट्वाङ्गधनुर्धरं रौद्रासनस्थं त्रिनेत्रं सार्द्रमुण्ड-
स्रग्दाममालिनं कपालमालाभिः शिरसि भूषितम् अस्थ्यलङ्कारविभूषितम् ईषद्वंष्ट्राकरालवदनं पिङ्गलोर्ध्वकेशम् काये चीकारं पीतं चक्षुषोः
ॐकारं सितं श्रोत्रयोः हुँकारं रक्तं नासिकायां खकारं सितं कण्ठे आःकारं सितं हृदये रेफं रक्तं षडङ्गन्यासलक्षितं स्वाभप्रज्ञालिङ्गितं
व्योमावकाशिनं वज्रधराविशेष(भिषे)किनं कायवाक्चित्ताधिष्ठितं सुविशुद्धधर्मधातुज्ञानस्वभावमात्मानं विभाव्य तत्र पूर्वदले वज्रडाकिनी
नीलवर्णा नीलपीतरक्तश्यामचतुर्मुखा चतुर्भुजा वामभुजे खट्वाङ्गघण्टां दक्षिणे वज्रकपालहस्ता पृथिवीधात्वाददर्शज्ञानस्वभावा, दक्षिणदले
रत्नडाकिनी पीतवर्णा पीतनीलरक्तश्यामचतुर्मुखा चतुर्भुजा वामभुजे पताकां कञ्चुकं च दक्षिणे त्रिशूलरत्नहस्ता अब्धातुसमताज्ञानस्वभावा,
पश्चिमदले पद्मडाकिनी सितारुणवर्णा रक्तपीतनीलश्यामचतुर्मुखा चतुर्भुजा वामभुजे धनुः कपालं दक्षिणे शरविश्वपद्महस्ता तेजोधातु-
प्रत्यवेक्षणाज्ञानस्वभावा, उत्तरदले विश्वडाकिनी श्यामवर्णा श्यामपीत-
रक्तनीलचतुर्मुखा चतुर्भुजा वामभुजे पाशकपालं दक्षिणे खट्वाङ्ग-
डमरुहस्ता वायुधातुकृत्यानुष्ठानस्वभावा । देव्यः सर्वा रौद्रासनस्थाः कपालमालाभिः शिरसि विभूषिताः सार्द्रमुण्डस्रग्दाममालिन्यस्त्रिनेत्रा
ईषद्वंष्ट्राकरालवदना ज्वलितोर्ध्वपिङ्गलकेशाः स्फुरद्रश्मिमालिन्यः । एवं चतुर्देवीसमावृतमात्मानं करुणाचलवज्रं ध्यात्वा शिरसि हृदि नाभौ
गुह्ये वायुमाहेन्द्रवरुणाग्निमण्डलेषु यथोपदेशं विभाव्य नपुंसकजापं कुर्याद् मन्त्री । खिन्ने सति मन्त्रजापं कृत्वा ॐ आः ह्रीं हुं फट्
एवं भवसमसर्वभावस्वभावमन्त्रसंस्थानधर्मात्मा योगी सर्वविषयादि-
कृत्यं कुर्यात् प्राकृतकल्पमुक्तये इति ।

॥ महामायासाधनोपायिका समाप्ता ॥

कृतिरियं कुक्कुरिपादानामिति ।

पुनरुद्धत-महामायातन्त्र

गद्य-पद्यानुक्रमणी

अकनिष्ठभुवन	२.१७	गङ्गावालुसमान् क्षेत्रान्	३.१५
अक्षरं मन्त्ररूपं च	१.१६	गङ्गावालुसमान् बुद्धान्	३.१४
अङ्गुष्ठानामिकाद्वारे	२.२१	गुह्यकानामियं माता	१.७
अथातो.....क्षरं वक्ष्यामि	२.१	गोपितं चान्यतन्त्रेषु	३.४
अथातो.....तन्त्रं प्रवक्ष्ये	१.३	चक्षुर्द्वयं च कर्णौ च	२.१५
अथात्र साधनं येन	३.७	चतुर्देवीसमायुक्तं	३.७
अथापरान् सम्प्रवक्ष्ये	३.१	चतुर्भुजं चतुर्मुखं	२.१३
अन्तर्धानादद्दृश्योऽसौ	३.१३	चिकारेण समायुक्तं	२.१२
अन्येषु तन्त्रेषु च नोक्तं	३.६	चित्तमचित्तं चिद्रूपं	१.१९
अमृतात्मकं संवृत्तं	२.२१	ज्वलितोर्ध्वमुखी रेखा	१.२१
अष्टमितश्चतुर्दशी	३.३	तत्त्वानुत्तरसंसिद्ध	३.१६
अष्टान्तेन च संयुक्तं	२.३	तत्रोपायाः प्रगीयन्ते	१.११
अकाराक्षरसंयुक्ताः	२.१०	तथा योगी साधयते	३.१२
अकृष्यन्ते सपत्नीका	२.९	तदहं कथयिष्यामि	१.२५
आदिमन्त्रेण संयुक्तं	३.१२	तदहं त्वां महामायां	१.२६
आदिमाक्षरयोगेन	२.२	तन्त्रं गृहे यस्य भवेत्	३.१८
अलिकालीसमां कृत्वा	१.२०	तन्त्राणामागमः सोऽयं	१.३४
इन्द्रवर्णसम्प्रयुक्ता	२.७	तस्माद् गुप्तमिदं ज्ञानं	२.१८
उत्तरे रक्तवर्णं तु	३.९	यं वीरं कथयिष्यामि	१.२०
उत्पत्तिः सर्वदेवानां	१.४	तानि सिद्धार्यमाना वै	३.४
एवं योगपरो नित्यं	२.६	तासां परमियं गुह्यं	१.५
कपालमथ खट्वाङ्गं	३.११	त्रिनेत्रं सुन्दरं ध्यायेत्	३.९
कपालहस्तमात्मानं	२.११	त्रिविधेन तु ज्ञानेन	२.५
कायवाक्चित्तवज्रं तं	३.११	त्रिसंयोगभावनया	२.१०
खेकारसंयुतं रक्तं	२.११	त्रैलोक्यसाधनी विद्या	१.७

दक्षिणे पीतवर्णं च	३.८	प्रातिहार्यं दर्शयति	१.३२
ददाति च महासिद्धिं	१.२९	बुद्ध्यन्ति हि संबुद्धा	२.१९
दन्तिनो नुस्तुरङ्गस्य	३.२	ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च	२.९
दिव्यं चक्षुश्च ऋद्धिं च	१.३१	भक्षयेन्निर्विकल्पेन	२.२०
देवदानवगन्धर्वा	१.८	भावयन्ति नवद्वारो	२.२०
द्रव्यगणान् भक्ष्यमाणान्	३.१	भावयन्ति हि सर्वात्मस्थितं	३.१६
द्रव्याणि वै पञ्च तथा	३.६	मनोजल्पनमात्रेण	१.३३
द्वितीयाक्षरप्रयुक्तया	२.८	मन्त्रसंस्थानधर्मात्मा	२.५
ध्यात्वात्मानं हयमुखं	२.१२	यहापलसमायुक्तं	३.३
ध्यायन्त एकरूपाणि	२.१९	महामायाप्रयोगैश्च	१.२३
न तत्र भेगा न जरा	३.१८	महामाया महारौद्रा	१.५
न तस्य व्रतादिनियमो	२.४	महामांसं योगिनीभि	१.३०
नमः श्रीवज्रडाकिन्यै	१.१	महायुश्च महावीर्यं	१.३१
न व्रतं न तपो दुःसह	१.१८	महासमयसिद्धिस्तु	१.२३
नानाविधा उपायाश्च	३.१७	मोहनं स्तम्भनं चैव	१.१३
नाभिमध्ये स्थितो वीरः	१.१९	यदि सर्वे बुद्ध्यन्ति	२.१८
निर्व्याधिर्त्वं च भवति	१.१६	यद्यदिन्द्रियमार्गत्वं	१.२२
निःश्वासं कुरुते योगी	२.३	यया विज्ञानमात्रेण	१.८
नीलोत्पलप्रभं पूर्वं	३.८	यया व्याप्तमिदं सर्वं	१.४
पञ्चज्ञानत्रिकायाय	१.१	यया व्याप्तं च सकलं	१.६
पञ्चपूजोपहारैश्च	१.२४	यावत् तथा चाष्टमित	३.५
पठन्ति [ते] चिन्तयन्ति	१.१७	याश्चैता वज्रडाकिन्यः	१.२
पठिता कुरुते विद्या	१.१७	येन चिन्तितमात्रेण	१.२७
परपुरादिकार्याणि	१.१४	येन चिन्तितमात्रेण	२.२
परमाहितयोगेन	१.२२	येन ज्ञानेन सिद्धेन	१.२५
पूर्वं देवी...कपालं च	३.१०	येन भक्षणमात्रेण	३.२
प्रकृतिप्रभास्वरा धर्मा	१.१०	योगा योगेश्वरा विद्या	१.१३
प्राणायामं सुयन्त्रित्वा	२.१६	योगाश्च सिद्धयोगाश्च	३.१३

योगिनी योगमाता च	१.११	शुक्ररूपेण स्रवति	१.२१
रकारेण समायुक्तं	२.१३	षडक्षरसमायुक्तं	२.१४
राक्षसाश्च पिशाचाश्च	१.९	स गच्छेद् विपुलमायु	१.३२
रूपाणि मुद्राणि च	३.१७	सत्त्वार्थं कुरुते सदा	१.२९
वज्रसत्त्वसमः सोऽपि	२.६	सप्तदिनानि जम्बूके	३.४
वश्याकर्षणकर्माणि	१.१४	सर्वकामोपभोगैश्च	१.२७
वश्यानि सर्वभूतानि	१.१०	सर्वमपि च त्रेलोक्यं	२.८
विक्रीडन् हि महायोगी	१.२८	सर्वे ततो भावयन्ति	२.१७
विच्छिद्य लोककार्येषु	१.२	स विद्यया सम्पुटितं	२.७
विद्याधरचक्रवर्तित्वं	१.१५	सिद्धेन्द्रादिभिर्ज्ञातव्यं	१.२४
विद्याधरा गुह्यकाश्च	१.९	सिद्ध्यत्यशेषनिःशेषं	१.१२
विद्ये ते सदृशी नास्ति	१.३४	सिद्ध्यन्ति वज्रयोगिन्यो	२.१५
विद्येश्वरी महर्हिदा	१.३३	सिंहविक्रीडितां मुद्रां	२.१६
विद्वेषणं जम्भनं च	१.१५	सुखहर्षैश्च सिद्ध्यन्ति	१.१८
विभाव्यं कुण्डमात्मानं	२.१४	सैषा संहरते विश्वं	१.६
विभिन्नाकाररूपेण	१.२८	स्वहस्तास्थामलकवत्	३.१५
वोरं महायोगिनां हि	१.२६	हरति सर्वसिद्धानां	३.१४
शिवाङ्गमध्ये त्वय	३.५	हरते सर्वबुद्धानां	१.१२
शुक्रमाहृत्य मद्यं च	१.३०	होमयागादिकर्माणि	२.४

टीकाकारोद्धृतवचनानुक्रमणी

अक्षयमव्ययं सूक्ष्मं	१८, व. त.
अतिलघु महाभाषा	१,
अविकल्पाशयो भूत्वा	१५, अ. प्र. पा.
आकाशघातुमध्यस्थं	१८, गु. स. ६ .८-९
ॐकारं ज्ञानहृदयम्	२६, गु. स. ११. २
ॐकारं सर्वमन्त्राणां	४०, गु. स. १६. ३८
ककारादिदकारान्तं	१७, सं. त.
कायाः कृता येन जगद्	१,
खमध्ये शशिसंकाशं	१८, व. त.
चित्तमात्रमिदं यदुत	८, द. भू. ३२
जिनानामात्मैकः कुलिश	४४
डे वैहायसगमने	३, घा. पा. १६८ ध्वा.
तन्मूर्तिमुद्रानुसृतैक	१,
तिष्ठते निश्चलं विद्या	१८, व. त.
धकारादिक्षकारान्त	१७, सं. त.
ध्यायते परमं तत्त्व	१८, व. त.
नाभिमध्ये स्थितो देवः	१८, व. त.
नासाग्रे सर्पपं चिन्नेत्	१८, गु. स. ६. ८-९
निर्विकल्पसुखं तस्माद्	१६, अ. प्र. पा.
प्रतिपदमतस्तत्र	१,
प्रशान्तमचलं श्रेष्ठं	१६, अ. प्र. पा.
बाह्यो न विद्यते ह्यर्थो	८, लं. सू. १०. १५४-१५५
बुद्धबिम्बं विभावित्वा	१८, गु. स. ६. ८-९
भावयेज्ज्ञानपदं रम्यं	१८, गु. स. ६. ८-९
मध्यस्था तु अकाराली	१७, सं. त.
महामायातन्त्रे विवृत(ति)	४४

रुचितो बहवः स्वयं	१,
वासनालुठितं चित्तं	८, लं. सू. १०. १५४-१५५
विकल्पदुर्गं व्यतीत्य	१५, अ. प्र. धा.
विविधः सुगतेन बोधि	१,
सर्वाकाशचर(री) सिद्धि	३,
स्रवते शुक्ररूपेण	१८; य. त.
हूकारं कायधाक्चित्तं	२६, गु. स. ११. ३

टीकाधृत-ग्रन्थग्रन्थकार-मतमतान्तर सूची

अन्यतन्त्रम्	१२, ३६, ३७
अन्यतः	१९
अपरे	२९
अविकल्पप्रवेशा धारणी	१५
उक्तम्	३
केचित्	१२, २९
कैश्चित्	१९
गुह्यसमाजः	१८, २६, ४०
तत्रैव	२६
दशभूमिकम्	८
योगतन्त्रम्	४२
योगिनीतन्त्र	४४
लङ्कावतारः	८
वज्रशेखरः	२
वज्रामृतम्	१८
संवरोत्तरम्	१७
सीताहरणम्	४

सङ्केत सूची

अ. प्र. घा.

अविकल्पप्रवेशा धारणी

गु. स.

गुह्यसमाज

द. भू.

दशभूमिकशास्त्र

धा. पा.

धातु पाठः

ल. सू.

लङ्कावतारसूत्र

व. त.

वज्रामृततन्त्र

सं. त.

संवरोत्तरतन्त्र

*

विशिष्टशब्दानुक्रमणी

अकनिष्ठ	३२	अपर	२९
अकनिष्ठ भुवन	३२	अप्रपञ्चज्ञान	३
अक्षय	१८	अव्यक्ष	१४
अक्षर	१२, २१, २८, २९	अभिज्ञा	२३, ४१
अक्षरयोग	२५	अभिधायक	४
अक्षराक्षर	२९	अभेद्य	१६
अक्षोभ्य	३४	अभ्र	८
अकुश	२८, ३०	अमर	१२
अचर	४, ३२	अमृत	१७, १८, १९, ३५
अचल	१६	अमृतपान	२३
अचित्त	१४	अमृतात्मक	३४
अच्छेद्य	१६	अमोघ	२४, ३४
अजर	१२	अर्धकाली	१७
अण्ड	४	अविकल्प	१५
अद्वय	३३	अविकल्पाशय	१६
अधिमोक्ष	१९	अविद्या	५
अनन्त	९	अव्यय	१८
अनशन	१३	अव्याहत	९
अनादि	१०	अशनि	३
अनादिनिधन	२, १९	अष्टदल	३८
अनामिका	३४	असुर	७
अनाविल	७, ८	असेचनक	२३
अनाहत	१८	आकर्षण	११, १३
अनुग्रह	१२	आकाश	८
अनुत्तर	४१, ४२	आकाशगमन	३, ११
अनुशासनी प्रातिहार्य	२३	आकाशघातु	१८
अन्तर्धान	११, ४१	आकृष्टि	२९, ३०, ३१
अन्यतन्त्र	३६	आगन्तुक	२, ८, १५

आगम	२४	ऋद्धिप्रातिहार्य	२३
आदर्शज्ञान	९	औदारिक	५
आदिमन्त्र	४०	कन्या	४१
आदियोग	२८	कपाल	३०, ३९, ४०, ४३
आदिशुद्ध	७, ८	कमल	२०, २५, ३८
आदेशनाप्रातिहार्य	२३	कमलोदर	२०
आनन्तर्य	२	कर्णिका	१४, २०, २५, ३८, ४०
आर्यलङ्कावतार	८	कर्णिकागूढगोचर	१४, १८
आलि	२८	कर्म	१२, १८, २०
आलिकाली	१६, १८	कर्मकुल	४
आलित्रय	१७, २२	कर्मप्रसर	४३
आलिद्वय	१७	काय	२२
आवरण	५, ८	कामेश्वर	२९
आवरणक्षय	९	काय	१, ८, ९, २९, ३०, ४०, ४१
आश्रय	९	कायचित्त	४२
आस्रवक्षयज्ञान	२३	कायद्वय	४
इन्द्रगोप	२८	कायवाक्चित्तसमता	२६
इन्द्रजाल	११	किन्नर	७
इन्द्रिय	१९	कुक्कुर	३६
इन्द्रियज्ञान	४२	कुङ्कुम	२८
ईश्वरी	३, ४, ५	कुल	१, ४, ५, १०
उच्चाटन	११	कुलडाकिनी	४
उच्छ्वास	२५, २६, ३२	कुलनायक	१
उत्कूल	३८	कुलाधिप	५
उत्पत्ति	४	कुलिश	४४
उपवास	१३	कुलिशाब्ज	४२
उपाय	२, ३, ९, १०, १४, २४, ४२, ४३	कुलेश	५, १०, ३८
उपायतन्त्र	२, ३, ७	कूटागार	३८
ऋद्धि	२३	कृत्यानुष्ठानज्ञान	९

केचित्	२९	चक्रचतुष्टय	१९
केवल्य	९	चक्रवर्ती	१२
क्षिप्रतर	३	चक्षुर्वज्र	४१
खट्वाक्ष	३९, ४०, ४२	चक्षुर्विज्ञान	२२
खड्ग	३९	चण्डाली	१९
खङ्गाञ्जन	२२	चतुर्दल	३८
ख्याति	१४	चतुर्देवी	३२, ३८
गन्धर्व	७	चतुर्द्वीप	४१
गम्भीरमहायान	१६	चतुर्विन्दु	२०
गुणवती	१, ४४	चतुर्भुज	३९, ४०
गुप्त	३३	चतुर्वक्त्र	३९, ४०
गुप्ति	१४	चन्द्र	१७
गुलिका	२०, ३६	चन्द्रमण्डल	१८
गुह्य	४, ५, १०, २१, २५	चर	४, ३२
गुह्यक	६, ७	चराचर	४
गुह्यपूजा	२१	चित्	१४
गुह्यसमाज	४०	चित्त	२, ८, ९, १३, १४, १८, २९, ३०, ३८, ४०, ४१
गुह्याक्षर	२५, २९	चित्तमात्र	८, १४, २६
गुह्यातिगुह्य	४, ५	चित्तमात्रता	१८, २६
गुह्येश्वरी	२, ३	चित्तवज्र	२९
गूढ	१४	चित्तविशेष	८
गूढगोचर	१४	चित्तसन्तान	९
गूढभातु	३६	चित्ताख्य	४१, ४२
गूहन	१६	चिद्रूप	१४
गोचर	१४, ३३	चिद्रूपता	१८
ग्राहक	१४, १५, १८, ३४	चिन्तामणि	३४
ग्राह्य	१४, १५, १८, ३४	चिह्न	४२
घण्टा	६, ३९		
चक्र	३, १९, ४३		

चुम्बन	२०	तथागतवज्रपथकुल	२४
चेतन	१४	तन्त्र	१, २, ३, ४, ५, १२, १९, २४, २६,
जप	२५, २७, २८		२९, ३७, ३८, ४३, ४४
जम्बु	३१	तन्त्रान्तर	२, २७
जम्बुक	३९	तप	१३
जम्बुक	३६, ३७	तम	८
जम्भन	१२	ताथागत	४, २२
जलज	७	तिलक	२६
जाप	२१, २२, २४, २६	तीव्रराग	१३
जिन	१५, ४४	तुङ्गिन	८
जिनात्मज	१६	त्रिकल्प	२
ज्ञान	१, ९, १४, १५, १८, २७, ४२	त्रिकाय	१
ज्ञानुडाकिनी	२८	त्रिचैल	१३
ज्ञानतत्त्व	३३	त्रिज्ञान	९
ज्ञानत्रय	९	त्रिनेत्र	३९, ४०
ज्ञानपद	१८	त्रिभुवन	३२
ज्ञानबिन्दु	२०	त्रिवज्र	२६
ज्ञानमात्रता	२६	त्रिविधतन्त्र	२, ३
ज्ञानरस	१७	त्रिसंयोग	२९
ज्ञानाक्षर	२९	त्रिस्नान	१३
ज्ञानान्तर	९	त्रैषातुक	८, ९, १०
ज्ञेय	१४, १५, १८	त्रैलोक्य	६, ७, २२
झमरु	३९	त्रैलोक्यसाधन	२३
डाकिनी	१, ३, ५, २०, ३१, ३८	दर्शन	२३
तत्त्व	१, १२, १८, २७, ३३, ४१, ४२	दशभूमिक	८
तथता	९, २२	दानव	७
तथागत	९, १०, ३३	दिव्य	२१
तथागतकुल	३	दिव्यचक्षु	४१
		दुर्ग	१५, १६

देव	४,५,७,१८,२१	निग्रह	१२
देवकन्या	४१	निदान	२
देवता	२०,२५	निषान	९
देवतातत्त्व	२५	निमित्त	९,१८,२४
देवतामूर्ति	२५,२७	नियम	२७
देवताराधन	२१	निराभास	२६
देवी	३८,३९,४३	निरुत्तर	१४
देशना	३	निरुत्तरज्ञान	६
द्रव्य	३६,३७,४०,४२,४३	निरुत्तरफल	२
द्वयशून्यता	५	निर्देश	२४,३५
धनु	३९,४०	निर्मल	७
धर्म	७,८,९,१२,२७	निर्माणकाय	२,४,९,१०
धर्मकाय	२,४,६,९	निर्विकल्प	१६,३४
धर्मता	५	निर्व्याधि	१२
धर्मधातु	१९	निष्कल्प	१५,१६
धर्ममण्डल	९	निष्कलेश	१६
धर्मयोग	२८	निष्पन्द	१९
धर्मात्मा	२७	निष्पन्दीकरण	११
धारणा	२७	निष्प्रपञ्च	१९
धूम	८	निष्प्रपञ्चज्ञान	१५,१६
धृतराष्ट्र	७	निःश्वास	२६,२९,३२
ध्यान	१८	निःस्वभाव	३४
ध्वज	६	नैरुक्त	४
नर	७	न्यास	४२
नवद्वार	३४	पञ्चकामगुण	१४,२०
नाटक	४१,४२	पञ्चकुल	३,५
नाभि	१८,२०,२५	पञ्चकुलेश	३८
नाभिकमल	१४	पञ्चगुह्य	३,५
नाभिपथ	१४	पञ्चज्ञान	१,७,९,१०,३७

पञ्चज्ञानामृत	३६	पृथग्जन	१५
पञ्चडाकिनी	५, १०, ३१	प्रकाश	१४
पञ्चपल	३७	प्रकाशमात्रता	३४
पञ्चपूजोपहार	२०	प्रकृतिप्रभास्वर	२, ७, ८, १०
पञ्चविज्ञान	१३	प्रज्ञा	१३, १४, १७
पञ्चामृत	३६	प्रज्ञाङ्ग	२४
पञ्चोपहार	१४	प्रज्ञोपाय	१३, १४
पताका	३९	प्रणव	२६, २८, ४०
पद्य	३८	प्रतिबिम्ब	९
पद्यकुल	४	प्रत्यवेक्षणाज्ञान	९
पद्यडाकिनी	४, ३९	प्रत्येकबुद्ध	४२
परचित्तज्ञान	२३, ४२	प्रपञ्च	१५
परपुर	११	प्रबन्ध	२, ३
परमगुप्त(गुह्य)	२, ३, ४, ५	प्रभासनशील	७
परमरहस्य	५	प्रभास्वर	३०
परिकल्पित	२	प्रमाण	३७
परिनिष्पत्ति	१३	प्रलय	५
परिभोग	१४	प्रशान्त	१६
परिशुद्ध	४, ६	प्राणवायु	२७
पाताल	३२	प्राणायाम	३२
पातालगमन	१२	प्रातिहार्य	२३
पादाकर्षण	११	प्रेत	७
पारमार्थिक	१५	फल	२, ९, २१, ३६
पारमितानय	१६	फलतन्त्र	२, ३, ७
पाश	२८, ३०, ३९	बल	२३
पिण्ड	३३, ३४	बाण	३९, ४०
पिण्डाकर्षण	११	बाल	८
पिण्डाकृष्टि	२९	बाह्यकर्म	२७
पिशाच	७	बाह्यडाकिनी	९

बाह्यपूजा	२१	भाजनलोक	४
बाह्यस्त्री	१४	भाव	२६
बिन्दु	१७, १८, २८, ३०	भावना	२१, ४२
बिन्दुभात्र	३४	भावनामयी	१३, १४
बिन्दुयोग	३५	भावाभाव	२६
बिलप्रवेश	१२	भूत	७
बीज	२	भूतसंहारकारिणी	५
बीजद्वय	३८	मकर	७
बीजाक्षर	२६, २९	मणि	३८
बुद्ध	५, १०, ११, १२, २२, २८, ३८, ४१	मणिकुल	४
बुद्धक्षेत्र	४, ६, ४१	मण्डल	३, २०, ३८, ४३
बुद्धज्ञान	४२	मण्डलाधिपति	२०
बुद्धडाकिनी	४, २०, २१, २८, ४०	मद्य	२२, ३०
बुद्धबिम्ब	१८, ३८	मद्याकर्षण	२२
बुद्धमय	१९	मध्यबिन्दु	२०
बुद्धात्म	३४	मनोजल्प	३३
बोधि	२, ८, ९, १०, ४१	मनोजल्पन	२३
बोधिचित्त	२, १५, १६, ३८	मनोबिन्दु	३८
बोधिप्रप	१०	मनोविज्ञान	१३, ४२
बोधिमार्ग	१, ३	मन्त्र	२५, २७, २८
बोधिसत्त्व	२, १६, २२, ४२	मन्त्रजा	१२
बोधिसापन	३, १६	मन्त्रदेवता	२२
ब्रह्मचर्य	१३	मन्त्रमूर्ति	१३
ब्रह्मा	४, ५, २९	मन्त्रयान	३, १६
ब्रह्माण्ड	४	मन्त्ररूप	१२
भग	१८	मन्त्रार्थज्ञान	२७, २८
भगवत्	५, ३८	मल	८, ९, १५
भगवन्	५	मलवासना	८
भगवान्	४०	महर्द्धिक	७

महाकरुणा	९	महासिद्धि	२२
महाकल्प	२३	महासुख	१५, १७, २०
महागुलिका	२०	महासुखचक्र	१९
महागुलिकासाधन	२०	महेश्वर	६
महागुह्य	४३, ४४	महेश्वरी	५
महाडाकिनी	१४	महोदर	७
महातेज	२३	माता	६
महाधर्मदृष्टि	९	माया	१०
महापल	३६	मार	२९
महापिण्ड	२२	मारण	११
महाप्रभाव	४	मार्ग	३, १०
महाभाषा	१, ४, ५, ६, १०, ११, १२, १३, २०, २१, २४, ४३, ४४	मुक्तक	२
महामांस	२२	मुक्तावलि	१७
महामुद्रा	२५	मुद्रा	१, ३२, ३४, ४२
महामुद्रासिद्धि	१३, २१	मुद्राकार	१६, १८
महापैत्री	९	मूकीकरण	१२
महायान	१६	मूर्च्छा	११
महायु	२३	मूर्ति	१, ५, १२, १३, २७, २८, ३८
महायोगी	२१, २२	मूलमन्त्र	२८
महायोगेश्वरी	२५	मृणालतन्तु	१६
महारौद्रा	५	मोक्ष	४
महावज्रडाकिनी	४३	मोहन	११, १२
महावज्रधर	२	यक्ष	७
महाविद्या	२४, ३५	यन्त्र	२७
महाविद्याधर	१२	जाग	२७
महावीर्य	२३	योग	११, १२, १४, १८, १९, २०, २७, ३१, ३५, ४१
महासमय	२०	योगतन्त्र	४२
महासमयसिद्धि	२०	योगत्रय	२७

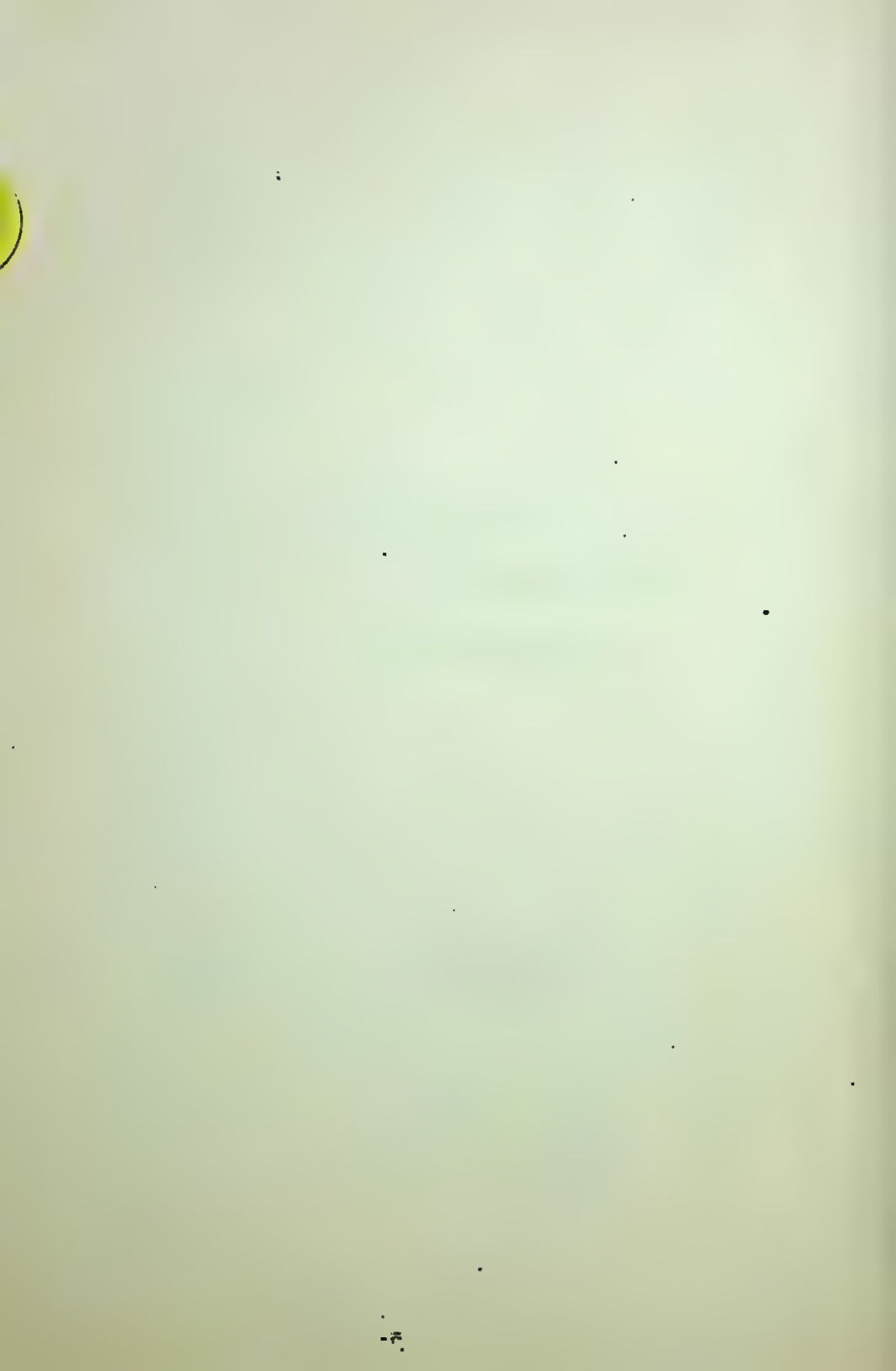
योगनिद्रा	३३, ३४	लोकधातु	९, ४१
योगमाता	९, १०	लोकेश	३४
योगमाया	७, १२	लोकोत्तर	७, १६, १९
योगसंवर	२०	लौकिक	१६
योगसिद्धि	२५	वक्त्र	३१
योगिनी	९, १०, २२, ३१	वज्र	३, ३१, ३८, ३९, ४०
योगिनीतन्त्र	४४	वज्रकुल	४, ६
योगी	२२, २३, २५, २८, ३२, ४०	वज्रग्रहण	३
योगेश्वर	११	वज्रचक्षु	४१
योगेश्वरी	२४, ३५	वज्रचित्त	४२
रक्तकमल	४०	वज्रडाकिनी	१, २, ३, ४, ५, २८, ३६, ३९, ४४
रक्तचित्त	३०	वज्रधर	१, ५, १८, ३८
रज	८	वज्रधातु	१०
रतिस्थान	२१	वज्रयोगिनी	२२, ३१
रत्न	३८, ३९	वज्रसत्त्व	१४, १८, २७
रत्नडाकिनी	४, ३९	वज्रालय	४१
रत्नपूजा	२१	वश्य	७, ११
रत्नेश	३४	वश्याकर्षणकर्ष	११
रविचन्द्र	१६	वाक्	९, २९, ३०, ४०, ४१
रविशक्ति	१४	वाक्चित्त	४२
रविसोमसंपुट	२०, २१, २८, ३२, ३५	वायुभक्ष	१४
रवीन्द्रसंपुट	२२	वासना	८, ९
रश्मि	२९	विकल्प	८, १५, १६, ३४
राक्षस	७	विज्ञान	१४, १५
राग	१७	विज्ञानमात्र	७, १२
राशित्रय	१०	विद्या	६, ७, ११, १२, १३, १८, २०, २१, २४
रुद्र	२९	विद्याक्षर	२८, ३९
लिङ्ग	१८	विद्याधर	६, ७, १२, २५, ४१
लोक	१, ४, १४, ३२, ४१	विद्यासिद्धि	१३

विद्येश्वरी	२३	आवक	४२
विद्वेषण	१२	श्रीगुह्यसमाज	२६
विशुद्धि	२, ९	श्रीवज्रशेखर	२
विश्व	१४, २६, ३८	श्रीवज्रामृत	१८
विश्वडाकिनी	४, ३९	श्रीसमाज	१८
विश्वपथ	३९	श्रीसंवत्सेर	१७
विष्णु	२९	श्रीहेरुक	२०, २१, २८, ३८, ४०
वीर	१४, १५, १६, १७, १८, १९, २१, २२, २५, २६, २८, २९, ३०, ३४, ३७, ३८	श्रीहेरुकयोग	३२
वीराख्य	१९, ३३	षट्सुख	३१
वीर्य	१४	षडक्षर	३१
वेदना	१३	षडङ्ग	४२
व्यञ्जन	२१, २२	षडङ्गन्यास	३१
व्याघ्र	७	सचराचर	१८, २२
व्रत	१३, २७	सत्त्व	७, ९
शक्र	७, ११	सत्त्वलोक	४
शशि	१८	सन्दर्भ	१५, १६
शशिमण्डल	१७	सपरिकर	३
शाश्वत	९, २१	सप्तलोक	३२
शिव	४१, ४२	सबिन्दुक	२६
शिवाङ्ग	३७	समण्डल	२०
शुक्र	१७, १८, २२, ३०	समता	५, २१, २६
शुचि	१	समताज्ञान	९
शुण्डा	२९	समतापति	२६
शुद्ध	८	समय	२०, ३६, ४०
शून्य	४४	समयद्रव्य	४०, ४२
शून्यतत्त्व	१८	समयवस्तु	४३
शून्यरूप	१८	समाधि	९, ११, १३, २५, २७
श्मशान	३८	समापति	११
		सम्यक्संबोधि	२

सर्वकाम	६	सुखसंवर	२०
सर्वज्ञ	९, ३६	सुगत	१
सर्वधर्मदर्शी	९	सुर	११
सर्वप्रपञ्च	१५, १८	सुराग्र	१०, ११
सर्वलोक	४	सुविशुद्धधर्मधातुज्ञान	९
सर्वाकार	९	सूक्ष्म	५, १८
सर्वाविरणक्षय	२	सूक्ष्मबिन्दु	१८, २०
सहज	१३, १५	सूक्ष्ममय	५
संपुट	१४, १६, १७, २१, २५, २९, ३०, ३७	सूक्ष्मयोग	१८
संबुद्ध	३३	सूक्ष्मरन्ध्र	१६
संभोग	२, ४, ९, १०	सृष्टि	५
संभोगकाय	९	सोमपान	२३
संवर	१३, २०, २१, ३१	स्तम्भन	११
संस्थान	२७, २८	स्थलज	७
संहरण	२८	स्वकुल	५
साधक	७, १३, १४	स्वदेवता	२६, ४२
साधकेश्वरी	७	स्वदेवताकार	१३
साधन	२, २०	स्वदेवतायोग	३१
सित	२०	स्वदेवतारूप	१३
सितबिन्दु	१७	स्वप्न	८
सिद्धयोग	४१	स्वयम्भू	७, ९
सिद्धार्थ	३६, ३७	स्वर	२१, २२
सिद्धि	२०, २४, ३४, ४०	स्वर्ग	३२
सिद्धेन्द्र	२०	हयमुख	३०
सीताहरणकाव्य	४	हीनसिद्धि	४३
सुख	१३, १४, १६	हेतुतन्त्र	२, ७
सुखतर	३	हेतुफलोपाय	३
सुखवर	३१	हेरुक	५, ६, ३१
		होम	२७

དཔལ་ལྷ་འཕུལ་ཆེན་པོའི་སྐུ་དང་དེའི་འབྲེལ་པ་
རིན་ཆེན་འཕྱང་གནས་ཞི་བས་མཛད་པའི་
ཡོན་ཏན་ལྡན་པ་དང་བཅས་པ།

[མེད་མཆོད་]



དཔལ་སྐྱུ་འཕུལ་ཆེན་མོའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ།

ངེས་པར་བསྟན་པ་དང་པོ།

༄༅། །ཉེ་གར་སྐད་དུ། སྒྲི་མདྲ་མཐུ་ཉན་རྒྱུ་མ། བོད་སྐད་དུ་དཔལ་
སྐྱུ་འཕུལ་ཆེན་མོ་ཞེས་བྱ་བའི་རྒྱུད་ཀྱི་རྒྱལ་པོ། དཔལ་རྩི་རྩེ་མཁའ་འགྲོལ་ཕྱག་
འཆལ་ལོ། །

དཔལ་ལྷན་རྩི་རྩེ་མཁའ་འགྲོལ་མ། །

མཁའ་འགྲོལ་མ་ཡི་འཁོར་ལོ་བསྐྱུ་པ། །

ཡི་གེས་ལྷ་དང་སྐྱུ་གསུམ་ཉིད། །

འགྲོ་བ་སྐྱོབ་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། །

དཔལ་སྐྱུ་འཕུལ་ཆེན་མོའི་འགྲོལ་པ་

ཡོན་ཏན་ལྷན་པ།

༄༅། །ཉེ་གར་སྐད་དུ། བུན་མཐུ་སྒྲི་མདྲ་མཐུ་ཉན་རྒྱུ་མ། བོད་སྐད་དུ།
དཔལ་སྐྱུ་འཕུལ་ཆེན་མོའི་འགྲོལ་པ་ཡོན་ཏན་ལྷན་པ། དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་
ཕྱག་འཆལ་ལོ། །དཔལ་རྩི་རྩེ་སེམས་དཔལ་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། །བཙུམ་ལྷན་

1. མེ་ སྒྲི་ མེད།

2. མེ་ (རྒྱུ) མེད།

3. མེ་ སྐྱུ་འཕུལ་ཆེན་པོ་

4. མེ་ འཁོར་ལོས་

5. རྒྱ་དཔེ་མེ་ དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། །མེད།

རྩི་སྟོང་དོ་རྩི་མཁའ་འགྲོ་མ། |
 ཀྱན་དུ་རྟོག་པའི་འཆིང་གཅོད་ཅིང་། |
 འཇིག་རྟེན་བྱ་བར་རབ་འཇུག་པ། |
 དེ་སྟོང་རྣམས་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ། 3 |

འདས་འཇིག་རྟེན་དབང་ཕྱག་ལ་ཕྱག་འཆལ་ལོ།¹ |
 བང་གིས་ཡོན་ཏན་²རྣམས་ཀྱི་དོན་ཕྱིར་རིགས་རྣམས་དང་། |
 ལྷ་མོ་རྣམས་དང་རིགས་ཀྱི་གཙོ་བོའི་སྐྱར་མཛད་ཅིང་། |
 སྐྱུ་ཡི་མཆན་མ་རྩིས་འགྲོ་དེ་ཉིད་གཅིག་ཕྱ་ཡི། |
 དོ་རྩི་འཇིན་པ་ཞི་བའི་དོན་དུ་ངེས་བཞེན་བྱ། |
 བང་ཞིག་ཆིག་ཚེ་རབ་དུ་མང་པོ་³དཔལ་ལྷན་སྐྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོའི་⁴སྐྱད། |
 མདོ་དོན་མ་ལུས་ཡོངས་སུ་ཤེས་པའི་སྐྱེ་བོ་དང་སང་འགའ་ཙམ་སྟི། |
 དེ་བས་ཐོས་ལྷན་གསལ་ཞིང་དག་པའི་སྐྱེ་བོ་རྣམས་ཀྱིས་དེ་ཡི་⁵ནི། |
 ཆིག་དོན་སོ་སོར་ཤེས་པ་རྟེན་པར་⁶བྱ་ཕྱིར་བདག་གིས་འབྲེལ་པ་འདི། |

1 ཕྱ་དཔེར་། (ལྷ་ཕྱུ་ཏྲ་མ་རྣམས་) དཔལ་འབྱུང་པོ་འདུལ་བྱེད་ལ་

2 ཕྱ་དཔེར་། (རིག་ཏུ་ནི) འགྲོ་བའི་དོན་ཕྱིར་ བསེར་། འགྲོ་བ་

3 རྩི་། མང་མོ་

4 བསེར་། ཆེན་མོ་

5 བསེར་། ཡིས་

6 བསེར་། རྟེན་པར་

དེ་ནས་དེ་ལས་རྩོམ་མཁའ་འགྲོ་མ་གསང་བའི་དབང་ཕྱག་མ་
རྒྱལ་གྱི་མཚོག་ཏུ་གསང་བ་ཞེས་བྱ་བའི་རྒྱུད་བཤད་པར་བྱ་སྟེ། ༣ །

སྟེ་པོ་འདྲི་དཔ་ཐ་དང་རྒྱལ་ལ་གཟིགས་ནས་ནི། །

བདེ་བར་གཤེགས་པས་བྱང་རྒྱལ་ལ་མ་ནི་སྒྲ་ཚོགས་གསུངས། །

འདྲི་ལྷན་མང་དུ་རང་ཉིད་འཇུག་པ་སྤྲིད་པས་ན། །

རྒྱལ་འབྲེལ་ཡོན་ཏན་ལྷན་འདི་བྱ་བར་འོས་པ་ཡིན། །

དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་¹སོགས་པ་ལ། རྒྱུད་འདི་ནི་རང་གི་རྒྱུད་མ་ཡིན་
ནོ། །འོ་ན་ཅི་ཞེ་ན། རྒྱུད་གཞན་དང་འབྲེལ་བ་སྟེ། དེ་བས་ན་དེ་ནས་
ཞེས་བྱ་བའི་²དོན་རྒྱུད་འདི་རྒྱུད་ལྔ་མ་ལ་ལོས་པའི་རྩིས་སོགས་ཡིན་པར་གསལ་
བར་བྱེད་དོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་འདིའི་དང་པོར་འདི་སྐད་བདག་གིས་སོས་པ་ལ་
སོགས་སྐྱེད་གཞིའི་ཆིག་ཕྱད་སྐྱར་བར་མ་མཛད་དེ། ལྔ་མ་ཉིད་ལ་སྐྱར་བའི་ཕྱིར་
དཔེར་ན་དཔལ་རྩོམ་ཅི་མོ་ལ་སོགས་པའི་རྒྱུད་བཞིན་ནོ། །དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བའི་
སྐྱེས་གང་གི་ཕྱིར་མདོར་བསྡུས་པ་ལ་དགའ་བ་རྒྱལ་འདི་ཉིད་ཀྱིས་ཕྱིར་དུ་བྱང་
རྒྱལ་བསྐྱབ་པའི་ཕྱིར་རྟེ། དེ་ནས་རབ་དུ་བཤད་པར་བྱ། ཞེས་བྱ་བ་དང་
སྐྱར་རྟེ། རབ་དུ་རྒྱལ་པར་སྟེ་སྟེ་བཤད་པ་ནི་རབ་དུ་བཤད་པར་བྱ་བའོ།⁴ །རྒྱུད་

1 གསེར་མོ། ཞེས་བྱ་བ་ རྩོམ་མཁའ་ནང་ཡོད་པའི་ཞེས་བྱ་བ་ཞེས་པའི་ཆིག་རྒྱལ་གྱི་སར་གསེར་
ཕྱིས་ནང་ཞེས་བྱ་བ་ཞེས་འདྲེག་པས་གཤམ་དུ་འདྲི་ལྷན་ཡིན་པར་རྒྱལ་པར་མཛད།

2 རྩོམ་འབྲེལ་པ་

3 རྒྱ་དཔེར་མོ། (གཞུགས་པའི་) ཆིག་དོན་

4 གསེར་མོ། བྱའོ།

ཅེས་བྱ་བ་ནི་རབ་དུ་རྒྱས་པ་¹སྟེ། ལྷ་འཕྲུལ་ཆེན་དང་། འབྲས་བུ་འཕྲུལ་ཆེན་དང་།
 ཐབས་ཀྱི་ལྷ་འཕྲུལ་དེ་རྣམས་པ་གསུམ་མོ། །
 དེ་ལ་རང་བཞིན་གྱིས་འོད་གསལ་བ་ཐོག་མ་དང་ཐ་མ་མེད་པའི་²ཕྱང་ཆུབ་ཀྱི་
 སེམས་དེ་ནི་ལྷ་³དེ་ས་ཐོན་ནོ། །དེ་གང་གི་ས་ཐོན་ཞིན། ཕྱང་ཆུབ་ཀྱི་སྟེ།
 ཡང་དག་པར་ཚོགས་པའི་ཕྱང་ཆུབ་ཀྱི་ལོ། །དེ་ཉིད་⁴ནི་སྒྲ་ན་མེད་པའི་འབྲས་བུ་
 ཡིན་པའི་ཕྱིར་འབྲས་བུ་ལོ། །དེ་ཡང་རང་བཞིན་གྱིས་འོད་གསལ་བའི་སེམས་སྟོ་
 བུར་ཀྱི་སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་ཟད་པས་རྣམས་པར་དག་པའི་མཚན་ཉིད་སངས་རྒྱས་
 རྣམས་ཀྱི་ཆོས་སྐུ་སྟེ། འོངས་སྟོན་ཚོགས་པ་དང་། ལྷ་འཕྲུལ་པའི་སྐུས་བསྐྱུས་
 པའི་ཡོན་ཏན་⁶མཐའ་ཡས་པ་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཆོས་རྣམས་ཀྱི་དེན་དུ་འབྱུང་⁷པ་
 ཞེས་བྱ་བའི་དོན་དོ།⁸ །དེ་ཉིད་ནི་སངས་རྒྱས་རྣམས་ཀྱི་ཕྱང་ཆུབ་ཆོས་ཀྱི་སྐུ་སྟེ།
 རོ་ཇེ་འཇིན་པ་ཆེན་པོའི་གོ་འཕང་ངོ། །ལྷ་འཕྲུལ་⁹དེའི་འབྲས་བུ་ཚོགས་པར་
 བྱེད་པ་ནི་ཐབས་¹⁰དེ། དེ་ཡང་ཡ་རོལ་དུ་ཕྱིན་པའི་ཐོག་པ་ཆེན་

1 གསེར་པ་ མེད།

2 ལྷ་འཕྲུལ་ (ཅེན) སེམས་

3 ཐོད་དཔེ་རྣམས་སུ་ལྷ་འཕྲུལ་ཆེན་ཕྱང་ཆུབ་ཀྱི་ལོ་ལྷེས་གསལ་བ་ལེགས།

4 ལྷ་འཕྲུལ་ དེ་ཉིད་ མེད།

5 གསེར་ ལྷ་

6 ལྷ་འཕྲུལ་ ཡོན་ཏན་ མེད།

7 གསེར་ བུར་

8 གསེར་ དེ།

9 གསེར་ ལྷ་འཕྲུལ་

10 ལྷ་འཕྲུལ་ (སྐྱོན་པོ་) ལྷ་འཕྲུལ་པའི་ཐབས་

པོ་¹ལ་ནི་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་ཀྱིས་བསྐྱལ་པ་གང་ས་མེད་པ་གསུམ་དུ་
སྒྲུབ་པའི་ལམ་འཁོར་དང་བཅས་པའོ། །གསང་སྔགས་ཀྱི་ཐེག་པ་ལ་ནི་བྱང་ཆུབ་
ཀྱི་ལམ་ནི་ཤིན་དུ་རྒྱ་ཆེན་པོ་དེ་ཉིད་མདོར་བསྒྲུས་པའི་རང་བཞིན་ཤིན་དུ་ཐུར་བ་
དང་། ཤིན་དུ་བདེ་བར་བྱང་ཆུབ་སྒྲུབ་པའི་ཐབས་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་²ལོ་
ལ་སོགས་པའི་³ལམ་འཁོར་དང་བཅས་པའོ། །རྒྱ་དང་། འབྲས་བུ་དང་།
ཐབས་དེ་དག་གི་དབང་དུ་བྱས་ནས་གང་བཞུག་པ་དེ་དག་ནི་རྒྱས་པ་སྟེ། གོ་རིམ་
⁴བཞིན་དུ་རྒྱུ་རྒྱུ་དང་། འབྲས་བུ་རྒྱུ་དང་། ཐབས་ཀྱི་རྒྱུ་དེ། རྒྱུ་
རྣམ་པ་གསུམ་པོ་འདི་དག་རབ་དུ་བཤད་པར་བྱའོ། །

འོ་ན་རྒྱུ་དེའི་མིང་ཅི་ཞེ་ན། མཚན་དུ་གསང་བ་ཞེས་⁵པའི་སྒྲ་ནི་ཟད་
པར་མི་འགྱུར་བ་དང་། སྔགས་པ་ལ་འཇུག་པ་སྟེ། མཚན་དུ་གསང་བ་ཞེས་⁶བྱ་
བའི་མིང་ཅན་དུ་སྔགས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་དོ། །གང་རྣམས་ཀྱིས་⁷མཚན་དུ་
གསང་བ་ཡིན་ཞེ་ན། རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་ཀྱིས། ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་
དོ། འདི་ནི་དོ་རྡོ་རྗེ་མཁའ་འགྲོ་མ་མ་ལུས་པ་རྣམས་ཀྱི་མཚན་དུ་གསང་བའི་རྒྱུ་

- 1 རྒྱ་དཔེར་ ཡ་རེལ་དུ་ཕྱིན་པའི་ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ མེད།
- 2 གསེར་ དཀྱིལ་གྱི་འཁོར་ལོ་
- 3 རྒྱ་དཔེར་ (ཞུགས་) རྣམ་པའི་ཞེས་པའམ་འབྱུང་གནས་
- 4 ཅོ་ གོ་རིམ་
- 5 གསེར་ ཅེས་
- 6 གསེར་ ཅེས་
- 7 གསེར་ ཀྱི་

གང་ཞིག་གིས་ནི་ཀུན་ཀྱང་ཕྱབ་པ།

ཐུ་དང་མི་ཐུ་ཆང་ས་སྒོ་ང་།

ལྷ་མོ་ཐམས་ཅད་སྐྱེད་བྱེད་ཅིང་།

ཆང་ས་ལ་སོགས་པའི་བདག་ཉིད་ཆེ། ལ།

ལྷ་ནི་གསང་བ་ཡིན་ལ། དེ་རྣམས་དེ་ལ་འབྱེན་པ་དང་ཡང་དག་པར་སྤྱད་པར་
བྱེད་པས་ན་དབང་ཕུག་མའོ། །དེ་ལ་དེ་བཞིན་གསལ་གསལ་པའི་རིགས་ཀྱི་དབང་མོ་
ནི་སངས་རྒྱུ་མཁའ་འགྲོ་མའོ། །དེ་རྒྱུ་རིགས་ཀྱི་ནི་དེ་རྒྱུ་མཁའ་འགྲོ་མའོ།
ནོར་བུའི་རིགས་ཀྱི་ནི་རིན་ཆེན་མཁའ་འགྲོ་མའོ། །པད་མའི་རིགས་ཀྱི་ནི་པད་
མ་མཁའ་འགྲོ་མའོ། །ལས་ཀྱི་རིགས་ཀྱི་དབང་མའི་རྩི་སྒྲ་ཚལ་མཁའ་འགྲོ་
མའོ། །དེ་རྣམས་ཀྱི་ཡང་དབང་མོ་ནི་སྤྱུ་འཕྱུ་ཆེན་མོ་སྤྱེ། གང་གི་ཕྱིར་འདི་
ནི་གསང་བ་ལས་ཀྱང་གིན་དུ་གསང་བ་ཡིན་པ་དེའི་ཕྱིར། མཚན་དུ་གསང་བའོ།
དེ་ཐོང་པར་བྱེད་པའི་ཆེག་ལ་ཡང་དེ་སྐད་ཅེས་བྱ་སྤྱེ། རེལ་སྤྱད་མ་སྤྱོད་པའི་སྤྱན་
ངག་བཞིན་ནོ། ༡-༣ །

མིང་འདི་ཉིད་ཀྱི་དོན་བཞུག་པར་བཞེད་ནས། གང་ཞིག་ཅེས་བྱ་བ་ལ་
སོགས་པ་གསུངས་དེ། ཆང་ས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སྤྱན་ནོང་སྤྱེ་ནན་པོ་ཡིན་ལ།

1 གསེར་། དེས་ན་དེ་རྣམས་

2 གསེར་། མོ་

3 ཐུ་དཔེར་། (དཔྱད་པ) ཐུ་ལ་

4 གསེར་། མི་

མན་ནི་¹ཀྱིན་ཡིན་རྟེ། ཡི་གེ་རྣམ་པར་བསྐྱར་བའི་ངེས་པའི་ཆིག་དུ་བྱས་པས་
 ཆངས་པར་འགྱུར་རྟེ། འདིར་འཇིག་རྟེན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྤྱོད་མར་གྱུར་པས་
 ཐམས་ཅད་ལས་གྲན་པས་ན་ཆངས་པ་སྟེ། འོངས་སྤྱོད་ཇོགས་པ་དང་། སྤྱུལ་
 པའི་སྐྱུས་བསྐྱས་པའི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་སོ། །དེ་རྣམས་ཀྱི་སྒྲོང་ནི་སྒྲོ་
 གནས་རྟེ། ཆོས་ཀྱི་སྐྱེལ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་རྟོ། །ཡང་ན་བྱད་པར་བྱ་བྱུར་པའི་
 ཐར་པ་ནི་ཆངས་པ་ཡིན་ལ། སྐྱ་ཉིད་ཀྱི་སྐྱེལ་གནས་ཡིན་པའི་ཕྱིར་སྒྲོང་ཡང་
 ཡིན་པས་ཆངས་སྒྲོང་སྟེ་ཆོས་ཀྱི་སྐྱེལ་³ །འདིར་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཞིང་ཡོངས་སུ་
 དག་པ་རྣམས་ཀྱི་སེམས་ཅན་གྱི་འཇིག་རྟེན་རྣམས་ནི་རྩ་བའོ། །དེ་རྣམས་ཀྱི་
 སྒྲོང་ཀྱི་འཇིག་རྟེན་གང་ཡིན་པ་དེ་ནི་འདིར་མི་རྩ་བའོ། །དེ་རྣམས་དང་ལྷན་ཅིག་
 འབྲུག་པས་ན། རྩ་མི་རྩ་བཅས་ཆངས་སྒྲོང་སྟེ། དེ་དག་ལ་གང་གིས་བྱབ་པ་
 ཞེས་བྱ་བར་འབྲེལ་རྟེ། མ་ལུས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཐམས་ཅད་
 ཀྱིས་དེ་དག་ཀྱན་ལ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་རྟོ། །དེ་ལྟར་ཇི་ལྟར་⁴ཆངས་པའི་སྒྲོང་ལ་
 དེས་བྱབ་ཅེ་ན། གང་གི་ཕྱིར་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ཆངས་པའི་སྒྲོང་སྟེ།
 དེའི་རང་བཞིན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་སྟོ། །ཅིའི་ཕྱིར་རྩ་བ་དང་མི་རྩ་བའི་འཇིག་རྟེན་
 ལ་དེས་བྱབ་ཅེ་ན། དེ་ལས་བྱུང་བའི་ཕྱིར་སྟོ། །དེ་ཉིད་བསྐྱན་པའི་ཕྱིར་ལྷ་
 མོ་ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་རྟེ། ལྷ་མོ་ཐམས་ཅད་ནི་
 རིགས་ལྔའི་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་སོ། །ཆངས་པ་ལ་སོགས་པ་ནི་

1 རྩ་དཔེར་ མན་ནི་ གསེར་ མན་ནི་

2 རྩ་དཔེར་ (ཀྱལ་དལ) སྐྱ་གཉིས་

3 རྩ་དཔེར་ (མི་རྩ་མོ་) ཞེས་པའི་དོན་ནོ།

4 གསེར་ དེ་ལ་ཇི་ལྟར་

5 རྩ་དཔེར་ དེའི་རང་བཞིན་ཡིན་པའི་ཕྱིར་སྟོ། མཛད།

དེ་རྣམས་ཀྱི་ནི་གསང་ཆེན་འདི།

སྐྱུ་འཕུལ་ཆེན་མོ་དབང་ཕུག་ཆེ།

སྐྱུ་འཕུལ་ཆེན་མོ་དཔག་ཆེན་མོ།

འབྱུང་བ་ཡང་དག་སྐྱུང་མཛད་མ། །

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ལྟ་རྣམས་དྲེ། རིགས་དེ་དག་མཐའ་ཡས་པ་དེ་རྣམས་
སྐྱེད་པར་བྱེད་པ་ནི་སྐྱུར་བྱུར་པའི་ཕྱིར་པོ། །བདག་ཉིད་ཆེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མཐུ་ཆེ་
བའོ། ར །

དེ་སྐྱེ་ཞིག་ཅེ་ན་སྐྱུ་འཕུལ་ཆེན་མོ་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་དྲེ། སྐྱུ་འཕུལ་
ཆེན་པོའི་སྐྱེས་ནི་བཅོམ་ལྷན་འདས་དྲེ་རྩེ་འཛིན་པ་མཆོག་ཏུ་གསང་བའི་སྐྱེ་བཅོམ་
ལྷན་འདས་དཔལ་ཉེས་ཀྱི་བཞུག་དྲེ། །དབང་ཕུག་ཆེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ། གང་གི་
ཕྱིར་ཆངས་པ་ལ་སོགས་པ་འབྱེན་པར་བྱེད་པས་དེ་དག་ནི་དབང་ཕུག་ཡིན་ལ།
དེ་དག་ཀྱང་འདིས་འབྱེན་པར་བྱེད་པས་ན་འདི་ནི་དབང་ཕུག་ཆེའོ། །གང་གི་ཕྱིར་
དབང་ཕུག་ཆེན་མོ་ཡིན་པ་དེའི་ཕྱིར། དེ་རྣམས་ཀྱི་ནི་གསང་ཆེན་འདི། ཞེས་
གསུངས་དྲེ། དེ་རྣམས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དྲེ་རྩེ་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་སོ། །གསང་
ཆེན་ནི་མཆོག་ཏུ་གསང་བའོ། །འདི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྐྱུ་འཕུལ་ཆེན་མོའོ། །འདི་
ལྟར་བྱ་ཆེན་པོ་ལ་ལྟོས་ནས་སྐྱུ་འཕུལ་ཆེན་མོ་དང་བཞིན་ནི་གསང་བར་བཤེད་དོ། །དེ་ཉིད་
ཀྱི་ཕྱིར་རིགས་རྣམས་ལས་རིགས་ཀྱི་བདག་པོ་ལྟ་ནི་གསང་བ་ཡིན་དེ་རིགས་རྣམས་

1 ལྟ་དཔེར་ (དེ་སྐྱེ་རྣམས་) ལྟ་རྣམས་

2 རྩེ་ ཀྱིས་

3 ཅོ་ མ་ མཛད།

དེའི་བདག་ཉིད་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །ཡང་མཁའ་འགྲོ་མ་ལྷ་ནི་གསང་བ་དེ་ལས་
 ཀྱང་གསང་བར་གྱུར་པའོ། །འདི་ལྷ་ར་རང་རང་གི་རིགས་ལ་བྱུང་པའི་རིགས་ཀྱི་
 དབང་པོ་རྣམས་ནི་གསལ་བའི་མཆན་ཉིད་དེ། དངོས་པོའི་ཆ་གཙོ་བོར་བྱས་
 པས་ན་དེ་དག་ནི་རིགས་པའོ། །མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་ནི་གསལ་བ་དེ་ཉིད་ཀྱིས་
 སྒྲིང་པའི་མཆན་ཉིད་དེ། དངོས་པོ་མེད་པའི་ཆ་གཙོ་བོར་བྱས་ནས་དེ་དག་ནི་
 ³དེ་བས་ལྟ་བུའོ། །དེ་བས་ན་གསང་བ་ལས་ཀྱང་ཁིན་ཏུ་གསང་བར་གྱུར་པ་
 རྣམས་ཀྱི་ཡང་གསང་བ་ནི་སྒྲིམ་ཆེན་མོ་སྟེ། འདི་ལྷ་ར་རིགས་སོ་སོའི་ཆོས་ཉིད་
 ཀྱི་མཆན་ཉིད་ནི་ཁྱ་ཆེ་བ་ཡིན་ལ། འདི་ནི་ལྷ་ཆར་གྱི་ཆོས་ཉིད་མཉམ་པ་ཉིད་
 ལྷན་མོང་བ་སྟེ། དེས་ན་འདི་ནི་གསང་བ་དེ་རྣམས་ཀྱི་⁴ཡང་གསང་ཆེན་མོ། །དེ་
 རྗེས་པར་བྱེད་པའི་རྒྱུད་ལ་ཡང་གསང་ཆེན་ཞེས་བཞིན་དོ། །

གསང་ཆེན་ཞེས་བཞིན་མོད། ཡང་ཅིའི་ཕྱིར་སྒྲིམ་ལྷ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་ཡིན་ཞེ་
 མ། དེའི་ཕྱིར་སྒྲིམ་ལྷ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་དེ། གང་གི་
 ཕྱིར་དེ་ནི་དྲག་མོ་ཆེན་པོ་སྟེ། མཆོག་ཏུ་རྣམ་པར་འཛེབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །གང་
 ལས་ཁེ་ན། གང་གི་ཕྱིར། འབྱུང་བ་ཡང་དག་སྐྱེད་མཛད་མའོ། །མ་རིག་པ་
 ལས་བྱུང་བས་ན་འབྱུང་བ་སྟེ། སངས་རྒྱས་ཀྱི་བྱང་ཆུབ་ལ་སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་དོ། །
 དེ་ཡང་དག་པར་སྐྱེད་པ་ནི་དེ་འཛིག་པར་མཛད་པ་སྟེ།⁵ དེ་བཙུམ་པས་ན་ཐར་

1 ལྷ་དཔེར་ (ལྷ་དཔེར) རིགས་པ་

2 ལྷ་དཔེར་ (ལྷ་དཔེར) དེ་གཉིས་

3 ཐམས་པོ་ དེ་དག་ནི་ མེད།

4 ཐམས་པོ་ ཀྱིས་

5 ལྷ་ དེ་

གང་གིས་འདི་ཀྱན་ལ་བྱབ་པ། |

ཐུ་དང་མི་ཐུའི་འཛིག་རྟེན་གསུམ། |

ངེས་ནི་དེ་ནས་འདི་བསྐྱུས་ནས། |

འཛིག་རྟེན་གསུམ་པོ་ཡང་སྒྲོའོ། ༦།

པའི་མཚན་དུ་¹བྱུར་པའོ། |འདི་སྐུམ་དུ་རྒྱུ་པར་འཆེ་བ་ནི་མ²ཡིན་ལ།
ཞི་ཞར་བྱས་པས་མར་བྱུར་དེ། རྩ་རྟེན་དུ་སྐྱུར་བས་ཡང་འདྲིན་པར་བྱེད་དེ།
ངེས་ན་སྐུ་ཞེས་བྱ་བར་དགོངས་སོ། ༥།

རྒྱུ་པ་གཞན་གསུངས་པ། གང་གིས་ཞེས་བྱ་བ་དང་། འཛིག་རྟེན་
གསུམ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སངས་རྒྱུས་ཀྱི་ཞིང་³ཡོངས་སུ་དག་པའོ། |རྩ་མི་རྒྱུར་
བཅས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐུ་མ་བཞིན་མོ། བྱབ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་ལས་བྱུང་བ་སྟེ།
གང་གི་ཕྱིར་རྩ་མི་རྒྱུར་བཅས་པ་རྒྱུས་ཚེས་ཀྱི་སྐུའི་རྩ་མཐུན་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ།
འདི་སྐུམ་དུ་ངེས་པར་སྐྱུལ་པ་ནི་སྐུ་མ་སྟེ། མའི་སྐུ་ལ་ཆའི་རྟེན་སྐྱུར་བས་ཡ་
བྱངས་པས་སྐུ་ལྟར་འབྱུར་བར་དགོངས་སོ། |རྒྱུ་པ་གཞན་གསུངས་པ་དེ་ནས་
དེ་ཡིས་⁴ཞེས་བྱ་བ་ལ་སྟགས་པ་ལ། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གཞན་དེ། རྒྱུ་
པ་གཞན་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་དོ། |དེ་ཡིས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་རུ་ཀའི་གཟུགས་ཅན་གྱི་

1 རྩ་དཔེར་། (པར་མཐུ་) གཞན་གྱི་ཐར་པ་

2 རྩ་དཔེར་། (སྟོང་) སྟོང་རྟེན་

3 རྩ་། ས་ཞེས་

4 གསེར་། དེ་ཡི་

གསང་བ་པ་¹ རྣམས་འདི་ཡི་ནི། །

ལྷ་མའི་བདག་ཉིད་ཅེས་རྣམ་གྲགས་² །

འཇིག་རྟེན་གསུམ་སྐྱབ་རིག་མ་³ རྟེ། །

འདྲོད་པ་ཐམས་ཅད་རབ་སྒྲེར་བ། །

ལྷ་འཕྲུལ་ཆེན་མོས་སྟོ། །བསྐྱས་ཞེས་བྱ་བ་དང་། འཇིག་རྟེན་གསུམ་པོ་ཞེས་བྱ་
བ་ནི་དབང་ཕུག་ཆེན་པོ་ལ་སྟགས་པ་རྣམས་གཟིགས་པས་བསྐྱེལ་⁴ ཉེ་ཐལ་བར་
མཛད་པའོ། །ཡང་ཞེས་བྱ་བ་ཕྱི་ནས་སྟོ། །སྤྱོད་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་དག་ཉིད་
ཀྱིས་ཞེ་སྤང་མེད་པར་⁵ མཛད་ནས་བྱུང་མཚན་ཆེན་པོའི་དྲིལ་བུའི་སྐྱ་རྣམས་ཀྱིས་
སྤར་གསོ་བར་མཛད་པའོ། ། ༦ །

དེས་ཅུར་འབྱུར་ཞེ་ན། གསང་བ་པ་རྣམས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སྟགས་པ་
གསུངས་ཏེ། ཕྱི་རོལ་རྩི་རིགས་ཀྱི་ལྷ་རྣམས་ནི་ཅུང་ཟེག་གསང་བར་འབྱུར་
པས་ན་གསང་བའོ། །དེ་རྣམས་ཀྱིས་མ་ནི་མར་གྱུར་པ་སྟེ། དེ་བས་ན་འདི་
ནི་ལྷ་མའི་བདག་ཉིད་ཅེས་རྣམ་གྲགས་ཞེས་གསུངས་ཏེ། ལྷ་མའི་སྐྱབ་པ་ནི་

1 ཟློ་ འབྲེལ་པར་ མ།

2 ཟློ་ རྣམ་གྲངས་

3 ཟློ་ འབྲེལ་པར་ རིག་པ་

4 ཟློ་དཔེར་ རན་པ་རྣམས་

5 ཟློ་དཔེར་ (ནི་རྟོག) ཉེས་པ་མེད་པ་

6 ཟློ་དཔེར་ (མཉམ་སྐྱེལ) ལྷ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་

གང་ཞིག་རྣམ་པར་ཤེས་ཙམ་གྱིས། ।

སྐྱབ་པའི་དབང་ཕུག་རིག་པ་ཉིད། ।

ལྔ་པ་བཤད་པ་བཞིན་དུ་དགོངས་སོ།¹ །རྣམ་པར་གྲགས་པ་ནི་རབ་དུ་གྲགས་པར་
གྱུར་པའོ།² །དེ་ལྟ་བུར་གྱུར་པའི་བདག་ཉིད་ཅན་ཡིན་མོད། རེས་སྐྱབ་པ་པོ་
རྣམས་ལ་ཅི་ཞིག་བྱེད་ཅི་ན། དེའི་ཕྱིར་འཇིག་རྟེན་གསུམ་སྐྱབ་ཅེས་བྱ་བ་ལ་
སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། སྤྱི་ན་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རང་བཞིན་ཡིན་པས་ན་རིག་
པ་སྟེ། སྐྱུ་མའི་³བདག་ཉིད་དུ་གྲགས་པའི་རིམ་⁴པས་སྐྱབ་པ་པོ་རྣམས་ལ་
འཇིག་རྟེན་གསུམ་པོ་སྐྱབ་པའོ། །འདྲོད་པ་ཐམས་ཅད་ནི་བསམ་⁵པ་ཐམས་ཅད་
དེ། རིག་འཇིན་ལ་སོགས་པའོ། །སྟེར་བ་ནི་དེ་དག་ཁྱད་པར་དུ་སྟེར་བར་
བྱེད་པ་སྟེ། ཆོགས་སུ་བཅད་པ་ཕྱེད་པོ་འདི་ནི་བཟུང་པའོ། །

འདི་ཉིད་ཀྱིས་⁶ཉི་བར་བཟུང་པ་ནི། གང་ཞིག་ཅེས་བྱ་བ་ནས་སྐྱུ་མའི་
རིག་པ་འདི་ཞེས་བྱ་བའི་བར་ཡིན་ཏེ། གང་ཞིག་ཅེས་བྱ་བ་ནི་རིག་པའོ། །རྣམ་
པར་ཤེས་པ་ཙམ་གྱིས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཉམས་སུ་སྤངས་པ་ཙམ་སྟེ། སྐྱབ་པོ་རྣམས་
ལ་འགྲུབ་པར་འགྱུར་ཞེས་བྱ་བ་དང་འབྲེལ་ཏེ། སྐྱབ་པའི་དབང་ཕུག་ཅེས་བྱ་བ་ནི་

1 ལྔ་དཔེར་མའི་མ་ལ་ཆའི་ཁྱེན་སྐྱར་བས་ལྔ་པ་བཤད་པ་བཞིན་དུ་དགོངས་པའོ།

2 ལྔ་དཔེར་ཡིག་ཕྱིང་འདི་མོད།

3 ལྔ་དཔེར་(མདུན་ལྷ) སྐྱུ་མ་ཆེན་པོ།

4 གསེར་རིགས་པས་ ལྔ་དཔེར་(བྱིན་པ) རིག་པ་

5 གསེར་བསམས་

6 གསེར་ཀྱི་

ལྷ་དང་ནོར་བདག་དྲི་བ་དང་། |
 གནོད་སྤྱིན་ལྷ་མིན་མི་དང་བཅས། ༥
 རིག་པ་འཛིན་དང་གང་ཡང་རུང་། |
 མིའམ་ཅི་དང་ལྷོ་འཕྲེ་ཆེ། |
 སྤྱིན་པོ་དང་ནི་ག་བ་རྣམས། |
 ལྷ་པོ་རྣམས་ལ་འགྲུབ་པར་འགྱུར། ༧
 དབང་དུ་འདུ་འགྱུར་འབྱུང་པོ་རྣམས། |
 རྒྱ་ལས་སྤྱིས་དང་ཐང་ལས་སྤྱིས། |

ལྷ་པོ་རྣམས་ཀྱི་དབང་ཕྱུག་སྤྱི་རིག་པ་ཉིད་དོ། །ཅི་ཞིག་འགྲུབ་པར་འགྱུར་ཞེས།
 ལྷ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་དེ། ལྷ་ནི་བརྒྱ་བྱིན་ལ་སོགས་པའོ།
 ནོར་བདག་ནི་ཡི་དྲགས་རྩ་འཕྲུལ་ཅན་མོ། དྲི་བ་ནི་ཡུལ་འཁོར་སྤྱོད་ལ་སོགས་
 པའོ། །བཅས་པ་ནི་དེ་དག་དང་ལྷན་ཅིག་དུ་འཇུག་པའོ།² ལྷ་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་
 ལྷ་པོ་པོའོ། །འགྲུབ་པར་འགྱུར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དབང་དུ་གྱུར་པའོ། ༥-༧ །

དབང་དུ་འདུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དབང་དུ་གྱུར་པ་ཉིད་དོ། །འབྱུང་པོ་ནི་
 སེམས་ཅན་རྣམས་སོ། །རྒྱ་ལས་སྤྱིས་པ་ནི་རྒྱ་སྤྱིན་ལ་སོགས་པའོ། །ཐང་ལས་
 སྤྱིས་པ་ནི་ཐང་ལ་སོགས་པའོ། །དེ་ལྟར་རེ་ཞིག་ཕྱི་རོལ་གྱི་འཛིག་དེན་གསུམ་པོ་

1 ལྷ་དཔེར་། (ཡལ) གནོད་སྤྱིན་

2 ལྷ་དཔེར་། (ཡལ) ཇི་ལྟར་བཤེད་པ་བཞིན་

3 གསེར་། ལྷ་ར་

ཚུལ་ཀླུ་མཁས་རང་བཞིན་འོད་གསལ་བ། ।

གདོད་ནས་དག་ཅིང་སྒྲིག་པ་མེད། ༡༠།

ལྷན་པ་ངེས་པར་བཟུང་ནས་འཛིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་འཛིག་རྟེན་གསུམ་པོ་སྤྱབ་
 པ་ངེས་པར་བཟུང་པའི་ཕྱིར་ཚུལ་ཀླུ་མཁས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སྟགས་པ་གསུངས་ནི།
 འདིར་ཆིག་ཀང་དང་པོ་གཉིས་ཀྱིས་ནི་རྒྱུའི་རྒྱད་མདོར་བསྐྱུས་ནས་བཟུང་ནོ།
 རང་བྱུང་ཡེ་ཤེས་ལྡ་པར་འབྱུང་། ཞེས་བྱ་བ་ནི་འབྲས་བུའི་རྒྱད་དོ། ཆིག་ཀང་
 པ་གསུམ་པ་དང་། ལྡ་པ་དང་། རྒྱལ་པས་ནི་ཐབས་ཀྱི་རྒྱད་བཟུང་ནོ། རང་
 བཞིན་ནི་གཉུག་མའི་རང་བཞིན་ནོ། འོད་གསལ་པ་ནི་སྤང་ཞིང་གསལ་བ་སྟེ།
 ཤིན་ཏུ་དྲི་མ་མེད་པ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ནོ། རི་ཅི་ཞིག་ཞེ་ན། ཚུལ་ཀླུ་མཁས་དྲེ་
 རང་གི་མཚན་ཉིད་འཛིན་པས་ན་ཚུལ་དྲེ། དངོས་པོའི་ཚུལ་ཐམས་ཅད་དོ།
 དེ་ཡང་འདིར་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་སེམས་ཅམ་སྟེ། དཔེར་ན་རྒྱ་ལམ་ན་
 ཁང་ཁྱིམ་དང་། རྒྱུད་མོས་ཚལ་དང་། རྒྱུད་པུ་དང་། རྟ་དང་། ལྷང་
 པོ་དང་མི་ལ་སྟགས་པའི་གཟུགས་སུ་སེམས་ཉིད་སྤང་བ་ལྟར་སེམས་ཉིད་དངོས་པོ་
 དེ་དང་དེའི་རྒྱལ་པར་སྤང་སྟེ། སེམས་ལས་བྱུང་བ་ནི་སེམས་ལས་གྲུང་ན་མེད་
 པའི་ཕྱིར་ལོ། རི་སྤྱད་དུ་ཡང་ས་བཅུ་པ་ལས།⁵ ཁམས་གསུམ་པོ་འདི་དག་ནི་

1 རྟེ་ རང་བཞིན་རྒྱ་དཔེར་སྤྱལ་ལྟར་ཞེས་འདུག་པ་ལྟར་ལྟགས་པར་སྤང་།

2 རྒྱ་དཔེར་ (སའབྱུང་ཞིབ་མཐུན་) ཚུལ་ཐམས་ཅད་དོ་ཞེས་པའི་དོན་ནོ།

3 ཐམས་པོ་ རྟེ་ འདི་ལྟར་ཞེས་འདུག་ཀྱང་ཅི་ནི་ལྟགས་པར་སྤང་།

4 རྒྱ་དཔེར་ དངོས་པོ་ མེད།

5 རི་བྱུང་ ཡལ་ཆེན་ ཁ ༣༣༠ བ ༥

སེམས་ཙམ་མོ་ཞེས་གསུངས་ལ།

འཕགས་པ་ལང་ཀར་གཤེགས་པ་ལས་

ཀྱང་།¹

ཇི་ལྟར་བྱིས་པས་རྣམ་བཟགས་པའི།

།

ཕྱི་རྩལ་དོན་ནི་ཡོད་མེད་པས།

།

བག་ཆགས་གྱིས་ནི་དགྲགས་པའི་སེམས།

།

དོན་དུ་སྤང་བ་རབ་དུ་སྒྲི།

།

ཞེས་གསུངས་ཏེ། བག་ཆགས་གྱིས་དགྲགས་པ་ནི་བག་ཆགས་གྱིས་བཙོམ་ཞིང་
བསྟན་པའོ།² །ཆོས་ཐམས་ཅད་སེམས་ཙམ་ཡིན་མོད། ཡང་དེ་རང་བཞིན་
བྱིས་སྤང་ཞིང་འོད་གསལ་བའི་ཕྱིར་³ཡིན་ཞེས། གདོད་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སྟགས་
པ་གསུངས་ཏེ། གདོད་ནས་ནི་ཐོག་མ་མེད་པ་ཉིད་ནས་སོ། །ཐོག་མ་མེད་པ་
ཉིད་ནས་སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་ངོ་མ་མེད་པས་ན་དག་པའོ། །སྒྲིབ་པ་རྣམས་ཀྱི་
བག་ཆགས་མེད་པས་ན་རྟོག་པ་མེད་པའོ། །ཅིང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གང་གི་ཕྱིར་ཞེས་བྱ་
བའི་དོན་དོ། །གང་གི་ཕྱིར་གདོད་མ་ནས་དག་པའི་ཕྱིར་རང་བཞིན་བྱིས་སྤང་ལ་
རྟོག་པ་མེད་པའི་⁴ཕྱིར་རང་བཞིན་བྱིས་འོད་གསལ་བའོ། །

འོ་ན་ངོ་མ་རྣམས་ཀྱང་ཡོད་ལ་དེའི་བག་ཆགས་རྣམས་ཀྱང་ཡོད་བཞིན་དུ་
ཅིའི་ཕྱིར་དག་པ་དང་རྟོག་པ་མེད་ཅེས། དེ་དག་གི་རང་བཞིན་དེ་མ་ཡིན་པའི་
ཕྱིར་ཏེ། རྣམ་མཁའ་ལ་རྩལ་དང་། དུ་བ་དང་། རྩལ་རྣལ་སྟགས་པ་

1. ཟླ་བཀའ་། ཅ། ༡༥༥ ན་ ༥ ཇི་ལྟར་བྱིས་པས་བཟགས་པ་ལྟར། ཕྱི་རྩལ་གྱི་ནི་དོན་མེད་
དོ། །བག་ཆགས་གྱིས་ནི་དགྲ་པའི་སེམས། །དོན་དུ་སྤང་བ་གིན་དུ་འབྱུང་།

2. ལྷ་དཔེར་། (ཡིད་ལྡན་) ཞེས་པའི་དོན་ནོ།

3. ལྷ་དཔེར་། (ཀམྱ་) གསེར་། ཅིའི་ཕྱིར་ཡིན།

4. ལྷ་དཔེར་། (དི་ནི་ཀླུ་འཕྲུལ་) ལྷ་གསུམ་གྱི་ཕྱིར་

ཐབས་བརྗོད་པ་ཡིས་དེ་ལས་ནི། |

རང་འབྱུང་ཡི་ཤེས་ལྷ་ལྷན་འབྱུང་། |

ནལ་འབྱོར་མ་ནམས་སྦྱར་བའི་མ། |

ཁམས་གསུམ་པོ་ནི་མ་ལུས་ཀུན། ༡༡

བཞིན་དུ་དྲི་མ་ནམས་དེ་ལ་སྒོ་བྱར་བ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་པོ། |དེ་བས་ན་ཆོས་
 ནམས་¹ནི་རང་བཞིན་གྱིས་འོད་གསལ་བའོ། |ཅི་སྒྲེ་དེ་ལྟར་མ་གུར་ན་འགའ་
 ཡང་བྱང་ཆུབ་ཐོབ་པར་མི་འབྱུར་དེ། སེམས་ཀྱི་རང་བཞིན་དྲི་མར་གུར་ན་
 སེམས་ལ་ཡོད་པ་དེ་ཟད་པར་འབྱུར་བ་མི་རིགས་པའི་ཕྱིར་པོ། |དེའི་ཕྱིར་རང་
 བཞིན་གྱིས་འོད་གསལ་བའི་སེམས་ཉིད་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་རྒྱ་ཡིན་ལ། བྱང་ཆུབ་ཀྱི་
 འབྲས་བུ་ཡིན་ནོ། |བྱང་ཆུབ་དེ་ཡང་བག་ཆགས་དང་བཅས་པའི་སྒྲིབ་པ་ཐམས་
 ཅད་ཟད་པའི་སེམས་ཀྱི་རྒྱད་ཤིན་དུ་ནམ་པར་དག་པ་ཡིན་ལ། དེ་ཉིད་ནི་ཆོས་ཀྱི་
 སྒྲི་སྒྲེ། ལོངས་སྤྱོད་རྫོགས་པ་དང་སྤྱལ་པའི་སྒྲིས་བསྐྱུས་པའི་ཆོས་ནམས་ཀྱི་གཞི་
 དང་གནས་སུ་བྱུར་པས་ན་སྒྲུའོ། ༡༠ |

དེ་ལ་ཆོས་ཀྱི་སྒྲི་ཉིད་ཀྱིས་ནི་སངས་རྒྱས་བཙུམ་ལྷན་འདས་ནམས་རང་
 བྱང་བ་ཡིན་དེ། སྒྲིབ་པ་ཐམས་ཅད་ཟད་པ་རང་ཉིད་འབའ་ཞིག་དུ་བྱུར་པ་སྒྲེ།
 རང་གི་རང་བཞིན་ཁོ་ན་སྤང་ངོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་དོ། |སྒྲི་གསུམ་གྱིས་ནི་³ཡི་
 ཤེས་ལྷ་པོར་འབྱུར་དེ། དེ་ལ་དེ་དག་གི་ཡི་ཤེས་ལྷ་ནི་མེ་ལོང་ལྷ་བུའི་ཡི་ཤེས་

1 ལྟ་དཔེར་། ཆོས་ནམས་ མེད།

2 ལྟ་དཔེར་། (སྤྱི་ལྟ་བུ་) རང་བྱུང་ནི་

3 ལྟ་དཔེར་། སྒྲི་གསུམ་གྱིས་ནི་ མེད།

དང་། མཉམ་པ་ཉིད་གྱི་ཡེ་ཤེས་དང་། སོ་སོར་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་དང་།
 བྱ་བ་བྱུབ་པའི་ཡེ་ཤེས་དང་། ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་དག་པའི་ཡེ་
 ཤེས་སོ། །དེ་ལ་མེ་ལོང་ལྟ་བུའི་ཡེ་ཤེས་ནི་མེ་ལོང་རྩི་མ་མེད་པ་ལྟར་དག་ཅིང་
 མཐའ་མེད་ལ་རྟག་པ་¹སྟེ། ཡེ་ཤེས་བར་མ་གསུམ་གྱི་²གནས་སུ་བྱུར་པ་
 དང་། ཡེ་ཤེས་གཞན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གཟུགས་བརྟན་འཆར་བའི་གནས་ཡིན་ལ།
 གཟུགས་བརྟན་གང་ཞིག་ཤར་བས་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་རྣམ་པ་ཐམས་
 ཅད་དུ་ཆོས་ཐམས་ཅད་གཟིགས་པར་བྱུར་པའོ། །མཉམ་པ་ཉིད་གྱི་ཡེ་ཤེས་ནི་
 རྟག་ཏུ་བུམས་པ་ཆེན་པོ་དང་སྡིང་ཆེན་པོ་དང་མཚུངས་པར་ལྟན་པས་སེམས་
 ཅན་ཐམས་ཅད་བདག་ཉིད་ཁྱད་པར་མེད་པར་མཐུན་པའོ། །སོ་སོར་རྟོགས་
 པའི་ཡེ་ཤེས་ནི་ཤེས་བྱ་ཐམས་ཅད་ལ་ཐོགས་པ་མེད་པ་དང་། ཉིང་ངེ་འཇིན་
 དང་། གཟུངས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་གནས་སུ་བྱུར་པས་འཁོར་གྱི་³དཀྱིལ་འཁོར་དུ་
 བདག་ཉིད་གྱི་ཡུལ་སུམ་ཆོགས་པ་ཐམས་ཅད་སྟོན་པར་མཛད་ཅིང་། ཆོས་ཀྱི་
 ཆར་⁴ཆེན་པོ་འབབས་པར་མཛད་པའོ། །ཡེ་ཤེས་གང་གིས་དེ་བཞིན་གཤེགས་
 པ་རྣམས་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་མཐའ་ཡས་པ་ཐམས་ཅད་དུ་སྒྲི་དང་གསུང་དང་
 ཐུགས་ཀྱི་སྒྲུལ་པ་རྣམས་ཀྱིས་མཐའ་ཡས་པའི་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་དོན་མཛད་པ་
 དེ་ནི་དེ་རྣམས་ཀྱི་བྱ་བ་བྱུབ་པའི་ཡེ་ཤེས་སོ། །ཡེ་ཤེས་གང་གིས་དེ་བཞིན་གཤེགས་
 པ་རྣམས་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་དེ་བཞིན་ཉིད་ཤིན་ཏུ་རྣམ་པར་དག་པ་ལ་གཟིགས་པ་
 སྟེ། མཚན་མའི་རྩི་མ་ཐམས་ཅད་ཤིན་ཏུ་མི་སྤང་བས་དེ་ཙམ་དུ་གཟིགས་པ་སྟེ།

1 གསེར་པ་ ལྟག་པ་

2 གསེར་པ་ བྱིས་

3 ལྷ་དཔེར་ (རྣམ) ཆོས་ཀྱི་

4 ལྷ་དཔེར་ (རྣམ་རྟོག) ཆོས་ཀྱི་ལྟ་བ་

དེ་ནི་དེ་རྒྱལ་གྱི་ཆོས་ཀྱི་དབྱེད་ས་ཤིན་ཏུ་རྒྱལ་པར་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་སོ། །དེ་
 ལ་ཡེ་ཤེས་དང་པོ་གསུམ་ནི་ལོངས་སྤྱོད་ཚོགས་པའི་སྐྱེལ། །བཞི་པ་ནི་སྤྱུལ་པའི་
 སྐྱེལ། །ལྔ་པ་ནི་ཆོས་ཀྱི་སྐྱེལ་ཕྱགས་གཅིག་སྟེ། རང་བྱུང་ཡང་ཡིན་ལ་ཡེ་
 ཤེས་ལྔ་པ་ཡང་ཡིན་པས་དེ་ལ་དེ་སྒྲུབ་ཅེས་བྱ་སྟེ། དེ་བཞིན་གསེགས་པ་རྒྱལ་ས་
 ཞེས་བྱ་བའི་དོན་དོ། །དེ་ལས་དྲེ། འདི་ལྟར་རྒྱ་ཡོད་དུ་ཟིན་ཀྱང་ཐབས་མ་
 ཉོགས་པར་འབྲས་བུར་འབྱུར་བ་མ་ཡིན་དེ། རྒྱ་ནི་ཐོག་མ་མེད་པའི་དུས་ཅན་
 ཡིན་པས་ཐམས་ཅད་ཐོག་མ་ཉིད་ནས་བྱང་ཆུབ་པར་ཐལ་བར་འབྱུར་བའི་ཕྱིར་རོ། །
 དེ་བས་ན་ཐབས་གཙོ་བོར་གྱུར་པར་བཞག་དོ། །དེ་ཅི་ཞིག་ཅེ་ན། རྣལ་འབྱོར་
 མ་རྒྱལ་ས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་དེ། རྣལ་འབྱོར་མ་རྒྱལ་ས་ནི་མཁའ་
 འགྲོ་མ་ལྟོ། །སྦྱོར་བའི་མ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྤྱུ་འཕུལ་ཆེན་མོའོ། །ཁམས་གསུམ་
 པོ་ནི་མ་ལུས་ཀྱང་། ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཁམས་གསུམ་པ་ཐམས་ཅད་དེ། དེ་དག་
 ལས་ཡང་དག་པར་བྱང་བ་ནི་རིགས་ཀྱི་དབང་པོ་རྒྱལ་ས་དང་རིགས་རྒྱལ་ས་སོ། །
 ཅིའི་ཕྱིར་དེ་དག་ཁམས་གསུམ་པ་ཡིན་ཞེ་ན། དེ་དག་དེ་བཞིན་གསེགས་པ་རྒྱལ་ས་
 ཀྱི་གསང་བ་གསུམ་གྱི་རྩི་ཆེའི་ཁམས་སུ་འདུས་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་དེ་དག་
 ཐབས་ཡིན་ཞེ་ན། རྒྱང་ཆུབ་ཀྱི་སྤྱོད་དུ་གྱུར་པའི་མཚན་ཉིད་རྒྱ་ཕུན་སུམ་ཆོགས་
 པ་ཡོད་པ་ལ་འདི་རྒྱལ་ས་ཉིད་བསྒྲུབ་པ་དང་བསྐྱེད་པ་འཁོར་དང་བཅས་པས་སྐྱུར་
 དུ་བྱང་ཆུབ་ཐོབ་པར་བྱེད་ལ། དེ་ཐོབ་ནས་ཀྱང་དེ་དག་ཉིད་ལོངས་སྤྱོད་པ་
 དང་། སྤྱུལ་པའི་སྐྱེས་བསྐྱེས་པ་རྒྱལ་ས་ཀྱིས་གཞན་རྒྱལ་ས་སྤྱོད་ཇི་ལྟ་བ་བཞིན་དུ་
 བྱང་ཆུབ་རྒྱལ་ས་གསུམ་ཐོབ་པར་བྱེད་པའི་ཕྱིར་རོ། ། 》 །

མ་ལུས་ལུས་པ་མེད་བྱ་བ་ཅིང་། །

སྐྱུ་མ་ཀུན་གྱིས་རྣམ་པོ་ལ་པའོ། །

སངས་རྒྱས་ཀུན་ལས་སྒྲིགས་ནས་སྤྱ། །

ལྷ་མཆོག་ལྷ་སྒྲིམ་བུ་མོ་སྤྱོད། ༡༣།

མ་ལུས་པ་མེད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ། མ་ལུས་པ་ནི་རྣལ་འབྱོར་མ་ལ་སྟོང་
པ་ཕུང་པོ་གསུམ་པོ་དེ་དག་ལས་ཕུང་པོ་གཅིག་ཀྱང་དོར་བ་མེད་པའོ། །ལུས་
པ་²མེད་པ་ནི་ཕུང་པོ་གཅིག་གིས་ཀྱང་ལྷ་གཅིག་ཀྱང་དོར་བ་མེད་པ་སྟེ། མ་ལུས་
པ་ཡང་དེ་ཡིན་ལ་ལུས་པ་མེད་པ་ཡང་དེ་ཡིན་པས་དེ་དག་ལ་དེ་སྟོང་ཅེས་བྱའོ། །
བྱ་བ་ཅིང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གང་ཞིག་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཙམ་གྱིས་སྐྱབ་པ་པོ་རྣམས་ལ་
ལམ་དང་འབྲས་བུ་རང་བཞིན་གྱིས་རྒྱུགས་པར་གྱུར་པའོ། །ཅིའི་ཕྱིར་འབྱུང་ཅེ་
ན། སྐྱུ་མ་ཀུན་ལ་རྣམ་པར་པོ་ལ་པའི་ཕྱིར་དེ། ལམ་དང་འབྲས་བུ་ལ་
སྒྲིགས་པའི་གནས་སྐབས་འདི་དག་ཐམས་ཅད་སྐྱུ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་ཁོ་ཁོ་ན་ལ་རག་ལས་
པའི་ཕྱིར་ལྟེ། ³ །འཇིག་རྟེན་གསུམ་བསྐྱབ་ཅེས་གང་སྟུར་བསྟན་པ་དེའི་ཉེ་བར་
བསྟན་པ་མཛད་ནས། འདོད་པ་ཐམས་ཅད་རབ་སྟེར་བ། །ཞེས་བྱ་བ་གང་
སྟུར་བསྟན་པ་དེ་ཉེ་བར་བསྟན་པའི་ཕྱིར། སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་ལ་
སྒྲིགས་པ་གསུངས་དེ། སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ནི་སངས་རྒྱས་རྣམས་སོ། །
འབྲྌ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བདག་གམ་བདག་གི་དོན་གྱི་ཕྱིར་དགག་པའོ། །ལྷ་མཆོག་

1 རྟེན་ བསྐྱོད་

2 རྟེན་ ལུས་ལ་

3 ལྷ་དཔེར་ (ཡིད་ཆེན་) ཅེས་པའི་དོན་ནོ།

ནལ་འབྱུང་དབང་ཕྱག་བྱེད་རིག་པ། །

དེ་བཞིན་དུ་ནི་མིག་འཕུལ་བྱེད། །

ཚྲིངས་པ་དང་ནི་མེད་ས་པ་དང་། །

བསྐྱད་དང་གསལ་པ་ལ་སོགས་པ། ༡༣།

དབང་དང་དགུག་པ་ལ་སོགས་དང་། །

ནམ་མཁའ་འགྲོ་བ་ཉིད་ཀྱང་ངོ་། །

ནི་ལྟེན་གཙོ་བོ་ནམས་ཏེ། བརྒྱ་བྱིན་ལ་སོགས་པའོ། །སྤྱོད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་

བཀུག་ནས་ཉེ་བར་སྤྱོད་པའོ། ༡༣ །

ནལ་འབྱུང་ནི་ཏིང་ངེ་འཛིན་མོ། །དེའི་དབང་ཕྱག་ནི་སྦྱོམས་པར་འཇུག་
པ་དང་ཁྲང་བ་དག་ལ་དབང་ཐོབ་པའོ། །མིག་འཕུལ་ནི་ཡོད་པ་དང་མེད་པའི་
དམག་ལ་སོགས་པ་ཇི་ལྟར་རིགས་པར་སྤྱུལ་ཏེ་སྟོན་པ་དང་། མི་སྒྲུང་བར་ཡང་
བྱེད་པའོ། །ཚྲིངས་པ་ནི་བརྒྱལ་བའི་གནས་སྐབས་སུ་བྱུར་པའོ། །མེད་ས་པ་ནི་
མི་གཡོ་བར་བྱས་པའོ། །བསྐྱད་པ་ནི་གནས་ནས་གཡོ་བའོ། །བསལ་པ་ནི་
དཀོན་མཆོག་གསུམ་ལ་སོགས་པ་ལ་ཁིན་དུ་གནོད་པར་བྱེད་པ་ནམས་གཞིམ་པའོ། །
སོགས་པའི་སྒྲས་ནི་ཡན་ལག་ཉམས་པ་དང་། རིམས་དང་། སྤྱིན་པོས་
བརྒྱུད་པ་ལ་སོགས་པ་བསྟུའོ། ༡༣ །

དབང་ནི་དབང་དུ་བྱུར་པ་སྟེ། རྟེན་དབང་དུ་བྱེད་པའི་ལས་ལ་དབང་

1 ལྟ་དཔེར་ (མེན་ མཁུམ་ལྟ) རིག་མ་ནི་སྤྱུ་འཕུལ་ཆེན་མོའི་ཞེས་ལྟག

2 གསེར་ རྟེན་དབང་དུ་བྱུར་པ་སྟེ།

གཞན་གྱི་གྲོང་སྐོམ་སྤྱོད་པ་དང་། །

མི་སྤྱང་བ་དང་གང་ཡང་རུང་། ། ༡༢།

ཞི་འགྲུས་པ་དང་སྤྱུགས་པ་དང་། །

དེ་བཞིན་ས་འོག་འགྲོ་བའོ། །

ཟིག་འཛིན་འཁོར་ལོས་སྤྱར་ཉིད་འགྲུས། །

འཆི་བ་མེད་ཅིང་རྒྱས་པ་མེད། ། ༡༣།

ཞེས་ཀྱང་། །དགུག་པ་ནི་རྣམ་པ་གཉིས་ཏེ། ཀྱང་པས་དགུག་པ་དང་། བོང་
བྱར་དགུག་པ་འོ། །དང་པོ་ནི་ས་ལས་འོང་བའོ། །གཉིས་པ་ནི་རྣམ་མཁའ་
ལས་འོང་བའོ། །ལས་རྣམས་ནི་དབང་དང་དགུག་པའི་ལས་གསུམ་འོ། །
གཞན་གྱི་གྲོང་ནི་གཞན་གྱི་ལུས་ལ་འཇུག་པ་འོ།² །སྐོམ་པའི་སྤྱོད་ཉི་ཤེས་ཀྱི་འཕྲོ་
བ་ལ་སྐོམ་པ་གཟུང་ངོ། །ཁྱ་བ་ནི་གཞན་གྱི་གྲོང་ལ་སྐོམ་པ་ལ་དེ་དག་ཉམས་
སྤྱོད་བའོ། །མི་སྤྱང་བ་ནི་མི་མཐོང་བར་བྱ་བའོ། ། ༡༤།

ཞི་འགྲུས་པ་ནི་ཕན་ཚུན་ཆགས་པ་དང་ལྷན་པ་དག་ཀྱང་སྤྱང་བར་བྱ་བའོ།
སྤྱུགས་པ་ནི་སྤྱུགས་པ་འོ། །ས་འོག་འགྲོ་བ་ནི་ལྷ་མ་ཡིན་གྱི་སྤྱོད་འཇུག་པ་འོ།
ཟིག་འཛིན་འཁོར་ལོས་སྤྱར་བ་ཞེས་ཀྱང་བ་ལ་ཟིག་འཛིན་རྣམས་ཚར་གཅད་པ་དང་
ཇེས་སྤྱོད་བའི་རྣམས་པ་ཅན་དེ་ནི་འཁོར་ལོས་སྤྱར་བ་སྤྱོད་དེ་དངོས་ནི་དེ་ཉིད་

1 ལྷ་འཕྲུལ་

2 ལྷ་དཔེར་ (པར་ཕུར་བཞེས་ཏེ) གཞན་གྱི་གྲོང་ཞེས་པའི་སྤྱོད་བཞིན་པ་འོ།

3 ལྷ་དཔེར་ འཁོར་ལོས་སྤྱར་ མེད།

བསྐྱབས་པ་དང་ནི་བསམས་པ་ཡིས། |

བསྒྲམ་པ་དང་ནི་དྲིང་འཇིན་རྣམས། |

བསྐྱབས་པས་བྱེད་པའི་རིག་པ་སྟེ། |

རིག་པའི་དངོས་གྲུབ་བྱེད་པར་འགྱུར། ༡༧།

ཐུགས་ཀྱི་ཞེས་པུ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཐུགས་ནི་ཐུགས་ཀྱི་ཚོགས་སོ། །
ཡི་གེའི་གཟུགས་ནི་ཡི་གེ་ལས་སྟེས་པའི་གཟུགས་ཏེ། ཐུགས་དང་ཡི་གེའི་
གཟུགས་དེ་དག་གི་ཞེས་པུ་བའི་¹དོན་དོ། །རྣལ་འབྱོར་པ་ནི་སྐྱུ་པ་པོ་རྣམས་སོ། །
རྣམ་པར་རྟོག་པ་ནི་ལས་ལ་སོགས་པ་གྲུབ་པའི་རྣམ་པ་ཅེ་བའོ། ༡༨-༡༩ །

ཐུགས་²ཇི་ལྟར་ཉམས་སུ་སྒྲང་ཞེ་ན། 'བསྐྱབས་པ་དང་ནི་བསམས་པ་དང་།
ཞེས་གསུངས་ཏེ། བསྐྱབས་པ་ནི་ངག་གི་བརྒྱུས་པའོ།³ ཡི་གེའི་གཟུགས་ཉིད་⁴
ལྟར་ཉམས་སུ་སྒྲང་ཞེ་ན། བསྒྲམ་པ་ཞེས་པུ་བ་ལ་⁴ སོགས་པ་གསུངས་ཏེ།
བསྒྲམས་པ་ནི་ཡིད་ཀྱིས་རྣམ་པ་རྒྱུན་ཆགས་སུ་འཇུག་པས་ལྟ་བའོ། ཉིང་འཇིན་
ཞེས་པུ་བ་ནི་དམིགས་པ་དེ་ཉིད་ལ་སེམས་གནས་པའོ། །བསྐྱབས་པ་ཞེས་པུ་བ་
ལ་སོགས་པས་ནི་ཇི་ལྟར་ཉམས་སུ་སྒྲངས་པའི་འབྲས་པུ་སྟོན་པ་ཡིན་ཏེ། བསྐྱུ་
པ་ཞེས་པུ་བ་ནི་བརྒྱུས་བཟོད་དོ། །རིག་པ་ནི་སྐྱུ་འཕུལ་ཆེན་མོའོ། །བྱེད་པ་

1 གསེར་ཅེས་པུ་བ་

2 ལྟ་དཔེར་ཅེས་ (ལྟ་ལྟར) ཡི་གེ

3 ལྟ་དཔེར་ཅེས་ (ལྟ་དཔེར་ཅེས་) བསམས་པ་ནི་བསམས་པ་བཞིན་བརྒྱུས་པའོ།

4 ཇེ་ཅེས་པུ་བར་

བརྟུལ་བཞུགས་མེད་ཅིང་དཀའ་ཐུབ་མེད། །

དཀའ་སྤྱོད་སྤྱོད་པ་སྤྱོད་མེད་པར། །

རྟག་དྲུ་ཤེས་རབ་ཐབས་སོགས་ཀྱིས། །

རྟག་དྲུ་དཀའ་དང་བདེ་བས་འགྲུབ། ༡༥།

ཞེས་ཕྱ་བ་ནི་དགུག་པ་ལ་སོགས་པའི་ལས་ཐམས་ཅད་བྱེད་པའོ། །རིག་པའི་སྒྲ་
གཉིས་པས་ནི་བསྒྲམས་པ་ལས་ཕྱང་བའི་ཤེས་རབ་སྟོན་རྟོ། །དེ་ཡང་སྤྱི་བསྒྲམ་
པ་ཚོགས་པ་སྟེ། རང་གི་ལྷའི་གཟུགས་ཀྱིས་རྣམ་པར་བདག་ཉིད་གསལ་བར་
བལྟའོ། །དངོས་གྲུབ་བྱེད་པ་ནི་དེས་སྒྲུབ་པ་པོ་ཕྱག་རྩ་ཆེན་པོར་སྒྲུབ་པའོ། །

གང་ཞེས་ཕྱ་བ་ནི་ལས་རྣམས་ཀྱང་སྒྲུབ་པར་བྱེད་པ་སྟེ། ཕྱག་རྩ་ཆེན་པོའི་
དངོས་གྲུབ་ནི་རང་གི་ལྷའི་གཟུགས་སྤྱོད་པར་བྱས་ལ་³རང་ངམ་གཞན་གྱིས་
མཐོང་བར་འགྱུར་པའོ། ༡༦།

བདེ་སྒྲག་དྲུ་ཉམས་སྤྱོད་པ་བཞུག་པའི་ཕྱིར། བརྟུལ་བཞུགས་མེད་ཅེས་
ཕྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། འདིར་མེད་ཅེས་ཕྱ་བའི་སྒྲས་ནི་བྱེད་པ་ཞེས་ཕྱ་
བ་སྤྱོད་དང་སྤྱོད་ཏེ་ཕྱ་བ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ཕྱ་བའི་དོན་རྟོ། །བརྟུལ་བཞུགས་ནི་ཁྱུས་
གསུམ་དང་། སོས་གསུམ་བཞེ་བ་ལ་སོགས་པའོ། །དཀའ་ཐུབ་ནི་ཕྱ་ཆོད་
དང་། སྤྱོད་པ་ཟ་བ་ལ་སོགས་པའོ། །དཀའ་སྤྱོད་ནི་བསྟེན་པར་དཀའ་བ་སྟེ་

1 རྩ་བ་ བརྟུལ་

2 གསེར་ ལྟ་དཔེར་ དང་

3 གསེར་ པ་

ལྷ་བའི་དབུས་གནས་པ་དཔལ་བོ་སྒྲེ། |
 བེ་སར་གསང་བའི་སྤྱོད་ཡུལ་ལ། |
 སེམས་དང་སེམས་མེད་སེམས་ཀྱི་གཟུང། |
 ཡི་ཤེས་ཤེས་ཀྱི་རང་བཞིན་བདག ༡༩།

སྒྲེ་འདི་ནི་བསྐྱན་པ་ལོ། |འདི་འདི་ཉེ་བར་བསྐྱན་པ་ནི། སྤྱང་²བ་དང་། རྩོམ་
 པ་མེད་པ་ལོ། |དེ་ལ་སྤྱང་³བ་ནི་དུས་མ་ཡིན་པར་མི་བྱ་བ་ལོ། |རྩོམ་པ་ནི་
 འདྲོད་ཆར་རྩོམ་པར་བྱུང་ཅིང་བྱིས་པ་ཡིན་ན་ཡང་ཆངས་པར་སྤྱོད་པ་ལོ།⁴ |རྩམ་
 པར་ཤེས་པ་ལྟ་དང་ལྷན་ཅིག་སྒྲིམ་པའི་ཚོར་བ་སེམ་པ་ནི་བདེ་བ་ལོ། |ཡིད་ཀྱི་
 རྩམ་པར་ཤེས་པ་དང་ལྷན་ཅིག་སྒྲིམ་པའི་སེམ་པ་ནི་དགའ་བ་སྒྲེ། དེས་སྒྲུབ་པ་
 བོ་རྩམས་ལ་སྒྲུབ་པར་འགྱུར་བ་ལོ། |བསྒྲུམས་པ་ལས་བྱུང་བ་ནི་སྤྱང་འབྲེལ་
 ཆེན་མོ་དང་། དེའི་གཟུགས་བསྒྲུམ་པའི་ཕྱི་རོལ་གྱི་བྱུང་མེད་ནི་ཤེས་རབ་པོ། |
 ཐབས་ནི་དེ་ལ་ཉེ་བར་བཞུད་པ་སྒྲེ། བདག་ཉིད་དཔལ་ཉེ་རུ་ཀའི་གཟུགས་སུ་
 བསྒྲུམས་པས་ཉེ་བར་སྤྱོད་པ་ལོ། |སོགས་པའི་སྒྲུམ་མཆོད་པ་རྩམ་པ་ལྟ་དང་།
 འདྲོད་པའི་ཡོད་ཉན་ལྟ་རྩམས་ཀྱང་གཟུང་ངོ། |དེ་རྩམས་ཀྱིས་ཉན་དུ་སྒྲེ་སྐྱོན་
 མཆམས་རྩམས་སུ་ལོ། ༡༥ |

ཤེས་རབ་དང་ཐབས་ཀྱིས་རེ་ཞིག་ཇི་ལྟར་ན་དགའ་བ་དང་བདེ་བར་འགྱུར་

1 རྩོ་ རྩམ་

2 བསྐྱར་ བསྐྱར་

3 བསྐྱར་ བསྐྱར་

4 ལྷ་དཔེར་ (ལྷ་འཕྲུལ་ཉིད་ལྟར་) རྩོམ་སུ་འཇིན་པའི་ཚོར་བ།

ཞེ་ན། ལྷེ་པའི་དབུས་གནས་ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ལྷེ་པ་ནི་
 པད་མའི་ལྷེ་པའོ། །དེའི་དབུས་སུ་གནས་པ་དེ་སུ་ཞིག་ཅེ་ན། དཔལ་བོ་ཞེས་པ་
 བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ལྷུན་མི་ཆད་པར་¹བཙོན་པ་དང་ལྷན་པས་ན་
 དཔལ་བོ་ལྷེ་རྩོ་ཆེ་སེམས་དཔའོ། །དེ་འདྲིར་ལྷོད་གང་ན་གནས་ཤེ་ན། ཀའི་ཀ་
 ཞེས་པ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ལྷེ་པའི་པད་མའི་ཀའི་ཀ་²ལའོ། །
 གསང་པའི་ལྷོད་ཡུལ་ན་གསང་ཞིང་སྤ་བར་བྱ་བའི་ཕྱིར་ལྷོད་ཡུལ་ཏེ། ཉི་མ་དང་
 སྤུ་བ་ཁ་སྤར་བའི་ལྷོད་ལྷོད་ཅེས་པ་པའི་དོན་ཏོ། །འདྲི་ཙམ་གྱིས་ནི་དེ་གནས་
 པའི་ལྷོད་བཟུན་ནས་རང་བཞིན་བཟུན་པའི་ཕྱིར་ སེམས་དང་ཞེས་པ་ལ་
 སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། སེམས་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པའོ། །ཆིག་གཅིག་ལ་ཡང་
 ངེས་པར་གཟུང་བར་སྤང་སྤྱེ། དཔེར་ན་རྒྱ་ཙམ་འཕུང་བ་ལ་ཟས་སུ་རྒྱ་འཕུང་
 ཞེས་པ་བ་དང་། ལྷོད་ཙམ་ཟ་བ་ལ་ཟས་སུ་ལྷོད་ཟ་ཞེས་པ་ལྟ་བུའོ། །དེ་
 བཞིན་དུ་འདྲིར་ཡང་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ལས་མ་གཏོགས་པའི་³གཟུང་བ་མེད་པའི་
 སེམས་ཀྱི་སྤྲས་སྤྲ་ཆོགས་འདི་དག་སེམས་ཙམ་མོ་ཞེས་ངེས་པར་གཟུང་ངོ་། །
 སེམས་དེ་ཡང་སེམས་མེད་པའོ། །ཅིའི་ཕྱིར་སེམས་ཤེ་ན། གཟུང་བ་མེད་
 པའི་ཕྱིར་རོ། །ཅིའི་ཕྱིར་སེམས་པ་མེད་ཞེ་ན། གཟུང་བ་མེད་པས་འཛིན་པ་
 ཡང་མེད་པའི་ཕྱིར་རོ། །གང་གི་ཕྱིར་འཛིག་དེན་ན་དོན་འཛིན་པ་ནི་རྣམ་པར་
 ཤེས་པར་བྱ་གས་ལ། རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཉིད་ནི་སེམས་ཡིན་པས་སེམས་ཀྱང་དེ་
 ཡིན་ལ་སེམས་མེད་པ་ཡང་དེ་ཡིན་པས་ན་སེམས་མེད་པའོ། །ཁལ་དེ་འཛིན་

- 1 ལྷུན་པེར་ (རིན་ལྷན་) སྤར་མེད་པ་
- 2 གསེར་ ཀའི་ཀ་
- 3 གསེར་ ལྷོད་ མེད།
- 4 ལྷུན་པེར་ (ལྷན་) དོན་གྱི་

པའི་མཚན་ཉིད་ཀྱིས་སེམས་དང་བྲལ་བས། དེ་སེམས་མེད་པ་ཡིན་ན་སེམས་
གང་གི་མཚན་ཉིད་དང་ལྡན་པས་དེ་ལ་སེམས་ཞེས་ཅིའི་ཕྱིར་བྱ་ཞེ་ན། སེམས་
ཀྱི་གཟུགས་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། ¹གསལ་བའི་ཕྱིར་སེམས་ཀྱི་གཟུགས་ཏེ།
སེམས་དང་། རྣང་བ་དང་། རྩེད་བ་དང་། ཡོངས་སུ་གསལ་བ་དང་།
ལྷོག་དུ་བྱུར་པ་མ་ཡིན་པ་ཞེས་བྱ་བའི་བར་དུ་སྟེ། རང་བཞིན་འདི་ལ་ཡོད་པས་
ན་སེམས་ཀྱི་གཟུགས་ཏེ། སེམས་ཀྱི་གཟུགས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་དེ་དང་ལྡན་པས་
སེམས་ཞེས་བྱའོ། །

འོ་ན་རྣམ་པར་ཤེས་པ་ཐམས་ཅད་དེ་ལྟ་བུ་ཉིད་ཡིན་བཞིན་དུ་དཔའ་བོ་ལ་
ཡང་ཁྱད་པར་གྱི་རང་བཞིན་ཅི་ཞིག་ཡོད་ཅེ་ན། ཡེ་ཤེས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་
གསུངས་ཏེ། རང་ནི་གཉུག་མའོ། །བཞིན་ནི་དེའི་ངོ་བོ་སྟེ་དེའི་རང་བཞིན་མོ།
འདིས་ཤེས་པར་བྱེད་པས་ན་ཡེ་ཤེས་ཡིན་ལ་ཤེས་པར་བྱ་བས་ན་ཤེས་བྱའོ། །
ཡེ་ཤེས་དང་ཤེས་བྱ་ནི་ལྔས་དབྱེ་བ་སྟེ། ཡེ་ཤེས་བྱ་བའི་རང་བཞིན་འདི་ལ་ཡོད་
པས་ན་ཡེ་ཤེས་ཞེས་བྱ་བའི་རང་བཞིན་བཞག་གོ། དེ་ལ་སོ་སོའི་སྟེ་བོ་རྣམས་ཀྱི་
ནི་རང་བཞིན་མ་ཡིན་པ་ཡང་ཤེས་བྱར་འགྱུར་ཏེ། གཟུང་བ་དང་འཇིན་པ་དག་
དེ་དག་གིས་བརྟགས་པའི་ཕྱིར་ཏེ། གཟུང་བ་དང་འཇིན་པའི་རྣམ་པ་དངོས་པོར་
མེད་བཞིན་དུ་དེ་རྣམས་ལ་རྣང་བའི་ཕྱིར་རོ། །གང་ཡང་མེད་པ་དང་།
དངོས་པོ་མ་ཡིན་པ་དེ་ནི་རྣམ་པར་ཤེས་པའི་གཉུག་མའི་རང་བཞིན་མ་ཡིན་ནོ། །
འོ་ན་ཅི་ཞིག་ཅེ་ན། འཁྲུལ་པས་སྒྲོ་བརྟགས་པ་སྟེ། འཁྲུལ་པས་མཚན་མར་
གཟུང་བའི་ཕྱིར་འཁྲུལ་པའི་མཚན་མའོ་ཞེས་བཟོད་དོ།² །གང་དག་གི་རང་

1 ལྟ་དཔེར་ཅོད་ (ཅོད་ཆོད་) སེམས་ཅན་ནི་སེམས་སོ། །

2 ལྟ་དཔེར་ཅོད་ (ཅོད་ཆོད་) འཁྲུལ་པའི་སེམས་ཀྱི་ཕྱིར་རོ། །

བཞིན་མ་ཡིན་པའི་ཤེས་བྱར་གྱུར་པ་དེ་རྣམས་ཀྱི་ཡི་ཤེས་ཀྱང་¹ རང་བཞིན་མ་ཡིན་
 པར་འབྱུར་དེ་འདྲི་དག་འབྲུལ་པའོ། །འདྲི་ལྟར་འབྲུལ་པའི་དབང་གིས་མེད་པ་
 དང་དངོས་པོ་མ་ཡིན་པ་ཡང་སྤང་སྟེ། དེའི་ཕྱིར་འབྲུལ་པ² དེ་ཡང་དེ་དག་གི་
 ཤེས་པ་མ་ཡིན་དེ། སྤང་བའི་གྱུར་གྱུར་པའི་ཕྱིར་རོ། །འབྲུལ་པ་དེ་ནི་སྟོ་
 ཡིས་བསྐྱད་པ་ཡིན་གྱི་སྟོའི་གཉུག་མའི་རང་བཞིན་ནི་མ་ཡིན་དེ། སྟོ་མ་རྣམས་
 སྟོ་བྱར་བ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་ཕྱིར་རང་བཞིན་མ་ཡིན་པ་ཡང་དེ་རྣམས་ཀྱི་
 ཤེས་པ་ཡིན་ནོ། །དོན་དམ་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ནི་སྟོས་པ་མེད་པའི་ཡི་
 ཤེས་ཀྱི་བདག་ཉིད་དེ། སྟོས་པ་ནི་འབྲུལ་པའོ། །དེ་བས་ན་དེ་ལ་སྟོས་པ་
 ཐམས་ཅད་མེད་པས་རང་བཞིན་ཉིད་དེའི་ཡི་ཤེས་ཡིན་གྱི་འབྲུལ་པ་ནི་མ་ཡིན་དེ།
 སྟོས་པའི་མཚན་མ་ཐམས་ཅད་དེ་ལ་མི་སྤང་ཞིང་རྒྱབ་པའི་ཕྱིར་རོ། །རང་
 བཞིན་ཉིད་དེའི་ཤེས་བྱ་ཡིན་གྱི་མེད་པ་དང་དངོས་པོ་མ་ཡིན་པ་ཡང་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །
 ཆེགས་སུ་བཅད་པ་ཕྱེད་པོ་³ དེས་ནི་དཔལ་བོའི་དོན་དམ་པའི་བྱང་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་
 ཀྱི་⁴སྟོས་པ་མེད་པའི་ཡི་ཤེས་ཀྱི་ངོ་བོའི་རང་བཞིན་དངོས་སུ་བཞག་ནས་བདེ་བ་
 ཆེན་པོའི་ངོ་བོ་ནི་ཤུགས་ཀྱིས་སྟོན་པ་སྟེ། སྟོས་པ་མེད་པའི་ཡི་ཤེས་དང་བདེ་བ་
 ཆེན་པོ་ནི་ལྷན་ཅིག་སྟེས་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་སྐད་དུ་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་
 ལ་འཇུག་པའི་གཟུངས་ལས།

དམ་ཚེས་འདི་ལ་གྱུལ་སྟེས་རྣམས། །

མི་རྟོག་བསམ་པས་བརྟན་གནས་ན། །

1 ལྟ་དཔེར་། (ལྟ་བུ) ཡིན་པར་འབྱུར་བའི་ཕྱིར་

2 ལྟ་དཔེར་། (ལྟ་བུ ལྟ་བུ) ཤེས་པ་དེ་ཡང་ འབྲུལ་པ་ མེད།

3 རྟེན་། བྱེད་པོ་ །

4 ལྟ་དཔེར་། (བརྟན་ཅིག་ལྟར) བྱང་ཆུབ་སེམས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་

ཟིམ་གྱིས་གྲུལ་དཀར་རྟོག་པ་ལས། |

འདས་ནས་རྣམ་པར་མི་རྟོག་ཅིང། |

རབ་ཞི་མི་གཡོ་རྣམ་པ་¹སྒྲེ། |

དབང་བསྐྱར་²མི་མཉམ་མཉམ་པ་ཡིན། |

རྣམ་པར་མི་རྟོག་བདེ་བ་ནི། |

བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་དེ་ལས་ཐོབ།³ ཅེས་གསུངས་ཏེ།⁴
 དམ་ཆོས་འདི་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐོག་པ་ཆེན་པོའོ། །རྒྱལ་སྤྱོད་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བྱང་
 ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་སོ། །བརྟན་གནས་⁵ ཞེས་བྱ་བ་ནི་མི་གཡོ་བར་
 གནས་པའོ། །རྣམ་རྟོག་འདི་ནི་གྲུལ་དཀར་བ་སྒྲེ། རྣམ་པར་རྟོག་པ་རྣམ་པ་
 བཞིའོ།⁶ །ཟིམ་བཞིན་འདས་པ་ནི་⁷དེ་ལས་འདས་པའོ། །མི་རྟོག་ཅིང་པ་

1 གསེར་པ་ དམ་པ་

2 གསེར་པ་ ལྷ་པ་

3 མདོ་མེ་ པ་ མེ་བཀའ་ ཐོག་ ༤ ན ཡ

དམ་ཆོས་འདི་ལ་རྒྱལ་བའི་སྤྱོད་། རྣམ་པར་མི་རྟོག་བསམ་པ་ལྷ་པ་ན། རྣམ་རྟོག་བསྐྱར་དཀར་
 རྣམས་འདས་ཏེ། ཟིམ་གྱིས་མི་རྟོག་ཐོབ་པར་འགྱུར། དེ་ལ་རབ་ཞི་མི་གཡོ་མཆོག །
 དབང་བྱིད་ཉམས་ལ་མི་མཉམ་པ། རྣམ་པར་མི་རྟོག་བདེ་བ་ནི། བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་
 ཐོབ་པར་འགྱུར།

4 ལྷ་དཔེར་ (ཏཱ་མིན་ ལྷ་ལྷ་ལྷ་) ཆོགས་སུ་བཅད་པ་གཉིས་པ་དེས་ནི།

5 ལྷ་དཔེར་ (ཞུགས་སྤྱོད་ ཞུགས་སྤྱོད་) རྣམ་པར་མི་རྟོག་པ་གནས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མི་
 གཡོ་བར་གནས་པའོ།

6 གསེར་པ་ རྣམ་པར་རྟོག་པའི་གཞིའོ།

7 གསེར་པ་ ནི་ མེད།

དེ་ནི་བདག་གིས་བཤད་པུ་སྒྲེ། |
 ཟབ་མོ་སངས་རྒྱས་བཞག་པའོ། |
 ཨ་ལི་ཀ་ལི་མཉམ་པུས་དྲེ། |
 རི་མོ་དེ་ལ་སྐྱར་བར་བྱ། ༣༠།

ནི་རྣམ་པར་མི་རྟོག་ཅིང་སྒྲོས་པ་མེད་པའི་ཡེ་ཤེས་ཐོབ་པར་འགྱུར་བ་སྒྲེ། དེའི་
 ཕྱིར་རྣམ་པར་མི་རྟོག་པའི་ཡེ་ཤེས་དེ་ཉིད་ཀྱི་བདེ་བ་ཐོབ་པར་འགྱུར་པོ། །འདིར་
 ཉོན་མོངས་པ་མེད་པས་ན་རབ་དུ་ཞི་བའོ། །ཉམས་པ་མེད་པས་ནི་མི་གཡོ་བའོ།
 འཇིག་རྟེན་དང་འཇིག་རྟེན་ལས་འདས་པའི་བདེ་བ་ཐམས་ཅད་ལས་འཕགས་པས་
 ན་དམ་པའོ། །ཇི་ལྟར་འདོད་པ་དང་ཇི་སྟེད་འདོད་པ་མངོན་དུ་བྱེད་པའི་ཕྱིར་
 དབང་བསྐྱར་བའོ། །དེ་ལས་གཞན་པའི་བདེ་བ་དང་རིགས་མཚུངས་པས་ན་
 མཉམ་པའོ། །ཁྱད་པར་བཞི་པོ་དེ་དག་གིས་ཁྱད་པར་དུ་འཕགས་པས་ན་མི་
 མཉམ་པ་ཡང་ཡིན་ནོ། ༡༧ །

དེ་ལྟ་བུར་གྱུར་པའི་དཔའ་བོ་དེ་ནི་བདག་གིས་བཤད་པར་བྱའོ་ཞེས་བྱའོ།
 ཐེག་པ་གང་ལ་གྲགས་ཤིང་། སངས་རྒྱས་བཞག་པ་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་དྲེ།
 ཐེག་པ་གང་གིས་སངས་རྒྱས་སུ་གྱུར་པའི་བཞག་པ་ནི་སངས་རྒྱས་བཞག་པ་སྒྲེ།
 ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་དོ། །འོ་ན་ལྔར་ཆིགས་སུ་བཅད་པ་ཕྱེད་ཀྱིས་དེ་
 བཞག་ཟིན་བཞིན་དུ་ཡང་བཤད་པས་ཅི་ཞིག་བཟོད་ཅེ་ན། དེའི་ཕྱིར་ཟབ་མོ་ཞེས་

1 ལྟ་། ཡེ་ཤེས་ཤེས་པའི་རང་བཞིན་བདག་གིས་བཤད་པུ་སྒྲེ།

2 ལྟ་དཔེར་། ཕྱིད་ མེད།

བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ལས་གསང་ལྟ་གྱི་ཐེག་པ་ནི་ཟབ་མོ་སྟེ་
 གང་གི་ཕྱིར་པ་རྒྱུ་ལྟེན་པའི་རྒྱལ་ལས་གསང་ལྟ་གསུངས་ཏེ། རྒྱལ་ལས་ལྟེན་པ་
 སེམས་ཀྱི་ཕྱག་རྒྱའི་རྣམ་པ་ལའོར་དང་བཅས་པས་སྤྱར་བ་ཁོ་ནར་བྱང་རྒྱལ་བ་སྤྱུབ་
 པའི་ཕྱིར་བསྐྱེད་པར་བྱ་བ་སྟེ། མཆན་ཉིད་མི་མཐུན་པའི་ཕྱིར་པ་། །དེ་ཡང་ད་
 བྱང་མ་གསུངས་ཏེ། དེ་བས་ན་བཤད་པར་བྱ་ཞེས་གསུངས་སོ། །དེ་ཉིད་
 ཞུའི་ཀུའི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སྟགས་པ་གསུངས་པ་སྟེ།² དེ་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཉི་མ་དང་
 ལྷ་བཤ་སྤྱར་བ་ལའོ། །དེས་པར་སྤྱར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེས་པར་བཅིང་བའི་ཕྱིར་
 སྤྱར་བའོ། །ཅི་ཞིག་ཅེ་ན། རི་མོ་སྟེ་དཔལ་བོ་དེ་ཉིད་ལས་ལྷ་བའི་དབུས་ཀྱི་བུ་
 ག་གིན་དུ་སྤྱར་བ་ལས་བྱུང་བ་དབྱེར་མེད་ལ་གཅད་དུ་མེད་པ་པད་མའི་ཙ་བའི་སྒྲུལ་
 མ་ལྟ་བུའི་འོད་སྤྱོད་མའི་སྒྲུང་པ་ལྟ་བུའོ། །ཇི་ལྟར་སྤྱར་ཞེ་ན། ཞུའི་ཀུའི་མཉམ་
 བྱས་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། ཞུའི་ཀུའི་དག་མཉམ་པ་གང་ལ་ཡོད་པ་དེ་ལ་དེ་
 སྒྲུང་ཅེས་བུའོ། །དེ་ལ་དེ་སྒྲུང་ཇི་ལྟ་བུ་ཞེ་ན། སྤྱི་དྲི་གི་སྤོང་བ་བརྒྱས་པ་ལྟ་
 བུར་སྤྱར་ནས་སོ། །ཇི་ལྟར་མཉམ་པར་བྱ་ཞེ་ན། གང་གི་ཕྱིར་ཀུའི་ཕྱིད་མར་
 བཞོས་ཏེ་དུམ་བུ་གཉིས་སུ་བཞོས་པ་³ ཀུའི་དེ་སྤྱོད་བཤད་པ་⁴ ལ་དེ་ཡང་ང་དང་ཉ་
 སྤངས་ཏེ་བཅུ་དྲུག་པ་གཉིས་སུ་བུའོ། །དེ་བས་ན་དེ་དག་མཉམ་པོར་སྤྱར་པའི་འོད་
 ཀྱི་རི་མོས་ཁོ་སྤྱར་བའི་རིམ་པ་གསུམ་དུ་བསྐྱོར་བས་དཀྱི་བར་བྱ་སྟེ། བློ་གི་

1 ལྷ་དཔེར་ (གམས་ཕྱིར་) ཐེག་པ་ཆེན་པོ་ཟབ་མོ་

2 གསེར་ གསུངས་ཏེ།

3 གསེར་ བཞོས་པ་ནི་

4 གསེར་ ཙ་ བཤད་ལ་

5 གསེར་ རི་མོ་

6 ལྷ་དཔེར་ (དཔེ་ལྡན་ ཞུའི་དཔེ་) ཞུའི་དེ་ལྟ་གསུམ་པོ་རྣམས་

རི་མོ་སྒྲིང་དུ་འབར་བ་མཐར་ལ། |

འོག་དུ་འབབ་པར་བྱེད་པའོ། |

ཁྱ་བའི་ཚུལ་གྱིས་འབབ་པ་སྒྲི། |

བདུད་ཅིའི་ཐིགས་པའི་གཟུགས་ལས་སོ། ༡༡

རྒྱམས་ཀློག་པའི་རིམ་པ་བཞིན་དུ་ཁྱ་བའི་སྒྲིང་དུ་བརྒྱད་དེ་དགོད་དོ། །དེ་ལ་སྒྲིང་
བ་དབུས་མ་ལ་ནི་ལྷ་ལི་རྒྱམས་སོ། །ཐ་མ་གཉིས་སུ་ནི་ལྷ་ལི་སྒྲིང་སྒྲིང་དོ།
དེ་རྒྱུད་དུ།

བཟང་པོ་ཡི་གེའི་སྒྲིང་བ་རྒྱམས། །ཞིས་འོག་ནས་བཟུང་པར་འབྱུར་ལ།
དཔལ་བདེ་མཚོག་སྒྲིང་མ་ལས་ཀྱང་།¹

ཡི་གེ་ཀ་ནས་ད་ཡི་²བར། |

ང་ཉ་སྒྲིང་ས་ནས་དགོད་པར་བྱ། |

རྒྱ་ནས་ལྷ་ཡི་བར་ཐུག་པར། |

སྒྲིང་བ་གཉིས་ནི་མཉམ་པོར་བྲི། |

ཨ་ལ་སོགས་པར་དབུས་གནས་པར། |

ཁྱ་བའི་དཀྱིལ་ལ་ཁོར་ལ་འགོད་བྱ། |

ཞིས་གསུངས་སོ། ༡༠ |

རི་མོའི་སྒྲིང་དུ་ཞིས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། །འོད་གྱི་རི་མོ་གཞན་གཤམ་

1 བདེ་མཚོག་སྒྲིང་མ་ཞིས་པའི་དཔེ་ཚན་རྒྱུད་འབྱུང་ནང་མ་ཐོག།

2 ལྷ་དཔེར་ཅེས་དཔེ་བར་ཞིས་འདྲུག་པ་ལེགས་པར་སྒྲིང་། ཐེ་ ༥

རབ་ཀྱི་འདོད་ཆགས་ཀྱི་མེ་འབར་བ་གང་གི་ཆེ་དཔའ་བོ་ལ་བྱེན་དུ་ལང་བ་དེའི་ཆེ་
 དེའི་འོག་དུ་འབབ་པར་བྱེད་པར་འབྱུར་རྟེ། །འདིར་འཇམ་པ་ནི་འབབ་པའི་
 སྐྱུས་བསྟན་²དྲེ། ལྷ་འཇམ་པ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་དྲོ། །ཅི་སྟེ་འབབ་པར་བྱེད་
 པ་དེས་ཅི་ཞིག་འཇམ་པར་འབྱུར་ཞེ་ན། ³བདུད་རྩི་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་དྲེ།
 ཐར་པ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་དང་། ཟད་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་བདུད་རྩི་སྟེ། བདེ་བ་ཆེན་
 པོའོ། །ཇི་ལྟ་བུ་ཞེ་ན། ཐེགས་པའི་གཟུགས་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་དྲེ། བདེ་
 བ་ཆེན་པོ་ཁ་མདོག་དཀར་པོའི་ཐིག་ལའི་གཟུགས་ཀྱིས་དཔའ་བོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་དྲོ།
 ཇི་ལྟར་འཇམ་པར་འབྱུར་ཞེ་ན། ཁྱ་བའི་རྩལ་གྱིས་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་དྲེ།
 རྣམ་པར་དག་པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་རོ་བསིལ་⁴ཞིང་བདེ་བ་ཞུ་བའི་རང་བཞིན་ཅན་ཡིན་
 པས་ན། ཁྱ་བ་དང་ཆོས་མཐུན་པའི་ཕྱིར་ཁྱ་བའི་སྐྱུས་བསྟན་དྲེ། རྩལ་དེས་
 འབབ་ཅིང་འཇམ་པ་སྟེ། དེ་ཉིད་འཇམ་པར་འབྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་དྲོ།⁵
 ཞུལ་ལྷུའི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་དེ་དག་གིས་ནི་དེར་དཔའ་བོ་དེ་ལེགས་པར་གནས་
 པ་བསྟན་ལ། རི་མོ་སྟེང་དུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ནི་དེའི་ལས་བསྟན་ཅིང་ཁྱ་
 བའི་⁶རྩལ་གྱིས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ནི་རང་བཞིན་གྱིས་ཁྱུང་པར་བསྟན་དྲོ། །

1 རྩི་ འདི་

2 བསེར་ བསྟན་པ་

3 བདུད་རྩི་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་དྲེ། ཞེས་པ་ནས་ འཇམ་པར་འབྱུར་ཞེ་ན། ཞེས་པའི་བར་
 ཕྱི་བཟོད་པ་སྟེ་དགོས་པར་མར་ཆད། ཅོ་ནེ། བསེར་བྱིས། ལྷ་དཔེ་གསུམ་གཞིར་བྱས་དྲེ་
 བསྟན། བསེར་ ཟད་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་དང་

4 ལྷ་དཔེར་ (སིད་ལྷུལ་) ཞུལ་དཀར་པོ་

5 ལྷ་དཔེར་ (ལྷུ་བདེ་) བར་དུའོ།

6 ལྷ་དཔེར་ (ལྷ་མྱི་དཔེ་ཆེན་) བདུད་རྩི་ཞེས་བྱ་བ་སོགས་པས།

ཐིགས་པའི་གཟུགས་ཞེས་ཀྱང་བས་ནི་དེའི་ཕྱག་རྒྱའི་རྣམ་པ་བཟུན་ཏེ། །ཡང་དེ་ཇི་
ལྟར་ན་ཕྱག་རྒྱའི་རྣམ་པར་འགྱུར་ཞེ་ན། །འདིར་བཤོད་པར་བྱ་སྟེ། བང་ལྷ་བ་
ལྟར་དཀར་བའི་ཐིག་ལེ་ཕྱ་མོ་དེ་ནི་སེམས་ཏེ། བང་ན་གསལ་བའི་ཕྱིར་རྟོ།
བང་ཡང་དེ་ཙམ་ལ་སེམས་གནས་པ་དེ་ནི་སེམས་ཙམ་སྟེ། དེ་ལས་མ་གཏོགས་
པའི་དོན་གཞན་མི་དམིགས་པའི་ཕྱིར་རྟོ། །བང་ཡང་དེའི་གཟུང་བ་མེད་པས་
འཛིན་པ་མེད་པ་དེ་ནི་དེའི་སེམས་མེད་པ་སྟེ། དེའི་ཕྱིར་འདི་ནི་སྟོང་པའི་
གཟུགས་ཅན་ལོ། །བང་ཡང་དེའི་གསལ་ཞིང་བ་དེ་ནི་སེམས་ཀྱི་གཟུགས་སོ།
བང་ཡང་དེ་ཙམ་ལ་སེམས་གནས་པས་སྟོས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱི་མཚན་མ་རྒྱུ་པ་དེ་
ནི་དེའི་ཡེ་ཤེས་ཞེས་ཀྱང་བའི་རང་བཞིན་བདག་གོ། །དྲི་ཇེ་སེམས་དཔའི་ཡེ་ཤེས་
ཀྱི་ཕྱག་རྒྱ་གིན་དུ་ཕྱ་བའི་རྣམ་པ་དེ། དཔལ་གསང་བ་འདུས་པ་ལས་ཀྱང་།

རྣམ་མཁའི་དབྱིངས་ཀྱི་དབུས་གནས་པར། །

ལྷ་བའི་དགྱིལ་འཁོར་བསྐྱེད་པར་བྱ། །

སངས་རྒྱས་གཟུགས་སུ་རྣམ་བསྐྱེད་པས། །

ཕྱ་མོའི་རྣལ་འབྱོར་བསྐྱེད་པར་བྱ། །

སྒྲ་ཡི་ཅེ་མོར་ཡུངས་དཀར་བསམ། །

འགྲོ་དང་མི་འགྲོ་ཡུངས་དཀར་ལ། །

1 ལྷ་དཔེར་། རྣམ་པར་ མེད།

2 བམེར་། གསལ་བཞིན་པ་

3 ལྷ་དཔེར་། (ལྷཡ་རྒྱལ་) ཤེས་བྱའི་རང་བཞིན།

4 ལྷ་དཔེར་། (བཟླ་བ་) དྲི་ཇེ་འཆང་།

གསང་བའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱིས་བདགས་¹ པའི།
 ཡེ་ཤེས་གནས་ནི་ཉམས་དགའ་བསྒྲུལ་² ཞེས་གསུངས་སོ།
 དཔལ་ལྗོངས་ཤིང་བདུད་རྩི་འབྲུང་བའི་རྒྱུད་³ ལས་ཀྱང་། ལྷ་མོའི་རྣལ་འབྱོར་འདི་
 བཞི་དང་⁴ ལྷན་པར་གསུངས་དེ།
 རིག་པར་མི་གཡོ་གནས་ནས་ནི།
 བདུད་རྩིའི་བསམ་གདན་བསམ་པར་⁵ དུ།
 བདུད་རྩི་ཐེགས་པའི་གཟུགས་ཀྱིས་ནི།
 དེ་ཉིད་མཆོག་གི་བསམ་གདན་དུ།
 ཉམ་མཁའི་དབུས་སུ་ཟུང་འདྲ་བའི།
 རྒྱུད་པའི་དེ་ཉིད་ཞེས་བྱར་བཤིང་།
 ཟད་མེད་ཉམས་མེད་ལྷ་བ་སྟེ།

1 བསམ་པར་བདགས་

2 རྒྱེ་བཀའ་ལྷན་པར་བསྒྲུལ་ ཙ་མ་ བ་ ༡ དགོངས་པ་ལྷང་བསྒྲུལ་ལས།
 གནས་མཁའི་དབྱིངས་ཀྱི་དབུས་གནས་པར་ཟུང་བའི་དཀྱིལ་འཁོར་བསྒྲུལ་པར་དུ།
 སངས་རྒྱུས་གཟུར་ནི་རྣམ་བསྒྲུལ་སྟེ། ལྷ་མོའི་རྣལ་འབྱོར་བརྒྱུད་པར་དུ།
 ལྷངས་ཀར་གྱི་ནི་འབྲུ་ཆད་ཙམ། ལྷ་མོ་རྩི་མོའི་བདག་ཉིད་ཙམ། །
 རྒྱུད་པའི་རྒྱུར་ཡང་དགོ་ལྷན་། དེ་རྩི་གནས་པར་མཁའ་པར་བསམ།
 རྒྱེ་བཀའ་ལྷན་པར་བསྒྲུལ་ ཙ་མ་ ༡ བསམ་པར་འདུས་པ་ལེའུ་བྱུག་པའི་ཆེགས་
 བཅད་བརྒྱུད་པ་དང་དགུ་ལ།
 3 རྒྱེ་བཀའ་ལྷན་པར་བསྒྲུལ་ ཙ་མ་
 4 རྒྱུད་པའི་ལྷན་པར་བསྒྲུལ་ (སྟེ་ལྷན་པར་) ལས་དང་ལྷན་པར་
 5 བསམ་པར་བདགས་

དོ་ཤེ་སེམས་དཔའ་མི་གཤིགས་པའོ། |

གེ་སར་གསང་བའི་སྤྱད་ཡུལ་ལ། |

ཉེ་བའི་དབུས་གནས་བཞུགས་པའི་ལྷ། |

སྒ་ག་ལིང་གའི་དབུས་གནས་ནས། |

ཁྱ་བའི་གཟུགས་ཀྱིས་འཛག་པར་འབྱུང་། |

ཞེས་སོ། །དེ་བས་ན་ངེ་ལྟར་བཞགས་པའི་རིམ་པ་བཞིན་དུ་འདིའི་རྣལ་འབྱོར་
དང་ལས་དག་བྱའོ།

གང་ཡང་ཁ་ཅིག་གི་སྤྱད་འདིར་གནས་བཞིར་འཁོར་ལོ་བཞི་བསྐྱེད་པས་གདུམ་མོ་
སྒར་བས་རང་གི་འཁོར་ལོ་བཞི་པོ་བསྐྱེད་པ་དང་། དེ་ལས་བྱུང་སྤྱེ་སྤྱོད་ནས་སངས་
རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་འཁོར་ལོ་བཞི་རྣམས་བསྐྱེད་ཏེ་ཞུ་བ་ལས་བྱུང་བ་སྒར་འོང་སྤྱེ་
བདེ་བ་ཆེན་པོའི་འཁོར་ལོ་ལྷ་ཞུགས་ནས་ཡི་གེ་རྟོ་ལས་བདུད་རྩི་འཛག་པར་
གཞན་དག་དུ་བཟུང་པ་དེ་ཐམས་ཅད་བདུས་ནས་འདིར་སྤྱོད་པར་བྱེད་པ་དེ་ནི་
རིགས་པ་³མ་ཡིན་ཏེ། དེ་དག་སྤྱོད་པའི་ཆོག་མེད་པའི་ཕྱིར་ལོ། རྒྱུད་ཐམས་ཅད་
ནི་མངོན་པར་རྟོགས་པ་སྤྱོད་ཆོགས་ཡིན་པ་དང་། རྒྱུད་འདིར་ནི་མངོན་པར་རྟོགས་

1 རྩེ་བཀའ་འོ། རྒྱུད་འོ། ཅེ་འོ། ༡༡ བ ལ

གཞུགས་ཤིག་མི་གཡོ་བར་རིག་སོ། །བདུད་རྩི་བསམ་གདན་བརྩམ་པར་བཤ། །དེ་བཞིན་ཉིད་
མཛོག་བརྩམ་པ་ནི། །བདུད་རྩི་ཐིག་ལའི་གཟུགས་ཅན་ཏེ། །མཁའ་ཡི་དབུས་སྤྱེ་ཞེ་འདྲ་བ། །
སྤྱོད་པ་དེ་ཉིད་ཆེད་དུ་བཞེད། །འཛག་མེད་ཟད་མེད་ལྟ་མོ་ནི། །དོ་ཤེ་སེམས་དཔའ་འཛམས་
བྱེད་པ། །ཉེ་བའི་དབུས་སྤྱེ་གནས་ལྷ་མོ། །སྤྱོད་པོ་གསང་བའི་སྤྱད་ཡུལ་ལ། །ཁྱ་བའི་གཟུགས་
ཀྱིས་ཐག་ནས་སྤྱེ། །སྒ་ག་ལིང་གའི་དབུས་དུ་གནས། །

2 གསེར་འོ། འཁོར་ལོར་བཞགས།

3 གསེར་འོ། རིག་པ་

གང་གང་དབང་པོའི་ལམ་ནས་ནི། |

དེ་དེའི་རང་བཞིན་སྐྱེ་བར་འགྱུར། |

མཚལ་དུ་ཕན་པའི་རྣལ་འབྱོར་གྱིས། |

སངས་རྒྱས་ཀྱི་རང་བཞིན་འབབ། ༣༡ |

པ་ཤིན་དུ་མདོར་བསྐྱས་པ་ཡིན་པའི་ཡང་ཕྱིར་ལྟོ ༣༡ |

གང་གང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ནི་བྱ་བ་གཞན་གསུངས་དེ། དབང་པོ་
ནི་མིག་ལ་སོགས་པའོ། །ལམ་ནི་ཡུལ་ཉིད་དོ། །སྐྱེ་བར་འགྱུར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐོབ་
པ་སྟེ། དངོས་པོ་གང་དག་མཐོང་བ་དང་ཐོས་པ་དང་། བསྐྱམས་པ་དང་།
མྱང་¹བ་དང་། རེག་པ་དང་། ཅི་ཡང་རུང་བ་དང་དེ་དག་ཐུམས་ཅད་
སངས་རྒྱས་ཀྱི་རང་བཞིན་དེ། དེ་དག་མ་ལུས་པ་སོ་སོར་སངས་རྒྱས་ཀྱི་རང་
བཞིན་དུ་ངེས་པར་བྱའོ། །ཇི་ལྟར་སངས་རྒྱས་ཀྱི་རང་བཞིན་ཞེ་ན། ངོ་པོ་ཉིད་
ཀྱིས་དེ། རང་བཞིན་དང་བཅོས་མ་མ་ཡིན་པ་ཞེས་བྱ་བའི་བར་དུ་སྟེ། འདི་
ལྟར་ཐོས་མ་དང་ཐ་མ་མེད་པའི་ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་ནི་ཆོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་
དེ། ཆོས་ཀྱི་དབྱིངས་དེ་ཉིད་ནི་སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་གྱི་མཚལ་
སྟེ། རང་བཞིན་དེས་འགྲོ་བ་རྣམས་²སངས་རྒྱས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་
ཡིན་ནོ། །རང་བཞིན་འབའ་ཞིག་གིས་ཀྱང་མ་ཡིན་དེ། མཚལ་དུ་གཞག་པའི་³

1 གསེར་པོ། མྱངས་

2 ལྟ་དཔེར་པོ། འགྲོ་བ་རྣམས་ མེད།

3 ལྟ་དཔེར་པོ། (པར་མཉམ་) ཙ་པར་པོ། མཚལ་དུ་གཞག་པ།

དམ་ཆིག་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་དང་། |
 རིལ་བྱ་ཆེན་པོའི་བསྐྱབ་པ་ཡང་། |
 ལྷ་འཕྲུལ་ཆེན་པོའི་རབ་སྦྱར་བའི། |
 རྣམ་པའི་སྦྱར་བ་བྱེད་པར་འགྱུར། 33

ནལ་འབྱོར་གྱིས་ཀྱང་ཡིན་ཏེ། མ་སྦྱོས་མོད་ཀྱི་ཀྱང་གི་སྤྱོད་བཞུག་བར་བྱའོ།
 མཆོག་ཅེས་བྱ་བ་ནི་འཛིག་ཅེན་ལས་འདས་པའི་ཡེ་ཤེས་སྦྱོས་པ་མེད་པ་དཔལ་བོ་
 ཞེས་བྱ་བར་གྲགས་པའོ། |དེས་གཞག་པ་ནི་བསྐྱེད་ཅིང་སྤྲུལ་པ་སྟེ།⁴
 དཔལ་བོའི་རྒྱུད་མཐུན་པར་འགྱུར་བར་བྱའོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་རྟོ། |དེའི་ནལ་
 འབྱོར་ནི་ལྷག་པར་མོས་པ་སྟེ། མིག་ལ་སོགས་པ་ལ་གཟུགས་ལ་སོགས་པ་འདི་
 དག་དཔལ་བོ་ཉིད་ཀྱི་རྒྱུ་མཐུན་པ་ཡིན་ནི་ཞེས་ལྷག་པར་མོས་པར་བྱའོ་ཞེས་བྱ་བའི་
 དོན་རྟོ། 33 |

དམ་ཆིག་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ནི་ཡང་བྱ་བ་གཞན་གསུངས་
 ཏེ། དམ་ཆིག་ནི་དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་ལྷ་རྣམས་སོ། |དེ་དང་བཅས་པའི་

1 ལྷ་ཆེན་པོའི་

2 ལྷ་སྦྱར་བར་

3 གསེར་ཞེས་པར་

4 ལྷ་དཔེར་ (རྟན་ཉིད་སྤྱོད་ཅིང་འབྱུང་བའི་) དེས་མན་པ་ནི་བསྐྱེད་ཅིང་བསྐྱབ་པ་སྟེ།

5 ལྷ་དཔེར་ དཀྱིལ་འཁོར་ མེད།

དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་བདག་པོ་ནི་དམ་ཆིག་ཆེན་པོའོ། དེའི་དངོས་གྲུབ་ནི་བསྐྱེད་པའོ།
 ཉི་ཞེས་བྱ་བའི་སྤྱ་ནི་ཆིག་ཁ་བསྐྱང་བའོ། །དངོས་གྲུབ་དེ་ནི་རིལ་བྱ་ཆེན་པོས་
 ལྷུབ་པ་སྟེ། རིལ་བྱ་ནི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཐིག་ལེ་སྟེ། ཐིག་ལེ་བཞི་བསྐྱར་
 བའོ། །དབུས་ཀྱི་ཐིག་ལེ་ནི་རིལ་བྱ་ཆེན་པོ་སྟེ། དེས་གྲུབ་པ་ནི་དམ་ཆིག་
 ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་དེ་བསྐྱེད་པའོ། །ཐིག་ལེ་བཞི་བསྐྱར་བ་བསྐྱེད་པའོ།²
 དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་དངོས་གྲུབ་དེས་ཅི་ཞིག་བྱ་ཞེ་ན། ལྷ་ལྷུལ་ཆེན་མོ་ཞེས་བྱ་བ་
 ལ་སོགས་པ་གསུངས་དེ། དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་བདག་པོ་དཔལ་ཉེ་རྒྱུ་ནི་ལྷ་ལྷུལ་
 ཆེན་མོ་ཡིན་ལ། དེའི་རིག་པ་སངས་རྒྱས་མཁའ་འགྲོ་མ་ཡང་ལྷ་ལྷུལ་ཆེན་མོ་
 སྟེ། དེ་དག་རང་བཞིན་གཅིག་པའི་ཕྱིར་རོ། །དེའི་རབ་དུ་སྐྱོར་བ་ནི་ཀུན་དུ་
 འཁྲུང་པ་དང་ཅུ་ཐུན་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དེའི་སྐྱོར་བ་དང་སྐྱོམ་པ་ཉམས་སུ་སྒང་
 བར་བྱ་སྟེ།³ དེ་ལ་ལྟེ་བའི་པད་མའི་ཀའི་རྒྱུ་ཉི་མ་དང་ཁྲི་བ་སྐྱོར་བའི་དབུས་
 སུ་ཐིག་ལེ་སྤྱ་མོ་དཀར་པོ་གནས་པ་ནི་སྐྱོར་བའོ། །སྐྱོམ་པ་ནི་བདེ་མཆོག་སྟེ།
 སོ་སོར་དབུགས་དང་རྣམ་པར་བཅད་པའི་མཐར་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་ལས་བྱ་བ་སྟེ།
 རི་མོའི་⁴སྤྱང་དུ་འབར་བའི་མཐར། ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་ཆིགས་སུ་
 བཅད་པས་ལྷ་ལྷུལ་གང་གསུངས་པའོ། ༣༣ །

1 གསེར་པོ། ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཐིག་ལེ་བཞི་བསྐྱར་བའོ།

2 གསེར་པོ། ལྷ་ལྷུལ་ཆེན་མོ་དམ་ཆིག་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་དེ་བསྐྱེད་པའོ།
 ཞེས་འདུག་པ་ལྟར་བསྐྱར། ལྷ་ལྷུལ་ཆེན་མོ་དམ་ཆིག་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་དེ་བསྐྱེད་པའོ།

3 ལྷ་ལྷུལ་ཆེན་མོ། (ཡོག་ཐུན་སྐྱོར་བའི་ལྷ་ལྷུལ་ཆེན་མོ་) ཞེས་འདུག་པ་བོད་དཔེར་ཆད།
 འདིའི་འཁྲུང་ལ་སྐྱོར་བ་དང་སྐྱོམ་པ་ནི་སྐྱོར་བ་ལྟར་ཞེས་ཞེས་པར་སྐྱོར་བའོ།

4 གསེར་པོ། རི་མོ་ ལྷ་ལྷུལ་ཆེན་མོ་ ཆིགས་ཀྱང་ཆེད་པ་བཞིན་ཞེས་ཞེས་པའོ།

མཚན་པ་ལྔ་དང་ཡང་དག་ལྟ། |

འདྲོད་པའི་ཡོན་ཏན་ལྔ་དང་བཅས། |

བསྐྱབ་པའི་དབང་པོ་ཤེས་བྱ་བ། |

དངོས་གྲུབ་ཤིན་ཏུ་རྟག་པའོ། ༣༥

ཅི་འདི་འབའ་ཞིག་ཀྱང་མ་ཞེས། . མཚན་པ་ལྔ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་
 སོགས་པ་གསུངས་ན། བཅུ་པོ་འདི་དག་ལྟན་ཅིག་ཅེས་བྱ་བའི་དོན་ནོ། །ཡི་
 ཤེས་ཀྱི་ཐིག་ལེ་སྟེ། མཁའ་འགྲོ་མའི་པད་མའི་ནང་དུ་བབས་པའི་ཐིག་ལེ་དེ་
 ལས་མེ་རྟག་ལ་སོགས་པའི་རྣམ་པ་བཅུའི་སྟོན་གྱིས་¹སོ་སོར་བྱུང་བར་རིམ་གྱིས་སྟོ་
 བར་བྱ་སྟེ། མེ་རྟག་དང་། བདུག་པ་དང་། མར་མེ་དང་། ཇི་དང་།
 ལྷ་བཤོས་རྣམས་ཀྱི་ཉེ་བར་སྟུང་པར་བྱ་བས་ན་མཚན་པ་ལྔའོ།² །མ་ཐོབ་པ་
 རྣམས་འདྲོད་ཅིང་དོན་དུ་གཉེར་བར་བྱ་བ་ཡིན་པས་ན་འདྲོད་པའོ། །ཐོབ་པ་
 རྣམས་ཡང་དང་ཡང་དུ་གོམས་པར་བྱ་ཞིང་སྟུང་པར་བྱ་བས་ན་ཡོན་ཏན་ནོ།
 འདྲོད་པ་ཡང་དེ་ཡིན་ལ་ཡོན་ཏན་ལྔ་ཡང་དེ་ཡིན་པས་ན་འདྲོད་པའི་ཡོན་ཏན་ནོ།
 བྱ་ཚོམ་པའི་གཟུགས་དང་། སྒྲ་དང་། ཇི་དང་། རོ་དང་། རེག་བྱ་རྣམས་སོ།
 དེ་ལ་སྟོམ་པས་ནི་གསང་བའི་མཚན་པ་དང་། དེ་ཁོར་ཉིད་ཀྱི་མཚན་པ་³བཞུག་
 ལ། ལྷག་མས་ནི་ཕྱིའི་མཚན་པ་བཞུག་ནོ། །དེས་ལྟ་རྣམས་མཉམ་པར་བྱས་

1 ལྟ་དཔེར་ (གཤམ་) རྣམ་མཁའ་

2 ལྟ་དཔེར་ མཚན་པ་ལྔ་ མེད།

3 ལྟ་དཔེར་ (རྟ་ལྟོ) རིན་པོ་ཆེའི་མཚན་པ་

གང་ཞིག་ཤེས་པའི་དངོས་གྲུབ་ཀྱིས། །

ལྷ་ཡི་གནས་སུ་ཕྱུར་བར་འགྱུར། །

དེ་ནི་བདག་གིས་བཤད་བྱ་སྟེ། །

ལྷ་མོ་བདེན་པར་ང་སྟོའི། ༣༥

པའི་དབུས་སུ་གསུངས་པ། ཐུབ་པའི་དབང་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སྐྱབས་པ་ལ་
ཤེས་བྱ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ངེས་པར་བྱ་བའོ། །ཉམས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཕྱག་རྒྱ་ཆེན་པོའི་
དངོས་གྲུབ་སྟེ་ཉམས་པ་མེད་པ་དང་། བྱིན་ཏུ་ཟད་པ་མེད་པའི་ཕྱིར་དྲི། དེ་
ཐོབ་པར་འགྱུར་རོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷག་མའོ། ༣༤ །

དེ་ལྟར་མདོར་བསྡུས་པའི་ཡན་ཡོན་དང་བཅས་པའི་བསྟོམ་པ་བསྟན་ནས།
ད་ནི་བསྟོམ་པ་དང་ཐུན་མོང་བའི་ཡན་ཡོན་དང་བཅས་པའི་བསྟོམ་པ་བསྟན་པའི་
ཕྱིར། གང་ཞིག་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སྐྱབས་པ་གསུངས་དྲི། ཤེས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རིག་
པའོ། །དངོས་གྲུབ་ཀྱིས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཉམས་སུ་སྒྲུངས་པས་སོ། །ལྷ་ཞེས་
བྱ་བ་ནི་ལྷ་རྣམས་སོ། །དེ་རྣམས་ཀྱི་གནས་ནི་ཡུལ་ལོ། །ལྷ་མོ་ཞེས་བྱ་བ་
ནི་སངས་རྒྱུས་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་འབོད་པའོ། །ཅི་འདྲི་བདེན་པ་ཁོ་ན་ཡིན་ཞེ་ན།
བདེན་པར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སྐྱབས་པ་གསུངས་དྲི། བདེན་པ་ཁོ་ནས་སྟོའི་རྣམ་
ཡང་བརྟན་པ་མ་ཡིན་ནོ་ཞེས་ངེས་པར་གཟུང་བའི་དོན་དྲི། ༣༥ །

1 ལྷ་མོ་བདེན་པར་སྟོའི།

2 ཐུ་དཔེར་གསེར་འབྲས་བྱ་

3 གསེར་ཡིན་ནམ་

སྐྱུ་འཕུལ་ཆེན་མོ་ཕྱོད་ལ་ངས། |

འཛིག་རྟེན་གསུམ་འགྲུབ་དེ་བཤད་བྲ། |

རྣལ་འབྱུང་ཆེན་མོ་རྣམས་ཀྱི་ནི། |

བཟང་པོའི་ཡི་གེའི་སྤེང་བ་རྣམས། ༡༦།

འོ་ན་ཡེ་ཤེས་དེའི་ལྷ་དེ་ལྷ་ནི་གང་ཞིག་ཡིན།² རུས་པ་ནི་ཅི་འདྲ།
 རང་བཞིན་ནི་གང་ཞིག་ཡིན་ནོ། ཕྱོད་ལ་ཞེས་ཀྱང་པ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ།
 ཕྱོད་ལ་ངས་བཤད་པར་བྱ་ཞེས་ཀྱང་བཤ། །འོག་ནས་བྱུང་བ་དང་འབྲེལ་རྟོ། །དེ་
 ལ་ལྷ་ནི་གང་ཞིག་ཡིན་ཞེས་ཀྱང་བཤེས་ལན་ནི་སྐྱུ་འཕུལ་ཆེན་མོ་ཕྱོད་དང་ང་ཞེས་ཀྱང་
 ཡིན་ཏེ་རིག་པ་ཞེས་ཀྱང་བཤེས་དོན་རྟོ། །མཐུ་ནི་ཅི་འདྲ་ཞེས་ཀྱང་བཤེས་ལན་ནི།
 འཛིག་རྟེན་གསུམ་འགྲུབ་ཅེས་ཀྱང་བཤུངས་སོ། །རང་བཞིན་ནི་གང་ཞིག་³ཡིན་
 ཞེས་ཀྱང་བཤེས་ལན་ནི། སྐྱུ་འཕུལ་ཆེན་མོ་⁴རྣམས་ཀྱི་ནི་བཟང་པོ་ཞེས་ཀྱང་བཤེས་
 ཏེ།⁵ བཟང་པོ་ཞེས་ཀྱང་བཤེས་ལན་ནི་འདིར་རྟོ་ཅིང་ཅི་བས་ན་བཟང་པོ་སྟེ། ཉི་མ་དང་
 རྩ་བ་ཁ་སྐྱར་བའི་སྒྲག་ཞེས་ཀྱང་བཤེས་དོན་རྟོ། །དེ་ཡང་རྣལ་འབྱུང་མ་རྣམས་ཀྱི་
 མཉམ་པ་ཉིད་དེ། དེ་ཉིད་ནི་རྣལ་འབྱུང་པ་རྣམས་ཀྱི་རྟོ་པའི་གནས་སོ།

1 ཕྱ་དཔེར་ ལྷ་དེ་ མེད།

2 གསེར་ ཡེ་ཤེས་དེའི་ལྷ་ནི་གང་ཞིག་ཡིན།

3 གསེར་ གང་ཡིན་ཡིན་

4 ཕྱ་དཔེར་ (མདུལ་གྱི་རྩྭ་) རྣལ་འབྱུང་པ་ཆེན་པོ་རྣམས་

5 ཕྱ་དཔེར་ (འཛིན་སྐྱོང་ལྷ་མོ་) འདི་ནི་དུག་པ་བསྐྱུས་པའོ།

6 ཕྱ་དཔེར་ སྒྲག་ མེད།

བཀ་ཞིག་བསམས་པ་ཙམ་གྱིས་ནི། |
 ལྷ་དང་མི་ལྷ་འབྲུལ་འབྲུར་བའོ། |
 འདྲིང་པས་ཀུན་ལ་ཉིར་སྦྱང་པ། |
 ཇི་ལྟར་འདྲིང་བཞིན་བསྟེན་པུས་ན། ༡༧
 རྒྱལ་འབྲུར་པ་ཆེན་ཏྲག་རྩལ་དེ། |
 རྩོམ་རྒྱལ་འབྲུར་མ་རྒྱམས་འབྲུག་² |
 རྒྱལ་པ་སྣ་ཆོགས་གཟུགས་སུ་ནི། |
 རྒྱལ་འབྲུར་བདག་ཉིད་སྟོན་པར་བྱེད། ༡༨

ཡི་གེའི་ཕྱིང་བ་རྒྱམས་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དབྱངས་དང་གསལ་བྱེད་ཀྱི་ཕྱིང་བ་རྒྱམ་པ་
 བསུམ་སྟེ། དེས་དཀྱིའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷག་མའོ། །དེའི་དབྱས་སུ་བྱུར་པ་ནི་
 དཔལ་བོ་སྟེ་དཔལ་དེ་རུག་ཡིན་ལ། ཁ་སྦྱར་དེ་ནི་སངས་རྒྱས་མཁའ་འགྲོ་མ་
 ཡིན་ནོ།³ ༡༩ |

བཀ་ཞིག་ཅེས་བྱ་བ་ནི་དཔལ་བོས་བྱིན་གྱིས་བཟབས་པ་སྟེ། དབྱངས་
 དང་གསལ་བྱེད་ཀྱི་ཕྱིང་བ་བསུམ་གྱིས་བརྒྱན་པའི་ཉི་མ་དང་ཟླ་བ་ཁ་སྦྱར་བ་ན་
 བཞུགས་པའོ།⁴ |བསམ་པ་ཙམ་གྱིས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བཟླས་པ་ཙམ་གྱིས་དེ།

1 ལྷ་འབྲུལ་གྱི་ཆེན་མོ་

2 ལྷ་འབྲུལ་གྱི་ཆེན་མོ་

3 ལྷ་དཔལ་འབྲུལ་ (ལྷ་དཔལ་འབྲུལ་གྱི་ཆེན་མོ་) སངས་རྒྱས་མཁའ་འགྲོ་མ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་དེ།

4 ལྷ་དཔལ་འབྲུལ་གྱི་ཆེན་མོ་

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཀུན་གྱི་དཔལ། །

དངོས་གྲུབ་ཆེན་པོ་སྟེར་བར་འགྱུར། །

བཅུད་ལེན་རྣམ་པ་སྣ་ཚོགས་ཀྱིས། །

རྟག་དྲུ་སེམས་ཅན་དོན་བྱེད་པའོ། ། ༣༧

བཞུག་པ་ཇི་ལྟར་བྱ་བ་ནི་ངེས་པར་བཞུག་པ་གཉིས་པ་ལས་འཆད་པར་འགྱུར་རོ།
 ལྷ་དང་མི་རྩུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཕྱི་རྣམས་ཀྱི་འཇིག་རྟེན་གསུམ་མོ། །འགྲུབ་ཅེས་བྱ་བ་
 ནི་དབང་དུ་འགྱུར་བའོ། །ཇི་ལྟར་འདོད་བཞིན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཇི་ལྟར་འདོད་པ་
 བཞིན་དུའོ། །བརྟེན་པ་སྟེས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣལ་འབྱུང་མའོ། །སྤྱི་ལོས་
 ཤེས་ན། རྟོ་ཇི་རྣལ་འབྱུང་མ་རྣམས་ཀྱིས་སོ། །རྣལ་འབྱུང་བདག་ཉིད་ཅེས་
 བྱ་བ་ནི་ཐུགས་ཀྱི་ལྷ་རྣམས་སོ། །སྟོན་པར་བྱེད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་དེས་མཐོང་བར་
 བྱེད་པའོ། ། ༣༨ - ༣༩ །

དངོས་གྲུབ་ཆེན་པོ་སྟེར་བར་འགྱུར། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣལ་ལྷན་དང་། མིག་
 སྟེན་ལ་སོགས་པའི་དངོས་གྲུབ་ཆེན་པོ་རྣམ་པ་བཅུད་སྟེར་བའོ། །དེ་བཞིན་
 གཤེགས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་དེ་བཞིན་ཉིད་རྟོགས་པས་ན་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་སྟེ།
 སངས་རྒྱུས་དང་བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའ་རྣམས་སོ། །དེ་རྣམས་ཀྱི་དཔལ་ནི་
 ཡུན་སྡུམ་ཚོགས་པའོ། །སེམས་ཅན་དོན་བྱེད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣལ་འབྱུང་པ་

1 གསེར་མོ། ལྷ་དང་མི་རྩུ་

2 ར་བར་མོ། བཞུག་

3 ལྷ་དཔེར་མོ། (ཞེས་པ་ཉམས་ཀྱི་) དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱི་

4 ལྷ་དཔེར་མོ། སེམས་ཅན་ མེད།

ཁྱེད་པ་དགུག་དང་ཆང་དང་ནི།
 བོང་བུ་ཆེན་པོ་དགུག་པ་ཉིད།
 ག་ཆེན་པོ་ནི་བཀུག་ནས་སུ།
 རྣལ་འབྱོར་མ་དང་ལྷན་ཅིག་སྟོད། ༣༠།
 ཆེ་རིང་བཙོན་འགྲུས་ཆེན་པོ་དང་།
 བཟི་བཞིན་ཆེ་ཞིང་སྟོབས་ཆེན་འགྲུས།
 ལྷ་ཡི་མིག་དང་རྩུ་འཕུལ་ལྷན།
 ཉིན་རེ་ལྷ་བ་འཕུང་བའོ། ༣༡།

དེ་ཉིད་གྲིས་སོ། ༣༢ །

ཆང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དགུག་པ་ཞེས་བྱ་བར་སྦྱར་པོ། ཆེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཆེ་
 བའོ། བཙོན་འགྲུས་ནི་སྟོ་བའོ། བཟི་བཞིན་ནི་མཐུའོ། ལྷ་ཡི་མིག་ནི་མིག་
 གི་རྣམ་པར་ཤེས་པའོ།¹ རྩུ་འཕུལ་ནི་རྩུ་འཕུལ་གྲིས་མངོན་པར་ཤེས་པའོ།
 ཁྱེད་པ་འཕུང་བ་ནི་བདུན་ཅི་འཕུང་བའོ། ཉིན་རེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཉིན་གཅིག་བཞིན་
 དུ་འཕུང་བ་²སྟེ། སྟོབ་པར་འགྱུར་རེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཆོགས་སུ་བཅད་པ་རངས་
 པའི་ལྷག་མའོ། ༣༠-༣༡ །

1 ལྟ་དཔེར་ཅི། (མཚན་ཀྱི་ལྷན་) ཆང་དགུག་པའོ།

2 བཟི་བཞིན་ཅི། མངོན་པར་ཤེས་པའོ།

3 ལྟ་དཔེར་ཅི། འཕུང་བ་ མེད།

དེ་ཡི་ཆེ་ནི་འཕེལ་འགྱུར་ཏེ། |
 བསྐྱལ་པ་ཆེན་པོའི་བར་དུ་གནས། |
 བཟ་བས་མི་ངོམས་ལུས་དང་ནི། |
 ཆོ་འཕུལ་དག་ནི་སྟོན་པར་བྱེད། 33།

ཆེ་མིང་ཞེས་བཟུང་པ་དེ་ཉིད་ཀྱི་ཉེ་བར་བཟུང་པ་ནི། དེའི་ཆེ་ནི་ཞེས་བྱ་
 བ་ལ་སོགས་པ་ཡིན་ཏེ། དེའི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣལ་འབྱོར་པའི་ལོ། །འཕེལ་ཞེས་
 བྱ་བ་ནི་མིང་དུ་རྒྱར་བའོ། །འགྱུར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐོབ་པའོ། །བསྐྱལ་པ་ཆེན་
 པོའི་བར་དུ་གནས་པ་གང་ལ་ཡོད་པ་དེ་ལ་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ། །ཆོ་འཕུལ་ཞེས་
 བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། འདིས་སེམས་ཅན་རྣམས་ཀྱི་ཡིད་སོ་སོར་འབྲོག་པར་
 བྱེད་པས་ན་ཆོ་འཕུལ་ལོ། །དེ་ཡང་རྣམ་པ་གསུམ་གྱི། རྒྱ་འཕུལ་གྱི་ཆོ་
 འཕུལ་དང་། ཀུན་བཟོད་པའི་ཆོ་འཕུལ་དང་། རྒྱུ་ལྡན་བཟུང་པའི་ཆོ་
 འཕུལ་ཏེ། གོ་མེས་བཞིན་དུ་རྒྱ་འཕུལ་གྱི་མངོན་པར་ཤེས་པ་དང་། གཞན་
 གྱི་སེམས་ཤེས་པའི་མངོན་པར་ཤེས་པ་དང་། ཟག་པ་ཟད་པའི་མངོན་པར་
 ཤེས་པ་སྟེ་དེ་དག་ཡིན་ནོ། །དེ་དག་བྱེད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་རྣལ་འབྱོར་པའོ། །བཟ་
 བས་མི་ངོམས་པའི་ལུས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མཐོང་བས་ཆོམ་པ་མེད་པའི་ལུས་ཏེ།
 སྟོན་པར་བྱེད་ཅེས་བྱ་བ་དང་འབྲེལ་ཏོ། ། 33 །

1 ལྟ་དཔེར་ (དར་ཡུལ་གྱི་ཡོན་) རྣལ་འབྱོར་པས་བཟུང་པར་བྱེད་དོ།

2 ལྟ་དཔེར་ དེ་དག་ རྣམ་ རྣལ་འབྱོར་པའི་བར་ མེད།

ཡིད་ལ་བསམས་མ་ཐག་དུ་ནི། |
 རང་གི་གཟུགས་ནི་ཡོངས་བཟུངས་གིང་། |
 བསྐྱབས་པས་འགྲུབ་པའི་དོན་ཡོད་པ། |
 རིག་མའི་དབང་ཕུག་ཏུ་འཕྲུལ་ཆེ། ༣༢
 རིག་པ་འཛིག་རྟེན་གསུམ་པོ་ན། |
 ང་ཡི་རིག་དང་མཉམ་པ་མེད། |
 སྤྱད་ན་མས་ཀྱན་གྱི་ལུང་འདི་ནི། |
 མཛེས་མ་ཁྱོད་ལ་བཤད་པ་ཡིན། ༣༣

རང་གི་གཟུགས་ནི་བདག་ཉིད་ཀྱི་ལུས་སོ། |ཡོངས་སུ་བཟུངས་ཞེས་བྱ་
 བ་ནི་གཞན་གྱི་གཟུགས་ཡོངས་སུ་འཛིན་པ་རྟེ། |ཡིད་ལ་བསམ་མ་ཐག་དུ་ཞེས་
 བྱ་བ་ནི་ཡིད་ལ་བཟོད་མ་ཐག་དུ་སྟེ། བདག་གཟུགས་འདིར་བྱའོ་སྐྱམ་པའི་
 རིས་ལའོ། ༡ཡན་ཡོན་གྱི་སྒྲོན་ནས་ཉེ་བར་བསྐྱབ་པ་བསྐྱན་པའི་བྱིས་པ། བསྐྱབས་
 པས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། བསྐྱབས་པས་འགྲུབ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་
 ད་ལྟར་སྟོག་བཞིན་པ་སྟེ། བསྐྱབས་པ་ཙམ་གྱིས་འགྲུབ་པ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་དོ།
 དོན་ཡོད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མཐུ་དང་ལྷན་པ་སྟེ། སྤྱད་པར་གྱུར་ན་ངེས་པར་ཇི་སྟངས་
 དུ་གསུངས་པའི་འབྲས་བྱ་སྟེར་བར་བྱེད་པས་ན་དོན་ཡོད་པའོ། ༣༣ |

རིག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཀྱང་རིག་པ་ཞེས་བོད་པའོ། ཁྱོད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་ཁྱོད་
 དང་མཉམ་པའི་རིག་པ་གཞན་ལ་མེད་པའོ། |འཛིག་རྟེན་གསུམ་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་

ནལ་འབྱོར་མའི་དབང་ཕྱུག་མའི་ཟིག་མ་ཆེན་མོ་ལས་དངོས་གྲུབ་གྱི་
མཚན་མ་བཞུག་པ་སྟེ་ལེའུ་དང་པོའོ། ॥

དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་དང་། རྡོ་རྗེ་དང་པད་མའི་ཟིགས་ནམས་སུའོ། །ལུང་
ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྐུ་བ་ཐབས་སོ། །མཛེས་མ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བོད་པའོ། ༡༥ །

ནལ་འབྱོར་མའི་དབང་ཕྱུག་ནི་ཐབས་གྱི་ཆས་སོ། །ཟིག་མ་ཆེན་མོའི་
ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཤེས་རབ་གྱི་ཆ་ཡིས་སོ། །དེ་དག་ཅི་ཞིག་ཅི་ན། སྐུ་འཕྱུལ་ཆེན་
མོའོ། །དངོས་གྲུབ་ནི་དེ་ཉམས་སུ་སྒྲངས་པའོ། །མཚན་མ་ནི་རྟགས་ཏེ་
མཐུ་ནམ་པ་དུ་མའོ། །དེའི་དོན་ངེས་པར་བཞུག་པ་ནི་བཤད་པའོ།
དཔལ་སྐུ་འཕྱུལ་ཆེན་མོའི་འགྲེལ་པ་ཡོན་ཏན་ལྷན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལས་ངེས་
པར་བཞུག་པ་དང་པོའོ། ॥

ངེས་པར་བསྟན་པ་གཉིས་པ།

དེ་ནས་དེ་ལས་རྣལ་འབྱོར་མའི་དབང་ཕུག་ཆེན་མོ་རྣམས་ཀྱི་
 སྒྱུར་བའི་དངོས་གྲུབ་ཀྱི་འབྲས་བུ་རབ་དུ་སྟེར་བའི་གསང་བའི་ཡི་གེ་
 བཟང་པོ་བཤད་པར་བྱ་སྟེ། ༡ །

དེ་ནས་དེ་ལས་རྣལ་འབྱོར་མའི་དབང་ཕུག་ཆེན་མོ་རྣམས་ཀྱི་ཡི་གེ་བཟང་
 པོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡི་གེ་བཅུ་གཉིས་ནི་ཀང་པ་གཅིག་པའི་ཆོགས་སུ་བཅད་པའོ། །དེ་
 ནས་དེ་ལས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བཟླས་པ་ཡོངས་སུ་
 རྫོགས་པར་བྱས་པའི་སྐབས་ཀྱི་དོན་དོ། །དེ་ལས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷའི་སྐྱབས་མས་
 པའི་རྗེས་སྐྱོགས་ལའོ། །རྣལ་འབྱོར་དབང་ཕུག་ཆེན་མོ་རྣམས་ཀྱི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་
 བཟང་པོ་ཞེས་བྱ་བ་དང་སྦྲར་དེ།¹ བཟང་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཔལ་བོ་དང་བཅས་
 པའི་དཔལ་བོའི་སྦྲད་དེ། ལྷེ་བའི་པད་མའི་ཀློག་ལ་བསམ་མོ་ཞེས་པ་ནི་ལྷག་
 མའོ། །འདིར་ཅི་ཞིག་བཟླས་པར་བྱ་བ་ཞེ་ན། གསང་བའི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་
 སོགས་པ་གསུངས་པ་ལ། སྒྱ་བར་བྱ་བས་ན་གསང་བ་སྟེ་མངོན་དུ་མི་འབྱུང་
 བའོ། །ཡང་ན་འདིས་ལྷའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་བསྐྱས་པས་ན་གསང་བ་སྟེ། གསང་
 བ་ཡང་དེ་ཡིན་ལ་ཡི་གེ་ཡང་དེ་ཡིན་པས་དེ་ལ་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ། །སྒྱུར་བ་ཞེས་
 བྱ་བ་ནི་ལྷའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་དོ། །དངོས་གྲུབ་ནི་རྫོགས་པའོ། །འབྲས་བུ་ནི་
 རྫོགས་པ་དེའི་སྐྱབས་མཐུན་པ་སྟེ། ཕུག་ཆེན་པོའི་དངོས་གྲུབ་པོ། །རབ་དུ་

1 ལྷ་དཔལ་མོ་ སྦྲར་དེ་ མེད།

2 རྗེ་ མེད།

གང་ཞིག་བསམས་པ་ཙམ་གྱིས་ནི། |
 རྣལ་འབྱོར་མ་མཚོག་སྒྲེར་འབྱུར་བ། |
 དང་པོའི་ཡི་གེའི་སྒྲུབ་བ་ཡིས། |
 ཉག་དུ་དབུགས་ནི་གཏང་བར་བྱ། ༩
 བརྒྱད་པའི་མཐའ་དང་ཡང་དག་ལྷན། |
 ཟུ་དང་ཐིག་ལེར་བཅས་པ་ཡིས། |

སྒྲུབ་བ་ནི་དེ་ཉིད་ཀྱི་ཁྱད་པར་དུ་སྒྲེར་བ་སྒྲེ། སྒྲུབ་པའི་དངོས་གྲུབ་ཀྱི་འབྲས་བུ་
 རབ་དུ་སྒྲེར་བའོ། ༡།

བསམ་པ་ཙམ་གྱིས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྒྲུབ་བ་འདིའི་དངོས་གྲུབ་མ་གཏོགས་
 པར་བརྒྲས་པ་ཙམ་གྱིས་ཀྱང་དོན་དུ་གཉེར་བའི་མཚོག་སྒྲེ་རིག་འཛིན་ལ་སོགས་པའི་
 མཚོག་སྒྲེ་སྒྲེར་བའོ། ཁ་སྒྲུབ་ཀྱི་དབུས་སུ་གསང་བའི་ཡི་གེ་བཟུང་ལ་དེའི་མགོ་
 བོར་དཔའ་བོ་གཞག་སྒྲེ་བརྒྲས་པ་དེ་ཉི་ཞེས་དགོངས་སོ། ཇི་ལྟར་བརྒྲས་པར་བྱ་
 ཞེ་ན། དང་པོའི་ཡི་གེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཡང་པོའི་ཡི་གེ་
 ནི་རབ་ཐུགས་ཏེ། ཐུགས་ཕལ་ཆེར་གྱི་དང་པོར་མཐོང་བའི་ཕྱིར་ན། དེའི་
 སྒྲུབ་བ་ནི་དལ་བར་བརྒྱད་པའོ། །དབུགས་བཏང་བ་ནི་སྒྲིག་སྒྲེར་དུ་འབྲོ་བའོ།
 བྱ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣལ་འབྱོར་པའི་ཞེས་བྱ་བ་དང་འབྲེལ་དོ།³ ༩ །

བརྒྱད་པའི་མཐའ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡི་གེ་ཉལ། ཟུ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་

1 ལྟ་དཔེར་ཅོད་ (༥) རིག་ཉིས་

2 ལྟ་དཔེར་ཅོད་ (༣༥) འདིར་དང་པོའི་

3 ལྟ་དཔེར་ཅོད་ (རིག་ཉིས་ ལྟ་དཔེར་ཅོད་ སྒྲུབ་པའི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་འབྲེལ་བའོ།

རྒྱལ་འབྱོར་པ་ཡི་དབུགས་རྒྱལ་བྱེད། །

དངོས་དང་དངོས་མེད་རྣམ་སྤངས་པའོ། །

པ་ལ། ཇི་ལྟར་ཉའི་འོག་དུ་སྐྱུར་ལ་ཉའི་མགོ་རྩི་ཐིག་ལེ་དང་བཅས་པར་བྱ་
བ་སྟེ་བསྐྱུས་པས་རྩྱུ་ཞིས་བྱ་བར་འབྱུར་རོ། ཇི་ལྟར་བྱའི་དབུགས་གཏོང་བར་རྒྱལ་
པ་ཡིན་ཞེ་ན། དངོས་དང་དངོས་མེད་དུ་སྤངས་པ། ཞིས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ།
གོ་རིམས་བཞིན་དུ་ཞིས་བྱ་བ་ནི་ལྷག་མའོ། ཇི་ལྟར་ཞི་བྱེད་ནི་ཡི་ཤེས་ཅམ་
སྟེ། དཔལ་གསུང་བ་འདུས་པ་ལས།

ཞི་ནི་ཡི་ཤེས་སྟོང་པོ་སྟེ། ཞིས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ། རྩྱུ་གོ་དོན་
ནི་སྐྱུ་དང་གསུང་དང་ཐུགས་སྤང་བ་མེད་པ་ཉིད་ཀྱིས་མཉམ་པ་ཉིད་དེ།

རྩྱུ་ནི་སྐྱུ་གསུང་ཐུགས་དོ་ཇི། །

གསུམ་པོ་མི་ཕྱེད་མཉམ་ཐོབ་པ།² ཞིས་གསུངས་པའི་ཕྱིར་རོ།

དེ་བས་ན་ཞི་བྱེད་སྟེ་ཆོགས་འདི་དག་སེམས་ཅམ་ཉིད་དུ་བསྐྱེད་པ་ལ་
བལྟས་པས་ནི་དངོས་པོ་རྣམ་པར་སྤངས་པའོ། སྟེ་ཆོགས་འདི་དག་སེམས་ཅམ་
པོ་དེ་ཉིད་དངོས་པོ་མེད་པ་སྟེ། སེམས་ལས་མ་གཏོགས་པའི་དངོས་པོ་མེད་
པའི་ཕྱིར་སྟེ་ཆོགས་པའི་སེམས་ཅམ་པོ་དེ་ཉིད་ཀྱང་སྤང་བ་མེད་པས་མཉམ་པ་ཉིད་
དུ་འཇུག་པར་རྩྱུ་གིས་སྟོན་པར་བྱེད་དེ། ཇི་ལྟར་བལྟས་པས་ནི་དངོས་པོ་མེད་པ་
རྣམ་པར་སྤངས་པའོ། འཛིན་འདིར་སེམས་ཅམ་དང་མཉམ་པ་ཉིད་ལ་འཇུག་

1 ཇི་བཀའ་ལྟར་ ལྷ་ལྷ་ ཙ་ ལྷ་ ལྷ་ ལྷ་

2 ཇི་བཀའ་ལྟར་ ལྷ་ལྷ་ ཙ་ ལྷ་ ལྷ་ ལྷ་

3 ལྷ་ལྷ་ལྷ་ (ཞེས་ ལྷ་ལྷ་) ཇི་ལྟར་དངོས་པོ་མེད་པ་དང་མེད་པ་

དེ་ལ་བརྟུལ་ཞུགས་མ་བཤད་དེ། ।

སྤང་བ་སྤྲུགས་དང་གཟུང་པ་དང་། ।

སྤྲིན་སྤྲེག་གི་ནི་ལས་རྣམས་ཀྱང་། ।

གཅིག་ནས་གཅིག་དུ་ཁྲོག་པར་འགྱུར། ར།

པ་རི་ལྟར་ལྟ་ཞིན།¹ འདིར་མན་ངག་ནི་རབ་སྤྲུགས་བཞིན་ནས་དཔའ་བོ་ལས་
 དབུགས་གདོང་བ་ནི་ལྷན་ཅིག་དུ་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་འོད་ཟེར་སྤང་དུ་རྒྱ་བར་བཟུངས་ལ། དེ་
 སྤྲིན་པས་སྤྲོ་ཚོགས་སངས་རྒྱས་ཀྱི་རང་བཞིན་དུ་བྱས་དེ། ས་བོན་གྱི་ཡི་གེ་
 བཞིན་ནས་²སྤྲོ་ཚོགས་སངས་རྒྱས་སུ་བྱས་པ་དེ་དག་རང་གི་ལྷན་རྣམ་པར་བསྐྱེལ་
 པ་ནི་སེམས་ཅམ་དུ་བཟོ་བའོ། །དེ་ནས་རྒྱ་བཞིན་པས་དབུགས་འཕྲུག་པས་ན་སྤྲོ་
 ཚོགས་དཔའ་བོ་ལ་བསྐྱེལ་བ་ནི་མཉམ་པ་ཉིད་དུ་འཕྲུག་པ་ལ་བཟོ་བའོ། །དེ་དག་
 གཉི་ག་ཡང་དལ་བས་ཡང་དང་ཡང་དུ་རི་སྤྲིན་དལ་བར་མ་གྱུར་གྱི་བར་དུ་བྱ་སྤྱོ།
 འདིར་ན་བརྒྱད་འདིར་བཟུངས་པའོ། ³ །

འདི་⁴ཚོགས་མེད་པར་ཉམས་སུ་སྤངས་པ་གསུངས་པ། དེ་ལ་ཞེས་བྱ་
 བ་ལ་སོགས་པ་ལ། དེ་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བཟུངས་པ་ལའོ། །བརྟུལ་ཞུགས་ཞེས་
 བྱ་བ་ནི་མི་སྤྲོ་བ་དང་། བྱས་དང་། སྤྲོང་མོ་ལ་སོགས་པའི་ངེས་པ་མེད་

1 མ་བཤད་དེ།

2 མ་བཤད་དེ།

3 གཉིས་པ་བཟུང་།

4 རྒྱ་དཔེར་། སྤྲོ་ཚོགས་དེ་དག་གསུངས་པ་མེད།

5 རྒྱ་དཔེར་། (༣༥) འདིར་

ཐུགས་དང་དབྱིབས་དང་ཚེས་བདག་ཉིད། །

སྒྲོར་བ་རྣམ་གསུམ་ཞེས་བྱ་སྟེ། །

ཡི་ཤེས་རྣམ་པ་གསུམ་གྱིས་ནི། །

སྤྲིད་པའི་ཉེས་པས་གོས་མི་འགྱུར། །

པའོ།¹ །སྤྲིང་བ་ཐུགས་²དང་བཟུང་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྟོག་གི་རྒྱུད་གིས། །ཐོག་
པར་འགྱུར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྒྱུད་གཞན་དག་ལས་འབྱུང་བ་འདིར་མི་དྲང་ཞིང་བསྐྱོག་
པར་བྱ་བའི་དོན་རྟོ། །གཞན་དང་གཞན་དག་³ཅེས་བྱ་བ་ལས་ཀྱང་གི་དོན་ལ་
བལྟ་བར་བྱ་སྟེ། དེ་ལས་གཞན་པའི་ལས་⁴ཐམས་ཅད་ཀྱང་བསྐྱོག་པར་བྱའོ་ཞེས་
བྱ་བའི་དོན་རྟོ། ། ར །

འོ་ན་བསྐྱས་པ་ནི་བཙུན་པ་ཡིན་ལ་འདིར་བསྐྱས་པ་འབའ་ཞིག་བཙུན་པར་
བྱ་བ་ཡིན་ནམ། འོ་ན་རྟེ་རྒྱ་དང་ཡི་ཤེས་ཀྱང་བསྐྱོམ་པར་བྱ་ཞེ་ན། དེའི་ཕྱིར་
ཐུགས་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སྟོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དེ་ཁོ་ན་ཉིད་ལ་དམིགས་པའི་
ཉིང་ངེ་འཇིན་ནི་རྣལ་འབྱོར་རོ། །རྣལ་འབྱོར་དེ་ཡང་རྣམ་པ་གསུམ་སྟེ། བྱེ་
བྱག་གསུམ་མོ། །གང་ལས་ཤི་ན། གང་གི་ཕྱིར་ཐུགས་དང་། དབྱིབས་
དང་། ཚེས་ཀྱི་བདག་ཉིད་ཀྱིས་སོ། །དེ་ལ་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་གསལ་བར་བྱེད་པའི་
ངག་ནི་ཐུགས་སོ། །ལྷ་འཕྲུལ་ནི་དབྱིབས་སོ། །ཐུགས་ཀྱི་དོན་གྱི་ཡི་ཤེས་ནི་

1 ལྷ་དཔེར་ (རྟེན་མཆོག) རིས་པའོ།

2 ལྷ་དཔེར་ (ཡན་ཤུ) འཕྲུལ་འཁོར་

3 ཙ་པར་ བཅེག་ནས་བཅེག་བྱ།

4 ལྷ་དཔེར་ (ལྷ་ལྷ) ལྷ་རྟེན་ལས།

དེ་ལྟར་རྒྱུ་དུ་རྣལ་འབྱོར་པ། |
 ཉམ་དུ་གོམས་པ་ཉིད་ཀྱིས་ནི། |
 རྩོམ་སེམས་དཔའ་དང་མཉམ་པའང་། |
 ཟླ་བ་གཅིག་གིས་དེ་འབྲུབ་འབྲུས། ༥

ཆོས་སོ། །ཡི་ཤེས་རྣམ་པ་གསུམ་གྱིས་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བཞུག་མ་ཐག་པའི་རྣལ་
 འབྱོར་རྣམ་པ་གསུམ་གྱིས་ཡིན་གྱི་བཤེད་པ་ཙམ་གྱིས་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །སྲིད་པའི་
 ཉེས་པས་གོམས་མི་འབྲུས། །ཞེས་བྱ་བ་ལ། སྲིད་པའི་ཉེས་པ་སྡེ་སྡིག་པ་ལ་
 སོགས་པ་རྣམས་ལས་གྲོལ་བར་འབྲུར་རེ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་དོ། ༥ །

དེ་ལྟར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣལ་འབྱོར་གསུམ་སོ། །རྒྱུ་དུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཉིན་
 རེ་ཞིང་ངོ་། །ཉམ་དུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐུན་མཆམས་སོ་སོ་ལའོ། །རྩོམ་སེམས་
 དཔའ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཔལ་ཉེ་རྒྱལོ། །མཚུངས་པ་ནི་དེ་དང་མཉམ་པའོ། །
 འང་གི་སྒྲས་ནི་རྩོམ་སེམས་འབྲེལ་མ་རྣམས་དང་ཡང་མཉམ་པའོ། །དེ་ཞེས་བྱ་བ་
 ནི་རྣལ་འབྱོར་མའོ། །འབྲུབ་འབྲུར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཚོགས་པར་འབྲུར་བ་སྟེ།
 དེ་ལ་འདིར་ཉེ་རྒྱལ་འམ་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་ཀྱི་སྒྲུར་དེའི་ང་རྒྱལ་གྱིས་བསྟོམས་
 ལ། རབ་ཐུགས་དང་རྩྱ་གི་དབུས་སུ་ཅ་བའི་ཐུགས་བཅུག་སྟེ་རིམ་གྱིས་དལ་
 བུས་བཤེད་དེ་ཐུགས་ཀྱི་དོན་ཉི་མ་དང་ཟླ་བ་ལ་སྒྲུར་བའི་ནང་དུ་ཆུད་པའི་རིག་པའི་
 ཡི་གེའི་ཐིག་ལེ་ལ་དཔའ་བའི་ཐིག་ལེ་གཞག་སྟེ། དེ་ལས་བྱུང་བའི་འོད་
 ཀྱིས་དངོས་པོ་ཐམས་ཅད་སངས་རྒྱས་ཀྱི་རང་བཞིན་དུ་བྱས་ནས་དེ་རྣམས་ཀྱིས་

1 རྒྱ་དཔེར་༠ (རྒྱན་ རྒྱུ་རྒྱུ་མ) ཡི་ཤེས་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་

2 རྒྱ་དཔེར་༠ (ཐུན) མགོ་བོ་ལ་

དབང་པོའི་མདོག་དང་ཡང་དག་ལྟ། །

དང་པོའི་ཡི་གེ་བསྐྱེམ་བྱ་སྟེ། །

རང་གི་རིག་པ་རབ་སྐྱར་ན། །

དེས་འདི་མོད་ལ་འགྲགས་པར་འགྱུར། །

རང་གི་ཡི་གེ་སྐྱེའི་རྣམ་པར་བྱས་ཏེ། དཔལ་པོའི་ཐོག་ལེལ་ཡང་དག་པར་
བསྐྱེམ་པས་ཐུགས་ཀྱི་དོན་རིག་པར་བྱའོ། །དེ་ལྟར་ཐུགས་དང་། དབྱིབས་
དང་། ཆོས་ཀྱི་རྣལ་འབྱོར་གྱིས་སྒྲ་བ་དྲུག་དུ་བསྐྱེམ་པ་བྱས་ན་འདྲ་བའི་དངོས་གྲུབ་
ཐོབ་པར་འགྱུར་སྟེ། །ཐོབ་ཀྱང་རུང་མ་ཐོབ་ཀྱང་རུང་སྟེ་རིག་པའི་ཡི་གེ་དང་
ཡང་དག་པར་རབ་དུ་ལྷན་པས་ལྷན་པས་ཇི་ལྟར་བཞེན་དུ་ཡང་དག་པར་བསྐྱེམ་
པར་བྱ་སྟེ། དེ་བས་ན་རིག་པའི་ཡི་གེ་དང་དེའི་རབ་དུ་སྐྱོར་བ་ཡང་དག་པར་
བསྐྱེམ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར། ༥ །

དབང་པོའི་མདོག་ཅེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། དབང་པོའི་སྒྲས་ནི་
ལྷམ་བུ་ཆུ་གཤེར་བསྐྱར་ཏེ། །དང་པོའི་ཡི་གེའི་ནི་རབ་ཐུགས་སོ། །དེ་བསྐྱེམས་
པ་ནི་གང་གིས་དགྲུག་པར་བྱ་བའི་དོན་དུ་རབ་དུ་སྐྱོར་རོ། །རིག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་
རིག་པ་དང་ལྷན་པའི་རྣལ་འབྱོར་པའོ། །དེས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣལ་འབྱོར་པས་སོ། །

1 མོ་ འགྲགས་

2 བྱ་དཔེར་ རང་གི་ མེད།

3 བསེར་ དཔལ་པོ་

4 བྱ་དཔེར་ (ཡུལ་སྐྱེམ་བྱས་) ཇི་ལྟར་རང་ཉིད་ཅེས་པར་དུ་

5 ཇི་བསྐྱེམ་ནང་དབྱག་ཅེས་འདྲུག་ཀྱང་བྱ་དཔེར་ (ཡུལ་སྐྱེམ་) དགྲུག་པ་ཞེས་པ་ལྟར་ལེགས་

ཡི་གེ་གཉིས་པ་དང་ལྷན་པ། |

བསམ་ཁིང་རྣམ་པར་བསྒྲུབ་ཀྱིས་ན། |

ས་གསུམ་པོ་ནི་མ་ལུས་པ། |

དེ་དག་ཐམས་ཅད་དབང་དུ་འགྱུར། །

འདི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བསྐྱབ་བྱའོ། །མོད་ལ་ཞེས་བྱ་བའི་ཉེ་བར་བཞག་པ་ནི་མུར་དུ་
 ཞེས་བྱའོ། །དེ་དག་གིས་འདི་སྐད་དུ། སངས་རྒྱས་མཁའ་འགྲོ་མ་ལ་སོགས་
 པའི་རྣལ་འབྱོར་གྱུར་གྱུ་གྱི་མདོག་ལྟ་བུ་བྱས་ལ། དཔལ་བོའི་སྒྲོན་དུ་གྱུར་གྱུ་
 གྱི་མདོག་ལྟ་བུའི་རབ་ལྗགས་བསམས་དེ། དེའི་ཐོག་ལེར་དཔལ་བོ་བཞེད་ལ་
 རབ་ལྗགས་གྱིས་དཔལ་བོ་ཡང་དམར་པོར་བསྐྱར་ནས་དཔལ་བོ་ལ་སོགས་པ་རི་
 མོ་གཉིས་ཕྱང་ནས་འོད་གཅིག་གི་ཅེ་མོར་ཞགས་པ་དང་གཉིས་པའི་ཅེ་མོར་ནི་
 ལྷགས་ཀྱི་བསམས་དེ་ཞགས་པས་བསྐྱབ་བྱའི་མགུལ་པ་བཅིངས་ལ་ལྷགས་ཀྱིས་
 རྟེན་གཤམ་ལྟ་བུ། མུར་དུ་འགྱུགས་པར་བསམས་ལ་སྐད་ཅིག་གིས་ཁྲགས་པར་
 འགྱུར་རོ་ཞེས་བཞག་པར་བྱའོ། ལ།

ཡི་གེ་གཉིས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དབྱངས་ཀྱི་ཡི་གེ་གཉིས་པ་སྟེ་ཞུའོ། །དེ་
 དང་ལྷན་པ་ནི་དེའི་མགོ་བོར་གཞག་པའི་དཔལ་བོའོ། །དེས་བསམ་པ་ནི་རང་གི་
 ལྷའི་རྣལ་འབྱོར་པས་བསྐྱབ་བྱའི་དུལ་ཕྱ་རབ་རྣམས་མདོག་དམར་པོར་བསྐྱར་བའོ།

1 གསེར་། ལྷ་དཔེར་། འོད་ཀྱི།

2 ལྷ་དཔེར་། (ཨ་རུ་ར་ལྷ་མི་) འོད་ཐེར་དམར་པོ་

3 གསེར་། ལྷ་དཔེར་།

ཆངས་དང་བྱུ་འཕྱུལ་དབང་པོ་དང་། །

དེ་བཞིན་དབང་པོ་འདོད་དབང་ཕྱུག །

ཡི་ཤེས་ཡི་ཤེས་བསྐྱེད་བྱས་ན། །

དེ་དག་ཆུང་མར་བཅས་ཏེ་འགྲུགས། །

ནམ་པར་བསྐྱེད་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བསྐྱེད་བྱ་ནམ་པ་དུ་མ་²སྟེ་གང་འདོད་པ་ལོ། །དེ་
དག་ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་བསྐྱེད་བྱ་ལོ།³ །ས་གསུམ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སྟོན་པ་
ལ། འདིར་ཡང་དང་ཡང་ཞེས་བྱ་བ་འདི་དོན་བཟུང་བར་བྱ་སྟེ། འཇིག་རྟེན་
གསུམ་པོ་མ་ལུས་པ་ཡང་དམ་དུ་འགྱུར་ན། སྟོན་ཆགས་བརྒྱ་དང་སྟོང་ལྟ་སྟོན་
ཀྱང་ཅི་དགོས་ཞེས་བྱ་བ་འདི་དོན་དོ། །འདི་དག་གིས་ཀྱང་འདི་སྐད་དུ་ལྟ་བུ་གི་
ནང་ནས་གང་ཡང་རུང་བའི་རྣལ་འབྱོར་ཇུག་གི་ཀུན་ལ་ལྟར་དམ་པ་བྱས་ལ།
ཡི་གེ་ལྟ་ཇུག་གི་ཀུན་ལ་ལྟར་དམ་པ་བ་ཁ་སྟོར་དུ་བཀོད་དེ། དེའི་མགོ་བོར་དཔལ་པོ་
བཀོད་ལ་དེ་ཉིད་ཀྱིས་མདོག་བསྐྱར་དེ། དེ་ཉིད་ཀྱི་འོད་ཟེར་གྱིས་བསྐྱེད་བྱའི་རྣལ་
སྤྲུལ་རབ་རྣམས་བཅོས་ལ་ཀྱང་པའི་དྲུང་དུ་འབྱེལ་བར་བསྐྱེད་པ་ཏེ་དབང་དུ་གྱུར་པར་
བསམས་ན་དེས་ནི་ཐམས་ཅད་དབང་དུ་འགྱུར་པ་ཞེས་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ། །

ཆངས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སྟོན་པ་ལ། འདོད་དབང་ཕྱུག་ཅེས་བྱ་བ་ནི་
བདུད་དོ།⁴ །མི་ཟད་པས་ན་ཡི་གེ་སྟེ་ཐུགས་དོ་ཇི་ལོ། །དེའི་གསང་བའི་ཡི་

1 མོ བྱས་ནས་

2 ཕྱ་དཔེར་མོ (བོནྩ) ཆོ་ག་

3 ཕྱ་དཔེར་མོ (བོནྩ) བསྐྱེད་བྱའི་ཡན་ལག་

4 ཕྱ་དཔེར་མོ (ཞེ་ཉི་ཤ་ལྟ་ལྟ་ལྟ་) འདིར་ཆངས་པ་ལ་སྟོན་པ་དགྲུག་པ་ལོ།

ཡི་གེ་ཨ་དང་ཡང་དག་ལྟ། |

སྐྱུ་གསུང་ཐུགས་ལ་ལྷགས་གནས་པ། |

སྦྱོར་བ་རྣམ་གསུམ་བསྒྲམ་བྱས་ན། |

གོང་བྱ་འབྲུགས་པའི་མཆོག་ཡིན་ནོ། ༡༠།

གཞི་ཡང་ཡི་གེའོ། །གཞུང་ཁ་ཅིག་ལས་ནི་ཡི་གེས་ཡི་གེ་ཞེས་འབྱུང་སྟེ། ཡི་གེས་ནི་དཔའ་བོ་སྟེ། འདྲི་ཡི་གེའོ། །གཉིས་ཀྱི་ལྟ་རྒྱུ་ཡང་ཡི་གེ་རྒྱུ་ལ་བྱའོ། །དེ་ཡང་དགུག་པ་ལ་ནི་ཇའི་ཀུསུམ་ལྟར་དམར་བའོ། །དེས་བསྐྱུལ་བ་ནི་སྦྱང་ཅིང་གཏོང་བའོ། །རི་ལྟར་བསྐྱུལ་བར་བྱ་ཞེ་ན། དགུག་པའི་ཆོ་ག་དང་པོའི་སྦྱོར་བས་སོ། །གཞན་དག་ནི་རྒྱུ་གིས་དབྱགས་ནང་དུ་གཞུག་པས་དགུག་གོ་ཞེས་ཟེར་སྟེ། ཁ་ཅིག་ན་རེ་རྒྱུད་འདྲི་ལ་དཔའ་བོ་ལས་བྱུང་བའི་འདྲ་སྒྲུང་པོ་ཆེའི་སྦྱ་ལྟ་བུས་དགུག་པའི་སྦྱོར་བ་བྱའོ་ཞེས་ཟེར་སྟེ། ༩ །

གོང་བྱ་དགུག་པའི་མཆོག་གསུངས་པ། ཡི་གེ་ཨ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ཨ་དང་ཡི་གེ་ནི་ལྷན་དབྱེ་བའོ། །དེ་དག་དང་ཡང་དག་པར་ལྟན་པ་ནི་ཨའམ་ཡི་གེ་རྒྱུ་དང་ཡང་དག་པར་ལྟན་པའི་སྐྱུབ་པ་པོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་རྟོ། །རྣམ་པ་གསུམ་པ་དང་སྦྱོར་བ་ནི་སྦྱོར་བ་རྣམ་པ་གསུམ་མོ། །སྐྱུ་གསུང་ཐུགས་ལ་ལྷགས་གནས་པ། ཞེས་བྱ་བ་ནི་བསྐྱུབ་པར་བྱ་བའི་ལུས་དང་། མགྲིན་པ་དང་། སྤྱིང་ག་དག་དུ་གནས་པའོ། །དེས་ཀྱང་འདྲི་སྒྲུང་དུ་ལྟ་བུ་གི་ནང་ནས་ཇའི་ཀུསུམ་ལྟ་བུ་གང་ཡང་བྱུང་བའི་རྣལ་

1 ལྟ་དཔེར་ཅོ། (ལྟེན་ལྟར་སྟེ།) ས་པོན་ཀྱི་ཡི་གེ་

2 ལྟ་དཔེར་ཅོ། (ས་པོན་ཀྱི་ལྟ་) ཐམས་ཅད་དགུག་པའི་

ཡི་གེ་ཁྲི་དང་ཡང་དག་ལྟ། །

སྐྱ་མདོག་དམར་པོ་ཞལ་བཞི་པ། །

ལག་ན་ཐོད་པ་ཆགས་པའི་བདག །

ཁྱ་བ་འགྲུགས་པའི་མཆོག་ཡིན་ནོ། ༡༡།

འཁྱོར་བྱས་ལ། ཁ་སྐྱར་གྱི་ནང་དུ་ལྷ་འཕྲུལ་ཡི་གེ་རྒྱ་གཞི་མགོ་དང་ཐོག་ལེར་དཔའ་
 བོ་བཞོད་ལ་ཡོ་ལས་བསྐྱེད་པའི་རྒྱུད་གི་དགྲིལ་འཁོར་ལ་བསྐྱབ་བྱ་བསྐྱེན་དེ།
 དཔའ་བོའི་འོད་ཟེར་གྱི་རིམ་དམར་པོ་གཉིས་ཀྱིས་²ཅུ་མོའི་ཞགས་པ་དང་ལྷགས་
 ཀྱུ་དག་གི་གོ་རིམས་བཞིན་དུ་མགྲིན་པ་བཅེངས་པ་དང་། སྤྱིང་ག་ཡུག་སྤེ་བར་
 སྤང་ལས་མུར་དུ་འགྲུགས་པར་བསམས་ན་སྤྱད་ཅིག་གིས་ཁྲུགས་པར་འགྱུར་རོ་
 ཞེས་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ།³ ༡༠ །

ཡི་གེ་ཁྲི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། དེ་དག་གིས་ཀྱང་འདི་སྤྱད་དུ།
 ཡི་གེ་ཁྲི་ལས་སྐྱ་མདོག་དམར་པོ་ཞལ་བཞི་ལ་ཡུག་ན་ཐོད་པ་བསྐྱམས་པ་ཆགས་པའི་
 བདག་ཉིད་དེ་སེམས་ཆགས་པ་དང་ལྟན་པར་བསྐྱམས་ལ། མགོ་བོར་⁴བཞོད་
 པའི་དཔའ་བོ་ལས་འོད་ཟེར་སྐྱ་གུའི་གཟུགས་ཅན་བསྐྱབ་བྱའི་གསང་བར་ལྷགས་དེ་
 ཁྱ་བས་བཀང་ནས་ཐོད་པར་དྲངས་པར་བསམས་ན་སྤྱད་ཅིག་གིས་ཁྱ་བ་ཁྲུགས་པར་
 འགྱུར་རོ་ཞེས་སྟོན་དོ། ༡༡ །

1 འབྲེལ་པར་དཀར་པོ་

2 གསེར་གྱི་

3 ལྷ་དཔེར་བསྟན་པ་ཡིན་ནོ་མེད།

4 དཔེར་ལྷ་དཔེར་ཁྲིའི་མགོ་བོར་

ཡི་གེ་ཅི་དང་ལྷན་པ་ཡིས།	
ཁ་དྲོག་སེར་པོ་ཀྱན་དུ་འོད།	
རྟ་ཡི་ཞལ་གྱི་ཚུལ་བྱས་ན།	
ཆང་འཁྱལ་གས་པ་ཡི་དམ་པ་ཡིན།	༡༣།
ཡི་གེ་ར་དང་ཡང་དག་ལྷན།	
ཁ་དྲོག་དམར་པོ་འོད་ཆེན་པོ།	
ཕྱག་བཞི་པ་དང་ཞལ་བཞི་པ།	
ཅི་སྤྱང་ཚུལ་དུ་ལེགས་གནས་པ།	༡༣།

ཡི་གེ་ཅི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། ཡི་གེ་ཅི་ཐུང་དུ་ལས་མདོག་སེར་
 པོ་འོད་ཟེར་སེར་པོ་དང་ལྷན་པ་རྟ་ཡི་ཞལ་ཅན་བསམས་ལ། ཡི་གེ་ཅིའི་མགོ་
 བོར་གནས་པའི་དཔའ་བོའི་འོད་སྤྱང་པོ་ཆེའི་སྒྲ་ལྟ་བུས་ཆང་སྤྱང་ཆང་གིས་བཀང་
 བྱས་དངས་ཏེ་སྤྱང་གང་བར་བསམས་ན་སྤྱང་ཅིག་གིས་གང་བར་འཕྱར་རོ་ཞེས་སྒྲ་
 ཏོ། ༡༣ །

ཡི་གེ་ར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པས་ཀྱང་ཡི་གེ་ར་ལས་མདོག་དམར་པོ་ཕྱག་
 བཞི་ལ་ཅི་སྤྱང་གི་ཞལ་བཞི་དང་ལྷན་པ་གཟི་བུ་ཆེ་ཆེང་ཁྲོ་བའི་བདག་ཉིད་ཅན་དུ་
 བསྐྱེད་མས་ལ། རྒྱ་མ་བཞིན་དུ་འོད་ཟེར་སྤྱན་པོ་པད་མའི་གཟུགས་ལྟ་བུར་

1 རྩེ་ཆག

2 བསེར་འོད་

3 བསེར་འོད་ སྤྱན་པོ་

ཁྲོ་པའི་མེམས་ཀྱིས་བསྐྱེད་པུས་ན།	།
ཐུག་འབྲུགས་པ་ཡི་དམ་པའོ།	།
ཡི་གེ་དྲུག་དང་ཡང་དག་ལྟ།	།
གནས་དྲུག་དུ་ནི་ངེས་སྒྲུར་བྱ།	༡༥།
རྣལ་འབྱོར་མཁའ་འགྲོ་མ་ཡི་ཚྭ་གས།	།
དོ་རྩེ་རྣལ་འབྱོར་མ་རྣམས་འབྲུག།	།
མིག་གཉིས་དང་ནི་རྣ་བ་དང་།	།
དེ་བཞིན་སྣ་དང་ཡིད་ཉིད་དག	༡༥།

སྒྲོས་པས་བསྐྱབ་བྱའི་ལུས་ལས་ཐུག་འབྲེན་བཞིན་པར་བསྐྱེད་པ་སྣ་མ་བཞིན་དུ་
འབྱུང་རོ། ༡༩ ༡/༣ །

དེ་ལྟར་རིག་པའི་ཡི་གེ་དྲུག་གི་སྐབས་སུ་རང་གི་ལྷའི་རྣལ་འབྱོར་གྱི་ཡན་
ལག་དྲུག་ལ་དགོད་པ་ཡང་བསྐྱེད་པའི་ཕྱིར། ཡི་གེ་དྲུག་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སྐབས་
པ་གསུངས་ན། ཡི་གེ་དྲུག་དང་བསྐྱེད་མ་ཐག་པའི་རིག་པའི་ཡི་གེ་དྲུག་གོ། དེ་
དང་ཡང་དག་ལྟ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ངེས་སྒྲུར་བྱ་ཞེས་བྱ་བ་དང་སྒྲུར་ན། རང་གི་
ལྷའི་ལུས་ལ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷག་མའོ། །ཁང་དུ་ལྟན་པ་ཡིན་ཞེ་ན། གནས་དྲུག་
དུ་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ན། ཡན་ལག་དྲུག་དུ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་རྟོ། །དེ་ལྟ་བུས་

1 མེམས་ཁྲོ་པའོ།

2 ཐུ་དཔེར་ (ཡིད) ལྷུ་

སང་གི་རྒྱལ་འབྱོར་འཕྲུག་གྱུ་ཡི།
རྒྱལ་འབྱོར་པ་ཡིས་བཅིང་བར་བྱ།

|
|

ནི་དོ་ཇི་རྒྱལ་འབྱོར་མ་རྒྱལ་སྤྱུ་པར་འབྱུར་གྱི་གཞན་དུ་ནི་མ་ཡིན་ནོ།
དེ་ལ་དོ་ཇི་དཔལ་ཉེ་རུ་གྱུ།
སོ། །ཡང་ན་¹རྒྱལ་འབྱོར་ནི་དཔལ་ཉེ་རུ་གྱུ། །མཁའ་འབྲོ་མའི་བདེ་
མཚེག་ནི་རྒྱལ་འབྱོར་མ་དེ་རྒྱལ་སྤྱུ་པར་འབྱུར་གྱི་སྤྱོད་པ་ལས་བྱུང་བའི་བདེ་བའི་
མཚེག་དང་ལྷན་པས་སོ། །གནས་དུག་པོ་²བཞག་པ་དེ་ཉེ་བར་བཞག་པའི་ཕྱིར་
མིག་གཉིས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། །ཡིད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་སྤྱོད་
གའོ། །དང་གི་སྤྱུ་མ་ནི་ལྷེ་དང་ལུས་ཀྱང་གཟུང་ངོ། ༡༥ - ༡༥ །

རྒྱལ་འབྱོར་རྒྱལ་པ་གཞན་གསུངས་པ། སང་གི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་
ལ། སང་གི་ནི་དཔལ་པོ། །དེའི་རྒྱལ་པར་རྩོལ་པ་གང་ལ་ཡོད་པ་དེ་ལ་དེ་
རྒྱལ་ཅེས་བྱུ། །ཕྲུག་གྱུ་ནི་མ་དང་ལྷ་པ་ཁ་སྤྱུར་བར་བྱུ། །བཅིང་བར་བྱ་
བ་ནི་ཡི་གེའི་ཕྱིང་བ་གསུམ་གྱིས་ལྷ་པ་བཞག་པ་བཞིན་དུ་བཅིངས་པར་བསམ་པའོ།

1 རྩོལ་རྩོལ་

2 གསེར་མ་

3 གསེར་མ་ མེད།

4 བར་དོ་ཇི་རིགས་ཀྱི་མཁའ་འབྲོ་མ། ལྷ་མོ་ཆེན་རིགས་ཀྱི་མཁའ་འབྲོ་མ། ལྷ་པ་པད་མ་རིགས་
ཀྱི་མཁའ་འབྲོ་མ། བྱང་ལས་ཀྱི་རིགས་ཀྱི་མཁའ་འབྲོ་མ། དབུས་སངས་རྒྱལ་རིགས་ཀྱི་མཁའ་
འབྲོ་མ།

5 གསེར་མ་ ཡང་ན་ མེད།

6 ལྷ་པ་པད་མ་ (རྩོལ་པ་པད་མ་) བདེ་བའི་གནས་དུག་

སྲོག་དང་ཚྱུ་ལ་བ་བསྐྱམས་ནས་སུ།
 བསྐྱམས་ཀྱི་སྐྱོད་ཅིག་དེ་ལ་འབར། ༡༥།
 འོག་མིན་སྲིད་པའི་མཐར་ཐུག་པར།
 རྒྱ་དང་མི་རྒྱུ་འཇིག་རྟེན་བདུན།
 ཐམས་པཅད་ཀྱིས་ནི་དེ་བསྐྱམས་ཀྱང་།
 དེ་ནི་རྟོག་ཡུལ་མ་ཡིན་ནོ། ༡༦།

རྒྱལ་འབྱོར་པས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷ་མོ་བཞིས་ཡོངས་སུ་བསྐྱོར་བའི་དཔལ་ཉེར་ཀྱི་
 རྒྱལ་འབྱོར་ལ་གནས་པའོ། །སྲོག་དང་ཚྱུ་ལ་བ་ནི་དབུགས་དབྱུང་བ་དང་འཇུག་
 པའོ། །བསྐྱམས་ནས་སུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རིམ་གྱིས་ཤིན་ཏུ་སྤྱོད་པར་བྱས་པས་
 ཤིན་ཏུ་གནས་པར་འབྱུར་རོ། །བསྐྱམས་ན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷ་བའི་བྱ་ག་ནས་
 དཔལ་བོ་དེ་ཉིད་ལ་བལྟ་བཞིན་པས་བསྐྱམ་པའོ། །སྐྱོད་ཅིག་དེ་ལ་འབར་ཞེས་
 བྱ་བ་ནི་དཔལ་བོ་ལ་སེམས་བདུན་པ་ལས་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་མེ་ཏུང་ལྷང་ཞིང་འབར་བ་སྟེ་
 སྐྱང་བར་བྱེད་དོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ནོ། ༡༥ །

རི་སྐྱོད་དུ་སློབས་པར་འབར་ཞེས་བྱ། འོག་མིན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་
 པ་གསུངས་ནི། ས་འོག་དང་། ས་སྐྱང་དང་། བར་སྐྱང་དང་།
 བསམ་གདན་དང་པོ་དང་། གཉིས་པ་དང་། གསུམ་པ་དང་། བཞི་པ་

1 རྒྱ་བསྐྱམ་

2 རྒྱ་རྟོགས་

3 བསམ་པ་བཟུན་པ་

གལ་ནི་ཐམས་ཅད་རབ་རྟོགས་ན། |

འགྲོ་བའི་རྩ་པ་རྣམ་པར་འཇིག |

རྣམས་ཡང་དག་པར་བསྐྱུས་པས་ནི་འཇིག་རྟོན་བདུན་མོ།¹ |བསམ་གཏན་
གསུམ་པོ་ནི་སོ་སོར་རེ་རེ་ཡིན་ལ། བསམ་གཏན་བཞི་པ་ལ་གནས་གཞན་
བརྒྱད་པ་ནི་འོག་མིན་རྟེ། དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་གསུངས་པའི་འོག་མིན་གནས་ཀྱི་
མཐར་ཐུག་པ་ཞེས་སོ། |དེ་ལ་རྩ་བ་ནི་སེམས་ཅན་མོ། |གཞལ་མེད་ཁང་ལ་
སོགས་པའི་གནས་ནི་མི་རྩུ་བའོ།

ད་ནི་དཔའ་བོ་དེ་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་ཀྱི་སྒྲུང་བཞིན་དུ་མཐོང་བར་³
བཞུག་པར་བཞེད་ནས། ཐམས་ཅད་ཀྱི་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ།
ཐམས་ཅད་ཀྱི་ནི་སེམས་ཞེས་པ་སྒྲེ་སེམས་ཅན་ཐམས་ཅད་དོ། |དེ་བསྒྲེམས་
ནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་འདྲིས་པར་བྱས་པ་སྒྲེ། རང་གི་སེམས་ཉིད་དེ་དང་དེ་དག་དུ་
སྒྲུང་བའི་ཕྱིར་སྟོ། |དེ་ནི་རྟོགས་པ་མ་ཡིན་ན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་
མཐོང་བ་མ་ཡིན་ཏེ། བྱིས་པ་རྣམས་ལ་དེའི་ཡང་དག་པ་མ་ཡིན་པའི་ངོ་བོ་
སྒྲུང་བའི་ཕྱིར་སྟོ། ༡༩ - ༡༧ |

འགྲོ་བའི་རྩ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྒྲུ་ཆོགས་སུ་རྩོམ་པ་སྒྲེ། དེ་དང་དེའི་རྣམ་
པ་གཉིས་སུ་བརྟག་པའི་ཕྱིར་སྟོ། |རྣམ་པར་འཇིག་ཅེས་བྱ་བ་ནི་གལ་ནི་ཀུན་
བྱིས་རྟོག་ན་ནི་འགྲོ་བའི་རྩ་པ་དང་པོ་ཉིད་ནས་ཞིག་པར་འགྱུར་ན་ད་ལྟར་གྱི་བར་

1 ལྟ་དཔེར་། (རྟུམ་ཀུན་རྟོག་བཏན་ བཏན) འཇིག་རྟོན་གསུམ་མ་མིང་བཞིན་

2 བསམ་ར་། འོག་མིན་གནས་གཞན་བརྒྱད་པའི་འོག་མིན་རྟེ།

3 བསམ་ར་། མ་མཐོང་མཐོང་བར་

4 བསམ་ར་། དེའི་

དེ་ཕྱིར་ཡི་ཤེས་འདི་གསང་ཞིང་། །

མི་གསལ་ཡི་གེ་མེད་པའོ། ། ༡༥།

གང་ཕྱིར་སངས་རྒྱལ་རྣམས་ཀྱིས་མཁྱེན། །

རྣལ་འབྱོར་གཉིད་དང་ཡང་དག་ལྟ། །

གོང་བྱར་སོང་བའི་ཡིད་དེ་ཡིས། །

གཟུགས་གཅིག་དུ་ནི་སྒྲུབ་པར་བྱེད། ། ༡༦།

དུ་དེ་ལྟར་ནི་མ་ཡིན་ནོ། །གང་གི་ཕྱིར་དེ་ལྟ་བུ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཡི་ཤེས་འདི་གསང་
 ཞིང་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ནི། ཡི་ཤེས་ནི་གཉིས་སུ་མེད་པའི་དེ་ཁོ་ན་ཉིད་དཔལ་
 བོ་ཞེས་བྱ་བའོ། །གསང་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བྱིས་པ་རྣམས་ལ་སྤྲུལ་པའོ། །
 གང་གིས་ཤེ་ན། ཡང་དག་པ་ཡིན་པའི་ངོ་བོ་མ་མཐོང་བའི་འབྲུལ་པ་རྣམས་
 ཀྱིས་སོ། །ཡི་ཤེས་དེ་³ཅི་འདྲ་ཞེ་ན། མི་གསལ་ཡི་གེ་མེད་པ་ཞེས་
 གསུངས་ནི། ངག་གི་ཡུལ་ལས་འདས་པའི་ཕྱིར་ན་མི་གསལ་བའོ། །ཡིད་
 ཀྱིས་བརྗོད་པའི་ཡུལ་མ་ཡིན་པའི་ཕྱིར་ཡི་གེ་མེད་པའོ། ༡༥ །

འོ་ན་དེའི་དོན་དམ་པ་དེ་སྤྲུལ་ཤེས་ན། སངས་རྒྱལ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་
 སྤྲུལ་པ་གསུངས་ནི། ཉི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རིམ་པ་བཞིན་དུ་སྤྲུལ་བས་ངས་པར་
 གཟུང་བའི་དོན་ནི། དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་ཉིད་ཀྱིས་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་དོ། །འོ་
 ན་དེ་བཞིན་གཤེགས་པ་རྣམས་ཀྱིས་ཀྱང་རང་བཞིན་དེ་ཕྱིས་གཟིགས་ན་ནི་གཞན་

1 མེད་པའོ་ དེ་ཡིད་

2 ལྷ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་ གསང་ཞིང་ མེད།

3 ལྷ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་ ཡི་ཤེས་དེ་ མེད།

སྒོ་དགུ་ལས་ནི་གང་ཕྱང་བ།

རྒྱུ་གྱི་བདག་ཉིད་རྣམ་བསྐྱེམས་ལ།

གྱིས་ཀྱང་དེ་མཐོང་བར་འགྱུར་ལ། ཅི་སྟེ་དོ་རྗེ་རྣལ་འབྱོར་གྱི་ཁོན་ལས་མ་ཡིན་
ན་ཡང་རྣལ་འབྱོར་དེས་གཞན་དག་གིས་ཀྱང་དེ་མཐོང་བར་འགྱུར་རེ་ཞེ་ན། དེའི་
ཕྱིར་རྣལ་འབྱོར་ཞེས་ཕྱ་བ་ལ་སྐྱེས་པ་གསུངས་ཏེ། གཅིག་ཁོ་ནར་གཡོ་བ་མེད་
པའི་ཕྱིར་གཉིད་དང་ཚོས་མཐུན་པས་ན་གཉིད་དོ། །འདི་ནི་རྣལ་འབྱོར་ཡང་
ཡིན་ལ་གཉིད་ཀྱང་ཡིན་པས་རྣལ་འབྱོར་གཉིད་དོ། །ཡང་དག་པར་ལྷན་པ་ནི་
མངའོ།¹ དེ་ཉིད་ཉི་ཤུ་བར་བཟུན་པ་ནི། ཞོང་ཕྱར་ཞེས་ཕྱ་བ་ལ་སྐྱེས་པ་ཡིན་ཏེ།
གཟུགས་ཞེས་ཕྱ་བ་ནི་ཚོས་ཐམས་ཅད་ཀྱི་རང་བཞིན་ནོ།² །གཅིག་ཅེས་ཕྱ་བ་ནི་
སྒྲིང་བ་མེད་ཅིང་གསལ་བ་ཙམ་དུ་རོ་གཅིག་པའོ། །ཞོང་ཕྱར་ཞེས་ཕྱ་བ་ནི་དེ་དག་
ཉིད་ཤིན་ཏུ་བཟུས་པ་སྟེ། ཡུངས་དཀར་ལྷར་སྤྲ་བའི་ཐིག་ལེ་ཙམ་གྱི་ཞོང་ཕྱར་སྤྲ་
མོར་ཕྱས་པའོ། །དེ་དག་གིས་ནི་དཔའ་བའི་ཕྱག་རྒྱ་གཟུགས་སུ་བསྐྱབ་པ་བཟུན་
ནོ། །དེར་སོང་བའི་ཡིད་ཅེས་ཕྱ་བ་ནི་ཞོང་ཕྱར་དེ་ལ་སེམས་གནས་པའོ། །དེ་
དག་གིས་རྣལ་འབྱོར་གྱི་གཉིད་ཀྱི་དོན་བཟུན་ནོ། ༡༩ །

རྣམ་པ་དེ་ལྟ་ཕྱིར་རྣལ་འབྱོར་རྒྱུ་གསུངས་པར་བྱེད་པའི་དམ་ཆིག་བཟུན་པའི་
ཕྱིར། སྒོ་དགུ་ལས་ཞེས་ཕྱ་བ་ལ་སྐྱེས་པ་གསུངས་ཏེ། རྣམ་བསྐྱེམས་ལ་
ཞེས་ཕྱ་བ་ནི་ལྷག་པར་མོས་པར་ཞེས་ཕྱ་བའི་དོན་ནོ། །གང་ཞིག་ལ་ལྷག་པར་

1 གསེར་ཅེས་པའོ། དེ་མངའ་བའོ།

2 ལྟ་དཔེར་ཅེས་པའོ། རང་བཞིན་ནོ། མེད།

3 གསེར་ཅེས་པའོ། མོས་པར་གྱུ།

རང་བཞིན་མེད་པའི་སློབ་ལྷན་པའི།
 རྒྱལ་པར་མི་རྟག་པ་ཡིས་བཟུང།
 མཐེ་བོང་དང་ནི་སྤྲིན་ལག་གིས།
 ཁ་རུ་ཡིད་བཞིན་ནོར་བུ་ནི།
 བདུད་ཅིང་རང་བཞིན་ལས་ཕྱང་བའི།
 རྟག་པའི་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་འགྱུར།

མས་པར་བྱ་ཞེ་ན། སློབ་གྲུ་ལས་ཕྱང་བའི་རྣམས་ལ། ཅི་ཞིག་དུ་མས་ཤེ་
 ར། བདག་ཉིད་ཅིས་བྱ་བ་གསུངས་དེ། རྟག་པ་དང་། མི་བསྐྱེད་པ་
 དང་། རིན་ཆེན་དབང་དང་། འཛིག་རྟེན་དབང་དང་། གདོན་མི་ཟ་བའི་
 རང་བཞིན་གྱི་སངས་རྒྱལ་རྒྱལ་གྱི་བདག་ཉིད་དུའོ། རང་བཞིན་མེད་པ་ཞེས་
 བྱ་བ་ནི་གཟུང་བ་དང་འཛིན་པར་མི་སྤང་བས་སོ། །སློབ་ལྷན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་
 གསལ་བ་ཙམ་ལ་གནས་པའི་སློབ་ཅན་ནོ།¹ རྒྱལ་པར་མི་རྟག་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་
 དོགས་པ་མེད་པས་སོ། །བཟུང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྒྱལ་པར་རྟག་པ་བཟུང་བའི་ཕྱིར་
 ལྷུང་པའོ། ༣༠ །

མཐེ་བོང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། སློབ་རུ་ཡིད་བཞིན་ནོར་བུ་ཞེས་
 བྱ་བ་ནི་མཐེ་བོང་དང་སྤྲིན་ལག་གི་ཅེ་མོ་ཡིད་བཞིན་གྱི་ནོར་བུ་གྲུར་པ་ཞེས་བྱ་བའི་

1 བྱ་དཔེར་ (བྱ་དཔྱུ) སངས་རྒྱལ་གྱི་བདག་ཉིད་

2 གསེར་ མི་སྐྱེད་

3 བྱ་དཔེར་ (ཅི་ཞིག་གི་ བྱེད་) སློབ་ཅན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷན་པའོ།

4 ཙ་ཏ་ཏ་ ཁ་རུ་

རྣལ་འབྱོར་མའི་དབང་ཕྱག་མའི་རིག་པ་ཆེན་པོ་ལས་སྦྱོར་བ་
གཏན་ལ་དབབ་པའི་ལུ་སྟེ་གཉིས་པའོ། །

དོན་དོ། ། །ངེས་ན་དེ་ཉིད་ཀྱིས་ངེས་བཟའོ་ཞེས་བྱ་བར་དགོངས་སོ། །
ནམ་ཞེ་ན། །བདུད་ཅི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་དྲེ། །གང་གི་ཆེ་འོག་
ནས་བྱུང་བའི་ཆོགས་འདི་དག་ཐམས་ཅད་བདུད་ཅིར་བྱས་པ་དེའི་ཆེ་ཞེས་བྱ་བའི་
དོན་དོ། ། །ངེས་ཅིར་འབྱུར་ཞེ་ན། ། །རྟག་པའི་དངོས་གྲུབ་ཅེས་བྱ་བ་ལ་
སོགས་པ་གསུངས་སོ། ། ༣༡ །

རྣལ་འབྱོར་མའི་རིག་པ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བཤད་ཅིན་དོ། ། །དེའི་
སྦྱོར་བ་ནི་ཉི་མ་དང་ལྷ་བཀུ་སྦྱར་བའི་ཐིག་ལའི་རྣལ་འབྱོར་པོ། ། །ངེ་སང་གི་རྣམ་
པར་རྟེན་པ་ལ་སོགས་པའི་བྱེ་བྲག་གང་དག་གིས་ངེས་པར་བྱེད་པ་དེ་ནི་གཏན་ལ་
ཕབ་སྟེ་བཞུན་པ་ནི་བཤད་པའོ། །

དཔལ་སྦྱུ་འཕུལ་ཆེན་མའི་འབྲེལ་པ་ཡོན་ཏན་ལྷན་པ་ལས་ངེས་པར་
བཞུན་པ་གཉིས་པའོ། ། །

ངེས་པར་བསྟན་པ་གསུམ་པ།

དེ་ནས་ཡང་དག་བཤད་ཀྱི་བ།	།
དམ་ཚིག་སྒྲུབ་པའི་དམ་པ་སྟེ།	།
ཇས་གཞན་ཚོགས་ནི་བཟའ་བྱ་བ།	།
ཐམས་ཅད་མཐུན་པའི་འབྲས་སྟེར་བའོ།	༡།
གང་ཞིག་བློས་པ་ཙམ་གྱིས་ནི།	།
འབྲུང་པོའི་མི་རྣམས་འགྲུབ་འགྲུར་བ།	།
བདུན་པ་དང་ནི་མྱུར་འགྲོ་ཉིད།	།
དེ་བཞིན་དུ་ནི་བསྐྱང་བྱི།	༢།

དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། ཇས་གཞན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བསྟན་མ་
 ཐག་པའི་ཇས་དག་ལས་གཞན་པའོ། །ཚོགས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཚོགས་ལས་ཐ་མི་
 དད་པའི་ཕྱིར་སོ་སོ་རེ་རེ་ཞིང་ཡང་ཚོགས་ཀྱི་སྒྲུབ་བསྟན་ཏོ། །ཐམས་ཅད་
 མཐུན་པ་ཉིད་འབྲས་བྱ་ཡིན་པས་ན་ཐམས་ཅད་མཐུན་པའི་འབྲས་བྱའོ། །གང་
 ཞིག་ཅེས་བྱ་བ་ནི་ཇས་ཀྱི་ཚོགས་རྣམས་སོ། །འབྲུང་པོའི་མ་ནི་དོ་ཇེ་མཁའ་འགྲོ་
 མ་རྣམས་སོ། ༡ - ༣ །

ཆེན་པོར་ཡང་དག་ལྡན་པ་ནི། |
 དེ་བཞིན་ཡེ་ཤེས་བདུན་ཅི་ལ། |
 ཆེས་གྲངས་བཅུ་བཞི་བརྒྱད་ལ་ནི། |
 ལྡན་ཅིག་བསྐྱོས་དེ་སྤྱར་བྱས་ནས། ༣ |
 ཉི་མ་བདུན་དུ་ཅེ་སྤྱང་གི། |
 དབུས་སུ་བཞག་ལ་དེ་ནས་བརྟོན། |
 ལ་པོ་དག་ལས་ཡུངས་དཀར་གྱི། |
 འབྲས་བུའི་ཆད་ཙམ་ཟེལ་བུ་བྱ། ༥ |
 དེ་ནི་རྒྱུད་འདིར་གསུངས་མཛད་གྱི། |
 ཆེས་བརྒྱད་དང་ནི་བཅུ་བཞིའི་བར་དག་དུ། |

ཆེན་པོར་ཡང་དག་ལྡན་པ་ནི་ཡོན་ཏན་ཆེ་བས་བརྒྱན་པ་སྟེ། བ་ཆེན་
 པོའོ། །དེ་བཞིན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡང་དག་པར་བསྐྱབ་པོ། །ལྡན་ཅིག་མ་ཡིན་
 ཞེས་བྱ་བ་ནི་སོ་སོར་པོ། །བསྐྱོས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བྱུག་པ་སྟེ། བ་ལ་པོ་སོ་སོ་
 ཞིང་བདུན་ཅི་ལ་ལས་བསྐྱོས་པོ། །དུས་ཇི་སྟེད་ཅིག་དུ་ཞུ་ཞིན། ཉི་མ་བདུན་
 དུ་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་དེ། ༡ - ༥ །

མར་ངོའི་ཉི་ཤུ་གསུམ་ནས་ཉི་ཤུ་དགུའི་བར་དུའོ། །སྤྱར་བྱས་ནས་ཞེས་

1 ཐུ་དཔེར་འོ། (ཅད་དུ་ཤི་མེད་དེ། ཞུ་མི་ཉམས་ རེ་མཁུ་གྲོ་འཕྲུག་ཅོད་ རྒྱུ་མེད་) རིག་བྱེད་ལས་ཆེས་
 བཅུ་བཞི་ཞེས་བྱ་ལ་སོགས་པ་ཆེས་བརྒྱད་པ་སྤྱང་བ་དང་། རྩེ་སྤྱང་ནི་རིང་བ་ཡིན་ནོ།

2 བ་མེར་འོ། ལྷ། མེད།

ཉི་མ་བདུན་དུ་ལྷན་ཅིག་མིན་བསྒྲུལ་སྟེ། །
 སྤྱར་ནས་ཅེ་སྤྱང་དབུས་སུ་ལྷུ་བཞག་ལ། །
 དེ་ལས་བརྟན་ཏེ་ལྷ་པོ་དག་ལས་ནི། །
 དངོས་གྲུབ་འབྲས་བུའི་ཆད་ཙམ་རིལ་བུ་བྲ། །
 འབྲས་བུ་ཆེན་པོ་རབ་དུ་རྟོགས་པས་ན། །
 དེ་ནི་རྒྱུད་འདིར་གསུངས་ཀྱི་ཀུན་དུ་སྤྲུལ། །

བྱ་བ་ནི་དེ་ལྟར་བྲས་པའི་འོག་དུ་སྤྱར་ནས་སོ། །ཅེ་སྤྱང་གི་དབུས་སུ་བཞག་ལ་
 ཞེས་བྲ་བ་ནི་འབྱུང་པའི་མཆན་མོ་ཅེ་སྤྱང་གི་ཡན་ལག་མཆོག་དུ་བཞག་པའོ། །
 དེ་ལ་ཞེས་བྲ་བ་ནི་དེ་ལྟར་བསྒྲུལ་པ་དང་བཞག་པའི་རྩས་ལས་སོ། །ཡུངས་
 དཀར་གྱི་འབྲས་བུའི་ཆད་ཙམ་ཞེས་བྲ་བ་ནི་ཡུངས་ཀར་གྱི་ཆད་ཙམ་མོ། །
 ཅེ་ལས་བྱེད་ཤིང་།² ལྷ་པོ་དག་ཅེས་བྲ་བ་གསུངས་ཏེ། ས་ལྷ་པོ་
 དག་ལས་སོ། །རྒྱུད་འདིར་གསུངས་ཀྱི་ཞེས་བྲ་བ་ལ། ཆད་ནི་ཉེ་བར་མཆོན་
 པ་སྟེ་ཆོ་ག་ཡང་གཟུང་བར་བྱའོ། །དེ་བས་ན་ཆད་ལ་སོགས་པ་འདིར་རྟོགས་
 པར་གསུངས་སོ། །ཀུན་དུ་སྤྲུལ་ཞེས་བྲ་བ་ནི་རྒྱུད་གཞན་དུ་ཐམས་ཅད་རྟོགས་
 པར་གསུངས་པའོ།³ ཅིའི་ཕྱིར་ཞེ་ན། འབྲས་བུ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྲ་བ་ལ་སོགས་
 པ་གསུངས་ཏེ། རྟོགས་ནས་ཞེས་བྲ་བ་ནི་འབྲས་བུ་ཆེན་པོར་ཤེས་པར་བྱ་སྟེ།⁴

1 ལྟ་དཔེར་ཅོད་ (མི་དབྱུག་ལྟ་རྟོག) འབྲས་བུ་གྲུབ་པའི་དོན་དུ་ཞེས་བྲ་བ་

2 ལྟ་དཔེར་ཅོད་ (ཀུན་གྱི་ཕུན་སྡུག་གི་དབྱེ་བྱེད་) རྩས་དེ་དག་ཅེ་ཞེག་ཞེན་གསུངས་པ།

3 ལྟ་དཔེར་ཅོད་ (རྣམ་ཐུན་) མ་གསུངས་སོ།

4 ལྟ་དཔེར་ཅོད་ (མདུལ་ལྟ་ནི་དྲན་ཏེ་རྟོག་ཏེ་ཀྱང་) འབྲས་བུ་ཆེན་པོས་ཤེས་པར་བྱ་བའི་
 དོན་ཏེ། རྟོགས་པ་འབྲས་བུ་ཆེན་པོར་ཤེས་ཞེ་ན།

འབྲས་བུ་ཆེན་པོ་སངས་རྒྱས་ཀྱིས།	
ཐམས་ཅད་དུ་ནི་སྤྲས་པའོ།	
དེ་ནས་སྐྱབ་ཐབས་འབྱུང་བའོ།	
ཡིད་ཀྱི་པད་མ་བསམ་བྱ་བ།	ལ།
ཁ་དྲིལ་དམར་པོ་ཀྱན་འོད་ལ།	
ལྷ་མོ་བཞི་དང་ཡང་དག་ལྷ།	

ཕུང་པོ་ལྷ་པོ་ཡེ་ཤེས་ལྷས་བསྐྱེད་པའི་ཕྱི་ལྷ་ལྷན་མཆོག་ཁ་སྐྱོར་གྱི་སྒྲིང་
 དུ་གནས་པའི་དཔའ་བོ་དང་མཉམ་པར་རྟོགས་པས་སོ། ༥ །

དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེའི་འོག་དུའོ།
 རྒྱུད་འདིར་སྐྱབ་པའི་ཐབས་འབྱུང་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི། སྐྱབ་པའི་ཐབས་ཀྱི་ལམ་གང་
 བེས་བཅོམ་ལྷན་འདས་དཀྱིལ་ལའོར་དང་བཅས་པ་སྐྱབ་ཅིང་མཉེས་པར་བྱེད་པར་
 བྱུར་པའི་སྐབས་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་རྟོ། །པད་མ་བསམ་བྱ་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བྱང་ཆུབ་
 ཀྱི་སེམས་སྤྱང་བ་མེད་པར་བསྐྱེད་པས་འགྲོ་བ་རྣམས་ནམ་མཁའ་ལྷ་ར་མཉམ་པ་
 ཉིད་དུ་བྱས་ཏེ། རྩ་མེད་རང་བཞིན་གྱི་ས་གནི་བསམས་ནས་ཕྱོགས་མཚམས་
 རྣམས་སུ་འཇིགས་པར་བྱེད་པའི་དུར་ཁྲོད་བརྒྱད་བལྟས་ལ། དེའི་དབུས་སུ་
 ཁང་བུ་བཅུགས་པའི་ནང་དུ་ཆུད་པའི་པད་མ་འདབ་མ་བརྒྱད་པའམ་བཞི་པ་བསམ་
 པའོ། ལ །

ཁ་དྲིལ་དམར་པོ་ཀྱན་འོད་ཅས་བྱ་བ་ནི་མདྲིལ་དམར་ཞིང་འོད་དམར་པོ་

1 བསེར་འོད་ཀྱི་ཕྱི་ལྷ།

2 རྒྱ་དཔེར་འོད་ཐབས། མེད།

མངས་ཀྱིས་གཞུགས་ཀྱིས་ཉེར་བརྒྱན་པའོ། །
 ཤར་དུ་ཁྱུ་ལ་སྤོའོད་མདོག་ །
 ལྷོ་རུ་སེར་པོ་ལྟ་བུའོ། །
 རྒྱལ་དུ་དཀར་དང་དམར་བའི་འོད། །
 བྱང་དུ་མ་གད་འོད་ཡིན་ནོ། །
 འབར་བའི་ཕྱང་བས་འཁྲིགས་པ་དང་། །
 ཞལ་བཞི་ཕྱག་བཞི་སྤྱན་གསུམ་མཛེས། །

དང་བཅས་པའོ། །ཡིད་ཀྱིས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དཔའ་བོར་གྲགས་པ་སྟེ། ཤིན་དུ་
 རྣམ་པར་དག་པའི་ཡིད་ཀྱི་ཐིག་ལེ་པད་མའི་འཇིག་ར་གནས་པ་ལས་ཕྱོགས་བཞིའི་
 འདབ་མ་རྣམས་སུ་ཡང་སྤྱོད་པས་མཆན་པའོ། །ལྷ་མོ་བཞི་དང་ཡང་དག་ལྟ།
 ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཤར་ཕྱོགས་ལ་སྟོགས་པའི་འདབ་མ་རྣམས་ཀྱི་ཐིག་ལེ་རྣམས་ལས་གོ་
 རིམས་བཞིན་དུ་དོ་ཇེ་དང་། རྩོམ་བྱ་དང་། པད་མ་དང་། ལས་ཀྱི་རིགས་ཀྱི་
 དབང་པོ་མཐའ་ཡས་པའི་རིགས་དང་བཅས་པར་སོ་སོར་མཐའ་ཡས་པའི་ཕྱོགས་
 སུ་སྤྱོད་ཏེ་དེ་དག་བསྐྱས་པ་ལས་བྱུང་བའི་དོ་ཇེ་དང་། རིན་པོ་ཆེ་དང་། པད་
 མ་དང་། ལྷ་མོ་གསུམ་མཐའ་འགྲོ་མ་རྣམས་འདབ་མ་དེ་རྣམས་ཀྱི་གདན་ལ་
 བཞོད་པའོ། །མངས་ཀྱིས་གཞུགས་ཀྱིས་ཉེར་བརྒྱན་པ། ཞེས་བྱ་བ་ལ་
 སྟོགས་པ་ལ། མངས་ཀྱིས་ཉེར་བརྒྱན་པའོ། །གཞུགས་ཉེར་བཤམ་

1 རྩོམ་རྒྱུ།

2 རྩོམ་པའི་པད་མའི་མཛེས་

3 རྩོམ་པའི་(དཔྱ) རིམ་གྲགས་

ཉི་རུག་འི་སྐྱ་སྒྲེ། དེ་དགྱིལ་ལལོར་གྱི་བདག་པོར་གྱུར་པས་ཉི་བར་བརྒྱན་པའོ།
 དེ་ཡང་ལྷ་མོ་དེ་རྣམས་ཀྱིས་ཅ་བའི་ཡིད་ཀྱི་ཐིག་ལེ་ལ་འོག་ནས་འབྱུང་བའི་སྐྱ་སྒྲེ་
 བསྐྱུལ་བར་གྱུར་པས་ས་བོན་གཉིས་ཀྱི་རྣམ་པར་གྱུར་པ་ལ་དེ་ལས་རིགས་ལྗང་
 དབང་པོ་དེའི་རིགས་རྣམས་ཕྱོགས་མཆམས་རྣམས་སྤྲུབ་པར་སྒྲོས་དྲེ། དེ་
 རྣམས་ཡང་དག་པར་བསྐྱས་པའི་ས་བོན་གཉིས་པོ་ཡོངས་སྤྲུབ་པ་ལས་སངས་
 རྒྱས་མཁའ་འགྲོ་མས་ཡོངས་སྤྲུབ་པའི་དཔལ་ཉི་རུགས་ཉི་བར་བརྒྱན་པའོ།
 སངས་རྒྱས་ཀྱི་གཟུགས་ཅི་འདྲ་བཞིག་གིས་ཤེ་ན། ཤར་དུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་
 པ་གསུངས་དྲེ། ཞལ་བཞི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཕྱོགས་བཞིར་བསྒྲན་པའི་¹ཞལ་བཞིའོ།
 དུག་བཞི་དང་རྒྱན་གསུམ་ནི་གོ་སྐྱའོ། ཞལ་གང་གི་མདོག་གང་ཡིན་པ་བསྒྲན་
 པའི་ཕྱིར། ཤར་དུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་དྲེ། ཤར་ཕྱོགས་ཀྱི་ཞལ་
 ནི་ལྷ་ཕྱུལ་ཐོན་པོའི་མདོག་གོ། རྩོ་ཕྱོགས་ཀྱི་ཞལ་ནི་སེར་པོའོ། རྒྱབ་ཕྱོག་ཀྱི་
 ཞལ་ནི་དཀར་ཞིང་⁴དམར་བའོ། བྱང་ཕྱོག་ཀྱི་ཞལ་ནི་ལྗང་གུ་⁵སྒྲེ། ཅ་བའི་
 ཞལ་གྱི་མདོག་གང་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་སྐྱ་མདོག་ཀྱང་ཡིན་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རབ་དུ་བྲགས་
 པ་ཉིད་དོ། འབར་བའི་ཕྱིང་བས་འབྲིགས་པ་ཞེས་བྱ་བ་ལ། འཛིག་པའི་
 དུས་ཀྱི་མེ་ལྗེའི་ཕྱིང་བ་ལྷ་བུའི་འོད་ཀྱིས་ཀུན་དུ་འབྲིགས་པ་གང་ལ་ཡོད་པ་དེ་ལ་དེ་
 སྐད་ཅེས་བྱའོ། ༥ - ༩ ।

- 1 གསེར་འོ་ ཡིད་ཀྱིས། མེད།
- 2 ལྷ་དཔེར་འོ་ (རྒྱག་བདུ) བཅོམ་ལྷན་འདས་དཔལ་ལོ་
- 3 ལྷ་དཔེར་འོ་ ཕྱོགས་བཞིར་བསྒྲན་པའོ། མེད།
- 4 ལྷ་དཔེར་འོ་ དམར་བ་ མེད།
- 5 གསེར་འོ་ ལྗང་ལྷ། ལྷ་དཔེར་འོ་ (རྒྱག་བདུ) དམར་པོ་
- 6 གསེར་འོ་ འཛིགས།

ཤར་ཕྱགས་ཀྱི་ལྷ་མོ་ནི་སྤྱན་གསུམ་པ་ཕྱག་གཡོན་ན་ཁྲུག་དང་།
 གྲིལ་བུ། གཡས་ན་རྩྭ་ཆེ་དང་། ཐོད་པ་བསྐྱམས་པ་བསམ་མོ།
 ལྷོ་ཕྱྱ་ཀྱི་ལྷ་མོ་ནི་ཕྱག་ན་མདུང་ཅི་གསུམ་པ་དང་། རིན་པོ་ཆེ་དང་།
 བ་དན་དང་། ཅེ་སྤྱང་བསྐྱམས་པ་ལོ། རྒྱལ་ཕྱགས་ཀྱི་ལྷ་མོ་ནི་
 ཕྱག་ན་གཞུ་དང་། མདའ་དང་། ལྷ་ཚོགས་པད་མ་དང་། ཐོད་
 པ་བསྐྱམས་པ་ལོ། ཡུང་ཕྱགས་ཀྱི་ལྷ་མོ་ནི་ཕྱག་ན་རལ་གྱི་དང་།
 ཞགས་པ་དང་། རིུ་ཆུང་དང་། ཐོད་པ་བསྐྱམས་པ་ལོ། ༡༠ །

ཕྱག་གཡོན་ན་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སྤྱོད་ཀྱི་ལྷ་མོ་རྒྱམས་ཀྱི་མཆན་མ་གསུངས་
 པ་སྟེ། འདི་ནི་ཕྱག་གཡོན་ན་ཁྲུག་དང་གྲིལ་བུ་ཡོད་པས་ན་ཕྱག་གཡོན་ན་ཁྲུག་
 དང་གྲིལ་བུ་ལོ། རི་བཞིན་དུ་རྩྭ་ཆེ་དང་ཐོད་པ་བསྐྱམས་ཞེས་བྱ་བ་ལ། རྩྭ་ཆེ་དང་
 ཐོད་པ་དག་འདི་ནི་ཕྱག་གཡས་ན་མདུང་བསམ་ན་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ། ཤར་ཕྱགས་
 ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཤར་ཕྱགས་ཀྱི་འདབ་མའི་ལོ། ལྷ་མོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཡུང་ཕྱགས་ལ་
 སྟགས་པའི་བར་དུ་ཡང་སྤྱར་བར་བྱའོ། འདིར་དང་པོར་དཔལ་ལྷོ་རྩྭ་ཆེ་
 འགྲོ་མ་ནས་བཟུང་སྟེ། ཡུང་ཕྱགས་ཀྱི་བར་དུ་གོ་རིམས་བཞིན་དུ་རིན་ཆེན་
 མཁའ་འགྲོ་མ་དང་། པར་མཁའ་འགྲོ་མ་དང་། ལྷ་ཚོགས་མཁའ་འགྲོ་མ་
 རྒྱམས་ཡིན་ནོ། ལྷོ་ཕྱགས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སྟགས་པ་ལ། མདུང་ཅི་གསུམ་པ་
 དང་། རིན་པོ་ཆེ་དང་། བ་དན་དང་། ཅེ་སྤྱང་རྒྱམས་འདི་ནི་ཕྱག་ན་
 མདུང་བསམ་དེ་སྐད་ཅེས་བྱའོ། རྒྱལ་ཕྱགས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་རྟོགས་པས་ཀྱང་གཞུ་

1 ལྷ་མོ་ལྷ་མོ་ དཔལ་ མེད།

2 ལྷ་མོ་ལྷ་མོ་ (སྐུ་ཕྱུག་ རྩྭ་ཆེ་) བདུན་པའི་རྩྭ་ཆེ་གསུམ་པ་ལོ།

སྐྱུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་དྲི་རྩེ་ནི།

|

དེ་ཡི་དབུས་སུ་བསམ་པར་བྱ།

|

དང་། མདུལ་དང་། སྐྱ་ཆོགས་པར་དང་། ཐོད་པ་ཅན་བཞན་དོ། །བྱང་
 རྩོགས་¹ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པའི་དོན་ཀྱང་རལ་གྱི་དང་། ཞགས་པ་དང་།
 དེའུ་ཆུང་དང་། ཐོད་པ་རྒྱམས་འདིའི་ཕྱག་ན་མངའ་བས་ན་དེ་སྐད་ཅས་བྱའོ།
 དེ་དག་ཀྱང་།

འབར་བའི་ཕྱིང་བས་འཁྲིགས་པ་དང་། |

ཞལ་བཞི་ཕྱག་བཞི་སྤྱན་གསུམ་མཛེས། |

ཞེས་བྱ་བ་དང་སྤྱར་དེ། གཙོ་བོ་དང་རྩེ་སུ་མཐུན་པའི་འཁོར་ཡིན་
 པའི་ཕྱིར་རོ། །དེ་ཉིད་ཀྱི་ཕྱིར་དེ་དག་གི་མདོག་བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱི་ཞལ་གྱི་
 རྩེ་སུ་འབྲེལ་²བར་བྱ་སྒྲེ། བར་ཕྱོགས་ཀྱི་ནི་ཐོན་མོའོ། །ཕྱོ་ཕྱོགས་ཀྱི་ནི་
 སེར་མོའོ། །རྒྱབ་ཕྱོགས་ཀྱི་ནི་དཀར་ཞིང་དམར་བའོ།⁴ །བྱང་ཕྱོགས་ཀྱི་ནི་སྤྱི་
 བསངས་མ་ཡིན་ལ་ཞལ་གྱི་མདོག་ཀྱང་དེ་བཞིན་ནོ། །འོན་ཀྱང་ཙུང་ལྷེལ་གྱི་
 སྐྱུ་མདོག་དང་མཐུན་པ་ཡིན་ལ། བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱི་ཞལ་གྱི་གནས་སུ་ནི་ཞལ་
 ཐོན་པོ་དགོད་པར་བྱའོ། ༡༠ །

བཅོམ་ལྷན་འདས་ཀྱིས་གནས་དང་མཚན་མ་གསུངས་པ། སྐྱུ་ཞེས་བྱ་བ་
 ལ་སོགས་པ་གསུངས་པ། སྐྱུ་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་དྲི་རྩེ་ནི་དཔལ་ཉེ་རུག་སྒྲེ་དེ་བསམ་

1 ལྷ་དཔེར་ཅོ (ཁྱད་ལྷེ་རྩེ) རལ་གྱི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི།

2 ལྷ་དཔེར་ཅོ (གུར་རྒྱུ་མ) ཡོན་ཏམ།

3 གསེར་ཅོ འབྲེང་།

4 ལྷ་དཔེར་ཅོ (སེད་བརྒྱ) དཀར་པོའོ།

གྲོང་པ་ཉིད་དང་ཁྲུག་ |
 དེ་བཞིན་གཞུ་དང་མདའ་ཉིད་དོ། ༡༡ |
 དང་པོའི་ཐུགས་དང་ཡང་དག་ལྟ། |
 བསྐྱམས་ན་སྐད་ཅིག་དེ་ལ་འབར། |
 དེ་ལྟར་རྣལ་འབྱོར་པས་བསྐྱབས་ན། |
 རྒྱུ་གྱི་དངོས་གྲུབ་རབ་དུ་སྒྲིབ། ༡༢ |

པའོ། །དེའི་ཞེས་ཀྱང་བ་ནི་པར་དམར་པོའོ། །དབུས་སུ་ཞེས་ཀྱང་བ་ནི་ཀློག་
 ལའོ། །གྲོང་པ་ཞེས་ཀྱང་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། དེའི་ཕུག་དུ་ཞེས་ཀྱང་བ་ནི་ལྷག་
 མའོ། །དཔལ་ཉེས་ཀྱི་ལྷ་བ་བཞིན་དུ་སངས་རྒྱུ་མཁའ་འགྲོ་མ་ཡང་དེ་
 བཞིན་དོ། །འོན་ཀྱང་སྐྱེ་མདོག་དམར་ཞིང་དེ་དང་ཞལ་སྦྱོར་བ་ཕུག་གཉིས་ཀྱིས་
 མཐིན་པ་ནས་འཁྱུད་པའོ། ༡༡ |

དམ་ཆིག་མ་གཏོགས་པར་དངོས་གྲུབ་འབྱུང་པར་མི་འབྱུར་བས་དམ་
 ཆིག་སྐར་བཤད་པའི་ཕྱིར་³ དང་པོའི་ཐུགས་དང་ཞེས་ཀྱང་བ་ལ་སོགས་པ་
 བསྐྱམས་དོ། དང་པོ་ཐུགས་ནི་རབ་ཐུགས་སོ། །དེ་དང་ཡང་དག་ལྟ་ནི་
 རྒྱུ་འབར་བར་འབྱུར་ཞེས་ཀྱང་བ་དང་འབྲེལ་དོ། །བསྐྱམས་ནས་ཞེས་ཀྱང་བ་ནི་
 མན་ངག་གྱེ། རྒྱུ་བ་བཞིན་དུ་བསྐྱམས་པར་འབྱུར་ནའོ། །རྒྱུ་ཞེས་ཀྱང་

1 རྩོམ་གྱ།

2 བཞེར་མ་ཏོགས།

3 རྩོམ་པོ་ (བཤྲུལ་མཁའ་འགྲོ་ལྟར་) འབར་བ་བཟུན་པའི་ཕྱིར་སྐྱེས་པ།

4 རྩོམ་པོ་ (སམ་ཡུལ་) དམ་ཆིག་གི་རྒྱུ་

ནལ་འབྱོར་མ་ཡི་བྱུང་བྱོར་བས། |
 འཕྲུལ་དུ་ཡིད་ཆེས་ཡང་དག་འཇུག
 ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ནི་མི་མཐོང་ཞིང་། |
 མྱོང་ཕྱག་གཅིག་དུ་སྒྲུང་བར་འགྱུར། ༡༩ |

ནི་དམ་ཆིག་གི་ཇས་སོ།¹ |བསྐྱུབ་ན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་བསྐྱེད་པའོ། ཇི་ལྟ་བུར་བསྐྱེད་
 ཅེ་ན། དངོས་བྱུང་འབྲས་བྱ་སྒྲེར་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་སོ། |དེ་སྐད་དུ་ཡང་
 དཔལ་གསུང་བ་འདུས་པ་ལས་ཀྱང་།²

ཐུགས་ནམས་ཀུན་གྱི་ཡི་གེ་ཚོ། |
 བསྐྱེམས་ན་སྐད་ཅིག་དེ་ལ་འབར། |

ཞེས་གསུངས་སོ། ༡༩ |

འབར་བའི་ཡན་ཡོན་གསུངས་པ། ནལ་འབྱོར་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་
 ལ། ནལ་འབྱོར་ནི་ནལ་འབྱོར་པ་སྒྲེ། འདིས་འབྱོར་བ་དང་ནལ་འབྱོར་མ་
 བྱུང་པར་གྱུར་པ་དག་ཡོད་དོ་ཞེས་སྒྲེ་བོ་ནམས་ཀྱི་ཡིད་ཆེས་པ་འཇུག་པར་འགྱུར་དེ།
 འབར་བའི་མཐུ་དང་ལྷན་པའི་དཔེ་སྟོན་པར་བྱེད་དོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་དོ། |མི་
 སྒྲུང་བ་ལ་སོགས་པའི་དངོས་བྱུང་གི་མཐུ་གསུངས་པ་ཐམས་ཅད་ཀྱིས་ནི་ཞེས་བྱ་བ་
 ལ་སོགས་པ་ལ་སྒྲུང་ཕྱག་གཅིག་དུ་སྒྲུང་བར་འགྱུར། |ཞེས་བྱ་བ་ནི་གྲིང་བཞི་པ་
 མྱོང་གི་འཇིག་རྟེན་གྱི་ཁམས་ནི་སྒྲུང་ཕྱག་གཅིག་གོ། |དེ་གཅིག་དུ་སྒྲུང་བ་ནི་བདག་
 པོར་གྱུར་པ་དང་། གཞན་གྱི་དོན་བྱེད་པར་གྱུར་པའོ། ༡༩ |

1 གཞེར་ཅེ་བསྐྱུབ་ན་.....ཇས་སོ། བར་མེད།

2 རྒྱེ་བཀའ་ཅེ་བྱེད་ཅེ་བྱེད་ ༡༩ ན ལ བསྐྱེམས་ན་དེ་མ་ཐག་དུ་འབར།

སངས་རྒྱལ་ཀུན་ལས་སྤྲེགས་པ་དང་། |
 ལྷ་ཡི་བྱ་མོ་མཚེག་ལ་སྤྱོད། |
 བཀ་གཏི་བྱེ་སྤྱོད་སངས་རྒྱལ་རྣམས། |
 ཉིད་ཀྱི་རྩོམ་ཆེའི་གནས་བཞགས་པ། ༡༥།
 ལག་དྲུ་སྒྲུ་རུ་ར་བཞག་བཞིན། |
 རྩོམ་ཆེའི་མིག་གིས་མཐོང་བར་འགྱུར། |
 བཀ་གཏི་བྱེ་སྤྱོད་ཞིང་དག་ཀྱང་། |
 སྒྲུ་གསུང་བུགས་ཀྱི་མཚན་ཉིད་དང་། ༡༥།

བྱུང་པ་ཀུན་ལས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རིག་པ་འཛིན་པ་ལ་སྤྲེགས་པ་ལ་སྤྱོད་བྱ་མོ་
 ཞེས་བྱ་བ་དང་འབྲེལ་དོ། །རྩོམ་ཆེའི་གནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སངས་རྒྱལ་དེ་དག་ཉིད་
 ཀྱི་སྤྱོད་སངས་རྒྱལ་རྣམས་ཀྱི་ཞིང་རོ། །ཡང་དག་གནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་དག་
 ཉིད་ཀྱི་འཁོར་རོ། །བཅས་པ་ནི་རྩོམ་ཆེའི་གནས་དེ་དང་ཡང་དག་གནས་དེ་དག་
 དང་ལྷན་ཅིག་དུའོ། ༡༥།

རྩོམ་ཆེའི་མིག་ནི་རྩོམ་ཆེའི་སྒྲུ་གྱིས་དྲེ། ལྷ་ཡི་མིག་གི་མཐོང་བར་གྱེས་པས་
 ཞེས་བྱ་བ་དེ་དོན་དོ། །ལག་དྲུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སྤྲེགས་པ་ནི་རང་གི་ལག་མཐོལ་དུ་

1 ར་བར་ཅེས་སངས་རྒྱལ་ཀུན་ལས།

2 བཞེར་ཅེས་གནས་དང་།

3 རྩོམ་ཆེའི་ཅེས་ (ལྷ་ཡི) རང་གི་ལག་དུ།

མཐའ་རུ་ཡང་དག་སྒྲུབ་བྱས་ལ།	
སྒྲུབ་ཅི་ཀུན་དུ་བཟོད་བྱ་སྟེ།	
གྲུབ་པ་ལྷ་མོ་ཉི་ཤེས་བྱའོ།	
རྣལ་འབྱོར་མ་ཀུན་སྒྲུབ་བ་ཡིས།	༣ ཀ
དང་པོའི་ཡི་གེ་ཡང་དག་ལྟ།	
གལ་ཏེ་དོ་ཆེ་ཅན་གྱིས་བྱུང་འདོད་ན།	
ལན་བདུན་མངོན་སྲུང་རྣལ་འབྱོར་བ་ཡིས་བཟུང་།	༣ ཀ
ཡི་གེ་གསུམ་མཐའ་ཞེས་བྱ་སྟེ།	
བརྒྱད་ཀྱི་མཐའ་མར་ལེགས་གནས་པ།	

དོ་ཆེའི་ཆུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཆང་ངོ་། །བྱིན་གྱིས་བཟབ་པའི་དོན་དུ་བཟོད་པའི་སྒྲུབ་སྒྲུབ་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར། །བརྒྱད་ཀྱི་མཐའ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སྒྲུབ་པ་གསུངས་ཏེ། །ཡི་གེ་བརྒྱད་ཀྱི་མཐའ་ནི་ཏའོ། །ལན་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷ་དང་ཞེས་བྱ་བ་དང་ལྷུ་ལྟོ། །མཐའ་ནི་ཀུན་གྱི་ཆེས་ལའོ། །ཀུན་དུ་བཟོད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་དལ་བར་བཟུངས་པའོ། །གསང་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དམ་ཆོག་གི་ཆས་སོ། །ཉི་བར་བརྟགས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མངོན་དུ་ཡོངས་སུ་བརྟགས་པའོ། །འདི་ལྟར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་འོག་ནས་སྟོན་པའི་ཆོ་གས་སོ། །རྣལ་འབྱོར་མ་ཀུན་སྒྲུབ་བ་ཡིས། ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣལ་འབྱོར་མ་ལྷའི་ཆང་ནས་གང་ཡང་རུང་བའི་སྒྲུབ་བས་སོ། ། ༣ ཀ

སྒྲུབ་ཅི་ལྷ་བྱ་ཞེ་ན། དང་པོའི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སྒྲུབ་པ་གསུངས་ཏེ། དང་པོའི་ཡི་གེ་ནི་ཨོ་སྟེ། དེ་དང་ཡང་དག་པར་ལན་པ་ནི་དབང་པོ་ཉིད་དུ་སྒྲུབ་པའོ། །དོ་ཆེ་ཅན་གྱིས་བྱུང་འདོད་ན། ཞེས་བྱ་བ་ནི་དོ་ཆེ་འཛིན་པའི་དངོས་

ལྷ་དང་ཐེག་ལེར་ཡང་དག་ལྟ།
 ཡི་གེ་མཚེག་དུ་གྱུར་པའི་གནས།
 ཡི་གེ་དང་པོ་སྦྱར་བ་ཡིས།
 རྩོམ་ཀྱང་པ་ཡང་དག་སྦྱར།³

བྱུང་འདོད་ནའོ། །ལན་བདུན་ཞེས་བྱ་བ་ནི་གོ་སྟོལ། །རྣལ་འབྱོར་པ་ནི་
 རྣལ་འབྱོར་ཅན་ནོ། །ཅི་ལྟ་བུ་གྱིས་སྒྲིབ་པའི་ཐུགས་འདི་ཡི་གེ་དུ་ཞིག་ཅེ་ན།
 ཡི་གེ་གསུམ་མཐའ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་སོ། །འོ་ན་ཡི་གེ་གཉིས་ནི་
 ཐུར་གསུངས་ན་ཡི་གེ་གསུམ་པའི་གནས་ནི་གང་། ང་པོ་ནི་གང་ཞིག་མཐའ་
 རུ་ཅ་དང་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་བཞུག་པའི་ཡི་གེ་དག་དང་ཉེ་བར་དེ། དབུས་
 སུ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་དོ། །ཅ་ནི་བསྟུ་བའོ། །ཅ་དང་འབྲེལ་བའི་ཨ་ནི་
 གསུམ་པའོ། །བཞུག་པའི་སྦྱར་བ་དང་ཐོམ་པའི་ཚ་ག་བཞུག་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར།
 བརྒྱད་པའི་མཐའ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་དེ། ཐེ་མཚན་བརྒྱད་ཀྱི་
 མཐའ་གནས་པ་ནི་ཉ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་དོ། །ཇི་ལྟ་བུར་ཞེ་ན། ལྷ་དང་ཐེག་
 ལེར་ཡང་དག་ལྟ་ནོ། །མཚེག་དུ་གྱུར་པའི་གནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དོ་དེ་འཇིག་པའི་
 ས་པོན་དུ་འགྱུར་པས་སོ། ། ༣ - ༥ ཀ

ཡི་གེ་ཞེས་བྱ་བ་ལ། མི་འགྱུར་བ་ནི་དོ་དེ་ལྟ་བུ་དེ་བསྟེན་པར་བྱའོ།
 ཇི་ལྟ་བུར་ཞེ་ན། དང་པོའི་ཐུགས་དང་ཡང་དག་པར་ལྟ་བུ་དེ། དེའི་ནོར་བུ་

1 ཐོ་མ་ ཐེག་ལེ

2 ཐོ་མ་ དང་པོ་པ

3 ཐོ་མ་ སྦྱར

4 གསེར་མ་ མཐའ་ནི་བཞུག་པའི།

ཡི་གེ་རྣམས་ཀྱི་མཐར་སྦྱོར་ལ།	
ས་པོན་ལུས་ནི་རབ་དགང་བ།	༥༡
ཡི་གེ་ཡིས་ནི་རྣམ་བསྐྱེམས་དྲེ།	
པར་རབ་དུ་བྱས་པར་བ།	
ཅི་སྟེ་དོ་ཆེ་ཅན་འབྱུང་འདྲོད།	
དེ་ལྟར་སྦྱོར་བ་ཀུན་ཤེས་བ།	༦༡

རབ་ཐུགས་ཀྱིས་བསྐྱེད་པར་བྱའོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་དོ། །རྡོ་ཞེས་བྱ་བ་ཡང་དག་
 ལཱ།¹ ཞེས་བྱ་བ་ལ། ཡི་གེ་རྡོ་ཡིས་པད་འདབ་བསྐྱེད་པར་བསྐྱེད་ལ་ཡང་
 དག་པར་སྦྱོར་ཞེས་བྱ་བ་འོག་ནས་འབྱུང་བ་དང་འབྲེལ་ལོ།² །ཁང་དང་ཞེ་ན།
 ཞ་ཡི་མཐའ་ཞེས་བྱ་བ་ལ། ཞའི་མཐའ་ནི་གཤེགས་སུ་གསོལ་བ་སྟེ། དེ་
 དང་ལྷན་པའི་ཡི་གེ་ཞས་དེའི་མོར་བྱ་བསྐྱེད་པར་བྱའོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་དོ། །ས་
 པོན་ལུས་ནི་རབ་དུ་དགང་། ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཨོྲཱ་ཨཱུ་ཨཱུ་ཞེས་བྱ་བའི་ས་པོན་
 རྣམས་ཀྱི་ཤེས་རབ་ཀྱི་ལུས་ཀྱི་མཐོ་དང་རྒྱ་མའི་དབུས་དང་³ རྟེ་བ་དང་གསང་བ་
 དང་བཞུགས་སུ་སྦྱར་བར་བྱ་ཞེས་བྱ་བ་དང་འབྲེལ་དོ། ། ༥ ཀ

ཡི་གེ་ཡིས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་འདིས་མི་འཇག་པས་ན་ཡི་གེ་སྟེ་ཡེ་པ་དོ། །
 རྣམ་བསྐྱེམས་དྲེ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་དང་སྦྱར་བ་སྟེ། དོ་ཆེའི་སྦྱོར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷག་
 མའོ། །རབ་དུ་བྱས་པར་བྱ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དོ་ཆེ་དང་སྦྱར་བས་སོ། །དེ་ལྟར་སྦྱོར་

1 ཙ་བར་འོ ཡང་དག་བྱས་

2 གསེར་འོ འབྲེལ་དོ།

3 རྟེ་འོ དབུས་ལྟེ་བ་ (དང་སྒྲ་གསེར་གྱིས་ནས་བཞུགས་)

དེ་ནས་འདིར་དོ་རྩལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ཀྱིས་དགོངས་པ་
 དཔལ་དོ་རྩལ་སྤྱོད་པ་ཤིན་ཏུ་སྤྱོད་པ་སྒྲངས་པ།
 ཀྱི་ཐོགས་པོ་དོ་རྩལ་པསྒྲུ་ཁ་འབྱེད་སང་མཛད་མ།¹ |
 ཞལ་ལྟོ་བདེ་བ་ཆེན་པོ་གར་གྱིས་རབ་དུ་མཉེས་མཛོད་²ཅིག |
 ཉི་མའི་དཀྱིལ་འཁོར་པསྒྲུ་ཁ་ནི་རབ་ཕྱེ་བ། |
 བདེ་བ་ཆེན་པོ་གར་གྱིས་རབ་དུ་མཉེས་པར་མཛོད།³ ལྟ།

བ་ཀུན་གེས་བྱ། ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྤྱོད་པ་ཐོབ་ནས་དྲེ། བསྐྱེད་པར་བྱའོ་ཞེས་བྱ་
 བ་ནི་ལྟག་མའོ། ༥ ཀ།

དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། དོ་རྩལ་འབྱོར་མ་རྣམས་ཀྱི་
 དགོངས་པ་ནི་གང་དེ་རྣམས་ཀྱིས་ཡོངས་སུ་གཟུང་བའི་བྱ་བ་པའི་མཐའོ། །དོ་རྩལ་
 ནི་བདེ་བ་ཆེན་པོའོ། །དེ་སང་པར་བྱེད་པའི་སྤྱོད་པོ་དོ་རྩལ་སྤྱོད་པོ། །སྤྱོད་པ་ཞེས་
 བྱ་བ་ནི་སྤྱོད་དང་གསུང་དང་ཐུགས་དྲེ་བྱུང་བས་ན་སྤྱོད་པའོ། །ཤིན་ཏུ་ཞེས་བྱ་བ་
 ནི་ཞན་ཏུ་ནི་འཛིག་པའོ། །དེ་ལས་འདས་པས་ན་ཞན་ཏུ་སྤྱོད་པའོ་མཛོད་པ་མཛོད་པའོ།
 ཤིན་ཏུ་ཡང་དེ་ཡིན་ལ་དངོས་བྱུང་གྲུང་དེ་ཡིན་པས་ན་ཤིན་ཏུ་དངོས་བྱུང་སྤྱོད་པ་
 པ་ནི་དེའི་ཐབས་སོ། །ཉལ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། འདིར་ཆེགས་སུ་
 བཅད་པ་རྒྱུ་པ་བཞི་པ་གཉིས་དྲེ། འདི་ལྟར་ཆེགས་སུ་བཅད་པ་བྱེད་པ་གཉིས་པ་

1 མ་འཛད་པ།

2 མ་འོ།

3 མ་ཉེས་པར་མཛོད།

4 མ་འོ། དངོས་བྱུང་དེ་ཡིན།

དངོས་བྱུང་ཅེས་གསེར་བྱིས་ནས་བསྒྲུ།

གང་ཡིན་པ་དེ་ཉིད་ཕྱིད་པ་བཞི་པ་ཡང་ཡིན་ན། འདུས་པར་བྱ་བའི་ཕྱིར་
 ཉལ་སྤྱོད་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཀྱེ་ཐོགས་པོ་ཞེས་བྱ་བའོ། །འཇམ་མེད་ཀུམ་ལ་
 (འཇམ་མེད་ཀུམ་ལ་)ཞེས་བྱ་བ་ནི་པར་བྱ་བྱུང་དོ་ཞེས་པའོ། །པལ་ཉི་ཤུ་པའི་
 ཞེས་བྱ་བ་ལ། རྩོམ་པོ་ཕྱིད་ཆུབ་ཀྱི་སེམས་ཆེན་པོ་སྟེ་པར་བྱའི་ཀུམ་ལ་གནས་
 པའི་ཡེ་ཤེས་ཀྱི་ཐོག་ལའི་གཟུགས་སམ། དཔལ་ཉི་ཤུ་ཀྱི་གཟུགས་སུ་བསྐྱེད་ཅིང་
 རྩོགས་པར་བྱུང་པའོ། །རབ་དྲུ་སད་པ་ནི་གདུང་པར་བྱུང་པའོ། །ཅིའི་ཕྱིར་
 གདུང་འབྱུར་ཞེ་ན། ཇལ་ལལ་ལལ་ཉོ་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ན། དང་པོའི་ཨ་དང་
 མ་ཐའ་མའི་རྩོམ་པོ་ཞེས་པོ་དག་ནི་ཤིན་ཏུ་མད་དུ་བྱུང་པའི་བདེ་བ་ཆེན་པོ་འདི་དོན་དུ་
 འབྱུག་པའི་ཕྱིར་ལོ། །དེ་རྒྱུད་དུ་ཡང་དཔལ་སངས་རྒྱལ་ཐམས་ཅད་དང་མཉམ་
 པར་སྦྱར་བ་ལས།³ ཞེ་མའོ་བདེ་མཆོག་མད་དུ་བྱུང་བ། ཇལ་ལལ་ལལ་ཉོ་
 ཞེས་བཞེད་ཅེས་གསུངས་སོ། །དེ་བས་ན་ཅི་ཞིག་བྱ་ཞེ་ན། མད་སྤྱོད་ཉོ་ཞེས་
 བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ་བདེ་བ་ཆེན་པོ་ནི་རྩོམ་པོ་འདི་པའོ། །ཞིན་ནི་བདག་པོའོ།
 བདེ་བ་ཆེན་པོ་ཡང་ཡིན་ལ་ཞིན་ཡང་ཡིན་པས་ན་བདེ་བ་ཆེན་པོ་ཡིན་ན། མགོན་
 པོ་བདེ་བ་ཆེན་པོ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་དོ། །ཨ་རྩེ་ཉུ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་མཉམ་པར་
 བྱས་པ་ལྟེ། བདག་ཅག་གིས་ཞེས་བྱ་བར་ཤེས་པར་བྱའོ། །གི་སྟེ་ཞེས་བྱ་བ་
 ཉི་གར་གྱིས་སོ། །རབ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ལ། པལ་ཉི་ཤུ་ཀུམ་ལ་ཞེས་
 བྱ་བ་ནི་པར་བྱེད་མ་པར་གསང་བའོ། །གང་གིས་ཤེ་ན། མད་སྤྱོད་ཉོ་ཞེས་བྱ་

1 བསེར་མོ་ ལྷ་པོ།
 2 བསེར་མོ་ གདུགས།
 3 རྩོམ་པོ་ ལྷ་པོ་ ༡༠ ན་ལ་ བ་ ༡
 4 བསེར་མོ་ དེ་ལྷ་གསུམ།
 5 བསེར་མོ་ བྱ་བ་ལྟེ།

དོ་རྩེ་འཇིན་པ་ཆེན་པོ་ལ། །

དེ་ནས་འདིར་སྐྱུ་སྐྱེས་ཅམ་གྱིས། །

དོ་རྩེ་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་གར། །

དོ་རྩེ་སེམས་དཔའ་ཡང་དག་བསྐྱེལ། ། ༥༥

བ་གསུངས་དྲེ། བདེ་བ་ཆེན་པོ་སྟེ་དོ་རྩེ་དེ་ཉིད་གྱིས་སོ། །ཅི་འདྲ་ཞེ་ན།
 ཉི་མ་ལྟ་བུའི་འོད་འདི་ལ་ཡོད་པས་རབིག་རྟེན་ཞེས་བྱ་སྟེ། ཇི་ལྟར་ཉི་མའི་འོད་
 གྱིས་པརྒྱའི་ཁ་འབྱེད་པ་དེ་བཞིན་དུ་བདེ་བ་ཆེན་པོའི་རྒྱ་མཐུན་པའི་འོད་ཟེར་རྣམས་
 གྱིས་ཞེས་བྱ་བར་དགོངས་སོ། །ཞལ་ལལ་ལྟོ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་ནི་ཡང་
 བསྐྱར་ལ་སྐྱེད་པའི་དོན་ནི་དེ་ཉིད་དོ། ། ༥ ༥

སྐྱུ་འདིའི་གནས་སྐབས་གཉིས་པ་བཟུགས་པར་བཞེད་ནས། དེ་ནས་ཞེས་
 བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་དྲེ། དེ་ནས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྟ་མོ་བཞི་བསྐྱེད་པའི་
 འོག་དུའོ། །འདིར་ནི་སྐྱུ་ཅམ་གྱིས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྐྱུ་འབའ་ཞིག་གིས་བསྐྱེལ་བས་
 སོ། །ཅིའི་དོན་དུ་ཞེ་ན། དོ་རྩེ་འཇིན་པ་ཆེན་པོ་སྟེ། མགོན་པོ་བདེ་
 བ་ཆེན་པོའི་ཕྱིར་རེ། །དོ་རྩེ་མཁའ་འགྲོ་མ་རྣམས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དོ་རྩེ་མཁའ་
 འགྲོ་མ་རྣམས་ཀྱིས། །གར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དེ་དག་གིས་གར་ཡང་བྱས་པའོ། །
 དོ་རྩེ་སེམས་དཔའ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་སྐྱུ་དང་གར་གྱིས་སད་པར་བྱས་པའི་ཐིག་ལེ་ཡོངས་
 སུ་གུར་པ་ལས་སྐྱེས་པའི་དཔལ་ཉེ་རྒྱལ་གཞག་པ་སྟེ། །ཀློག་ཁི་ཉི་མའི་དགྱིལ་
 འཁོར་ལ་སྐྱེད་ཀྱང་གིས་བཞུགས་སུ་གསོལ་བའོ། །འདི་ནི་སྐྱེད་པའི་གནས་
 སྐབས་སོ། ། ༥ ༥

དེ་ལྷ་ར་རྟག་དུ་གྲུས་ལྷན་པས། །
 སྦྱོར་བའི་དངོས་གྲུབ་འབྱུང་བ་ཡིན། །
 དུས་བཞིར་རབ་དུ་སྦྱོར་བ་ཡིས། །
 འབྱུབ་པར་འབྱུང་བ་བསྒྲུལ་པའི་མཆོག་ རྟག་
 རྟག་རྣམས་ཐམས་ཅད་ཡོངས་ཐོག་མ་གྱིང་། །
 སྦྱོར་དང་མེ་རྟག་རྣམས་ཀྱིས་བརྒྱན།² །

མཆོད་པའི་དུས་ཀྱི་གནས་སྐབས་གཉིས་པ་བསྒྲུན་པའི་ཕྱིར། འདི་
 ཡིས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། འདི་ཡིས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དོ་མཆོད་ཀྱི་
 དང་གར་གྱིས་སོ། །སྦྱོར་བའི་དངོས་གྲུབ་འབྱུང་བ་ཉིད།³ །ཅེས་བྱ་བ་
 ནི་མཆོད་པའི་ཕན་ཡོན་ནོ། །རྟག་དུ་གྲུས་པ་དང་ལྷན་པས་བསྒྲུལ་པའི་མཆོག་
 ཅེས་བྱ་བ་ནི་རྟག་མི་⁴འཆད་པས་དུས་རིང་པོ་རབ་དུ་སྦྱར་ཞིང་བསྒྲུལ་པའོ། །
 དུས་བཞིར་རབ་དུ་སྦྱོར་བ་ཡིས། །ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྣལ་འབྱོར་དང་མཆོད་པའི་
 དུས་སོ། ། ར ཀ

གསང་བའི་མཆོད་པ་བསྒྲུན་པའི་ཕྱིར། རྟག་རྣམས་ཐམས་ཅད་ཅེས་བྱ་
 བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། བུ་མོ་གཞུག་པར་བྱའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷག་མའོ། །དོ་
 མཆོད་ཀྱི་དང་། དོ་མཆོད་གསུང་དང་། དོ་མཆོད་ཐུགས་དག་ནི་སྦྱ་གསུམ་མཆོག་

1 རྟ་འཕྲུལ་

2 རྟ་འཕྲུལ་

3 རྟ་འཕྲུལ་འབྱུང་བ་ཡིས།

4 ཐུག་མའི་འཆད་

ཇི་ལྟར་སྐྱེ་གསུམ་མཚེག་སྟེར་བའི།	
དངོས་གྲུབ་ངེས་པར་ཐོབ་པར་འགྱུར།	༡༠།
དཔག་ཚད་བརྒྱ་ཡི་ཁྱོན་ཙམ་དུ།	
འདི་ནི་རབ་དུ་སྒྲུང་བར་བྱེད།	
དབང་པོ་གཉིས་ནི་རབ་སྟོར་བས།	
སྒོ་དགུ་ལས་ནི་འབྱུང་བའི་ཇས།	༡༡།
སངས་རྒྱས་བྱང་ཆུབ་གནས་ཞི་བའི།	
དེ་ཉིད་སྐྱ་ན་མེད་པ་འགྲུབ།	༡༢།

གོ། །དེ་ལྟར་སྐྱེ་གསུམ་མཚེག་སྟེར་བ་སྟེ། ཇི་ཇི་སེམས་དཔའོ། །ཇི་
 ལྟར་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཇི་ལྟར་བཞིན་དུ་དངོས་གྲུབ་ཐོབ་པར་འགྱུར་བའོ། །རབ་དུ་
 སྒྲུང་བར་བྱེད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་རང་བཞིན་འདྲ་གྱིས་སོ། །འདིར་འདེམ་བར་བྱ་བ་མ་
 ཡིན་པའི་དམ་ཚིག་གཉིས་བཞག་པའི་ཕྱིར། དབང་པོ་གཉིས་ནི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་
 སྐབས་པ་གསུངས་ཏེ། ཇས་ཞེས་བྱ་བ་ལ་བཟའོ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷག་མའོ། །
 སངས་རྒྱས་ཀྱི་བྱང་ཆུབ་ཉིད་གོ་འཕང་ཡིན་ཏེ་རབ་དུ་གནས་པའོ། །ལྷག་མ་ནི་
 འདི་ཉིད་ཀྱི་བཤད་པ་སྟེ། ཉེ་བར་འཆེ་བ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བས་ན་ཞི་བ་སྟེ།
 ངེས་པར་ལེགས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་རྟོ། ༡༠ - ༡༡ །

ཉན་ཐོས་དང་རང་སངས་རྒྱས་དག་ལ་ཡང་འདི་ལྟར་བྱའི་ཞི་བ་ཡོད་པས་དེ་
 ཉིད་ཅེས་བྱ་བ་ནི་དེ་ལས་ཁྱད་པར་དུ་བྱེད་དེ། སྒྲོས་པ་ཐམས་ཅད་དང་བྲལ་བའི་
 ཡི་ཤེས་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་རྟོ། །བྱང་ཆུབ་སེམས་དཔའི་རྣམས་ལ་ཡང་དེ་ལྟར་བྱའི་
 ཡི་ཤེས་ཡོད་མོད་ཀྱི། ད་ནི་སངས་རྒྱས་ཀྱི་ཡི་ཤེས་ཀྱི་སྐྱ་མ་དང་བཅས་པ་ཡིན་

འདིར་ཆིགས་སུ་བཅད་པ་འགྱུར་བ་ནི།

གཟུགས་རྣམས་དེ་བཞིན་ཕྱག་རྒྱ་མཚན་མ་དང་། |

ཇེས་རྣམས་དང་ནི་བསམ་གཏན་རྣམ་སྒྲུབ་པའི། |

ཆོ་གའི་ཐབས་ནི་སྒྲ་ཆོགས་བསྟན་པ་དང་། |

ལྷ་མོ་ཡིད་འདོད་རྣམས་ནི་གསུངས་པའོ། ༡༧།

པས་དེ་ལས་བྱེ་བྱག་དུ་བྱ་བའི་ཕྱིར་སྒྲ་ན་མེད་པ་ཞེས་བྱ་བ་གསུངས་ཏེ། འདི་
ལས་སྒྲ་བར་གྱུར་པ་མེད་པས་ན་སྒྲ་ན་མེད་པའོ། ༡༥ |

འདིར་ཆིགས་བཅད་དུ་འགྱུར་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་རྒྱུད་དུ་གསུངས་པའི་རྒྱུད་
ཀྱི་དོན་བསྟུ་བའི་ཆིགས་སུ་བཅད་པའོ། |གཟུགས་རྣམས་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ལྷ་རྣམས་
ཀྱི་སྒྲ་མདོག་དང་དབྱིབས་རྣམས་སོ། |ཕྱག་རྒྱ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཕྱག་རྒྱས་བཏབ་པའོ།
ཡན་ལག་དུག་དུ་དགོད་པ་དང་། དོ་རྩེ་པརྩོར་སྒྱུར་བ་ལ་སོགས་པའོ། |དེ་
བཞིན་ཆད་མ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་ཐོད་པ་དང་ཁྲུལ་ལ་སོགས་པའོ། |ཇེས་རྣམས་ནི་
དམ་ཆིག་གི་ཇེས་རྣམས་སོ། |བསམ་གཏན་ཞེས་བྱ་བ་ལ། བསམ་པར་བྱ་
བས་ན་བསམ་གཏན་ཏེ། བསྒྲས་པ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ཏེ། |བསྒྲུབ་པ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་
དཀྱིལ་འཁོར་གྱི་འཁོར་ལོ་ལ་སོགས་པའི་དྲིང་ངེ་འཛིན་ཏེ། |ཆོ་གའི་ཐབས་སྒྲ་
ཆོགས་ནི་ལས་རྒྱས་པ་ལ་སོགས་པ་སྟེ། དམན་པའི་དངོས་གྲུབ་ལ་སོགས་པའོ།
བསྟན་པ་ནི་དེ་དག་ཐམས་ཅད་བཤད་པའོ། |འདི་དག་ཐམས་ཅད་ཅིའི་ཕྱིར་
བྱས་ཤིན། ལྷ་མོའི་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སོགས་པ་གསུངས་ཏེ། ལྷ་མོ་ནི་རྒྱུ་

1 ལྷ་དཔེར་ཅ (ཤོན་རྒྱུ་ལྷ) རྒྱུངས་བར་བྱ་བ་ལ་སོགས་

2 ལྷ་དཔེར་ཅ (ཅིན་རྒྱུ་ལྷ) མཚན་མ་

'གང་གི་བྱིམ་དུ་རྒྱུ་འདི་གནས་པ་དང་། རྒྱུ་དུ་འཆང་བ་དང་།
 གློག་པ་དང་། རྣམ་པར་བསྐྱེམ་པ་དེ་ལ་ནད་རྣམས་འབྱུང་བར་མི་
 འགྱུར་ཞིང་། བླ་པ་དང་། བཞེགས་མི་འབྱུང་ལ། འཆི་
 བར་མི་འགྱུར་དེ། རྒྱུ་དུ་ཐམས་ཅད་དུ་རྣལ་འབྱོར་མའི་དབང་
 ལྷག་མ་རྣམས་ཀྱིས་བཞེགས་བསྐྱུང་བར་འགྱུར་རོ། ༡༥ །

འཕྲུལ་ཆེན་མོ། །དེའི་ཡིད་ལ་འདོད་པ་ནི་ཐུགས་སུ་བྱོན་པ་གང་ཡིན་པ་སྟེ།
 དེའི་ཕྱིར་བསྟན་པ་ལོ། ༡༦ །

རྒྱུ་ཡོངས་སུ་འཛིན་པའི་ཕན་ཡོན་བསྟན་པའི་ཕྱིར། གང་གི་བྱིམ་དུ་
 ཞེས་བྱ་བ་ལ་སྟགས་པའི་ཆེགས་སུ་བཅད་པ་གསུངས་དེ། །གང་གི་བྱིམ་ནི་གང་
 ཞེས་གི་བྱིམ་དུ་ལོ། །རྒྱུ་ནི་སྤྱི་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་ཞེས་གསུངས་པ་ལོ། །དྲག་དུ་
 གནས་ཤིང་ཞེས་བྱ་བ་ནི་དྲག་པར་གནས་པ་ལོ། །འཆང་བ་ཞེས་བྱ་བ་ནི་འཛིན་
 པ་ལོ། །གློག་པ་ནི་གླུ་པར་འདོན་པ་ལོ། །རྣམ་པ་བསྐྱེམ་པ་ནི་དྲིང་ངེ་འཛིན་
 དུ་བྱེད་པ་ལོ། །བཞེགས་ནི་བཞེགས་རྣམས་སོ། །རྩི་རྩི་རྣལ་འབྱོར་མ་ཡོངས་
 དེ་ཡིན་ལ་ཆེན་མོ་ཡང་དེ་དག་ཡིན་ནོ། །དགོངས་པ་ནི་དེ་དག་གིས་ཡོངས་སུ་
 བཟུང་བའི་གྲུབ་པའི་མཐའ་སྟེ། རྣལ་འབྱོར་མའི་རྒྱུ་མཐའ་དག་ཅེས་བྱ་བའི་

- 1 འབྲེལ་པར་ཅ ། གང་གི་བྱིམ་དུ་ཞེས་བྱ་བ་ལ་སྟགས་པའི་ཆེགས་སུ་བཅད་པ་ཞེས་གསུངས་པ་ལ་
 བསྟགས་ན་ཆེགས་བཅད་ཡིན་པར་སྐྱོད་ཡང་པར་མ་ཁག་ནང་ཡོད་པ་བཞིན་ལྷག་མར་སོར་བཞག་བྱས།
- 2 མ་ཅོ མོམ།
- 3 མ་ཅོ སྤང་།
- 4 བསེར་ཅ འཆང་བ་ མེད།
- 5 རྒྱུ་ཡོངས་ཅ (བཟུང་གི་ཐུགས) རྩི་རྩི་མཐའ་འབྱོར་མ་ཡང་།

དོ་ཤིན་ལ་འབྱོར་མ་ཆེན་མོ་རྣམས་ཀྱི་དགོངས་པ་མཆོག་དུ་
གསང་བ་གསང་བ་ཆེན་པོ་ཉི་ཤེས་པ་དང་བཅས་པའི་སྐྱབ་ཐབས་ཏེ་
ལེའུ་གསུམ་པའོ། །

སྐྱ་འཕྲུལ་ཆེན་པོའི་རྒྱད་ཅེས་བྱ་བ་ཐོགས་སོ། ། རྒྱ་གར་གྱི་མཁན་
པོ་ཤིན་པར་དང་། བོད་ཀྱི་ལོ་རྒྱུ་བ་ཆེན་པོ་འགོས་ལྷས་བཅས་ཀྱིས་བསྐྱར་
ཅིང་ཞུས་ཏེ་གདན་ལ་ཡབ་པའོ། །

དོན་དོ། །གསང་བ་ནི་དེའི་སྤྱིང་པོའོ། །དེ་ཅི་ཞིག་ཅེ་ན། གསང་བ་ཆེན་
པོ་ཞེས་བྱ་བ་སྤྱི རྒྱད་ཀྱི་དང་པོ་ནི་མཆོག་དུ་གསང་བ་ཞེས་གསུངས་པ་ལ།
མཐར་ནི་གསང་བ་ཆེན་པོའོ་ཞེས་བྱ་བའི་རྣམ་གྲངས་གཞན་གྱིས་གསུངས་པ་ཡིན་ཏེ།
སྐྱ་འཕྲུལ་ཆེན་མོ་ཞེས་བྱ་བར་གསུངས་པའི་རྒྱད་དོ། ཉི་ཤེས་པ་དང་བཅས་པ་
ཞེས་བྱ་བ་ལ། བསྐྱབ་བྱ་སྐྱབ་པའི་ཐབས་ཀྱི་ཆོ་ག་ནི་ཉི་ཤེས་པ་དང་བཅས་
པའོ། །དེ་དང་ལྷན་ཅིག་དུ་འཇུག་པ་ནི་ཉི་ཤེས་པ་དང་བཅས་པ་སྤྱི དེས་
སྤྱིང་པ་མ་ཡིན་པ་ཞེས་བྱ་བའི་དོན་དོ། །ཐོགས་པ་ནི་དེ་མཐར་ཐུག་པའོ། ༡༤ །

དེ་ལྟར་བདག་གིས་སྐྱ་འཕྲུལ་ཆེན་མོའི་རྒྱད་ཀྱི་འབྲེལ་པ་ཡིན་ཏེ་ལྷན་བྱས་པས།
ཡོངས་སུ་ཐོགས་པའི་རི་བོང་ཅན་ལྟར་མཛེས་པའི་བསོད་ནམས་ཐོབ་པ་གང་ཡིན་
པས། །

1 གསེར་འོ གསང་བའི་

2 རྒྱ་དཔེར་འོ (ཡིད་མེ) ཞེས་བྱ་བའི་དོན་ནི།

3 རྒྱ་དཔེར་འོ (ལྷན་ལྷན་) ལྷན་པའི་དོན།

4 རྒྱ་དཔེར་འོ བཅས་པ་ མེད།

ལྷུ་པ་རྣམས་ཀྱི་བདག་ཉིད་གཅིག་པོ་དྲེ་འཛིན་པ་ཉིད་དུ་བདག་གྱུར་ནས།
 དེ་ཡིས་སྒྲིབ་རྣམས་ཀྱི་སྤྱད་བསྐྱེད་མི་བཟད་མ་ལུས་ཟད་པ་ཆེད་པར་ཤོག
 རིན་ཆེན་འབྱུང་གནས་དེ་ནི་རྩོད་པའི་སངས་རྒྱས་སྤྱད་བཅས་རྣམས་ཀྱིས་།
 ངེས་པར་བྱིན་བཏབས་པས། །

དེ་ཡི་སྤྱད་གསུང་ཐུགས་ཀྱི་འཇུག་པ་རྣམས་ནི་ངེས་པར་འགྲོ་བ་རྣམས་ལ་ཕན་
 བྱིར་ཡིན། །

སྤྱུ་འཕུལ་ཆེན་མོ་ཞེས་བྱའི་རྒྱུད་མཆོག་ཆེན་དོན་རྟོགས་དཀར་སྤྱར་བས་དཀར་བ་
 བཤེད་ཡིན་པའི། །

འབྲེལ་པ་ཡོན་ཏན་ལྷན་པ་འདི་ནི་སྤྱད་ཀྱིས་སྤེང་ལྷར་སྒྲིབ་པའི་སྤྱིང་ནི་འགྲུགས་བྱེད་
 ཡིན་པ། །

དཔལ་སྤྱུ་འཕུལ་ཆེན་མོའི་འབྲེལ་པ་ཡོན་ཏན་ལྷན་པ་ལས་ངེས་པར་
 བཟུན་པ་གསུམ་པའོ། །དཔལ་སྤྱུ་འཕུལ་ཆེན་མོའི་འབྲེལ་པ་ཡོན་ཏན་ལྷན་པ་
 ཞེས་བྱ་བ་སྟོབ་དཔོན་པའི་ཆེན་པོ་དཔལ་རིན་ཆེན་འབྱུང་གནས་ཞི་བའི་ཞལ་ལྷ་
 རྣམས་མཇེད་པ་ལྟོགས་སོ། །པའི་ཆེན་པོ་ཞི་བ་བཟང་པོ་དང་། ལྷ་ཆེན་གྱི་
 ལོ་རྒྱུ་པ་འགོས་ལྷས་བཅས་ཀྱིས་བསྐྱུར་ཅིང་ལྷས་དེ་གདན་ལ་ཕབ་པའོ། །

1 བསེར་འོ་ རྣམས་ཀྱི།

2 བསེར་འོ་ ཐུགས་ནི།

3 བསེར་འོ་ འགྲུག

4 རྒྱ་དཔེར་འོ་ ཆེན་པོ་སྤྱད་བཅས་པ་འདི་མེད།

5 བསེར་འོ་ བཅས་ཀྱིས།



